आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

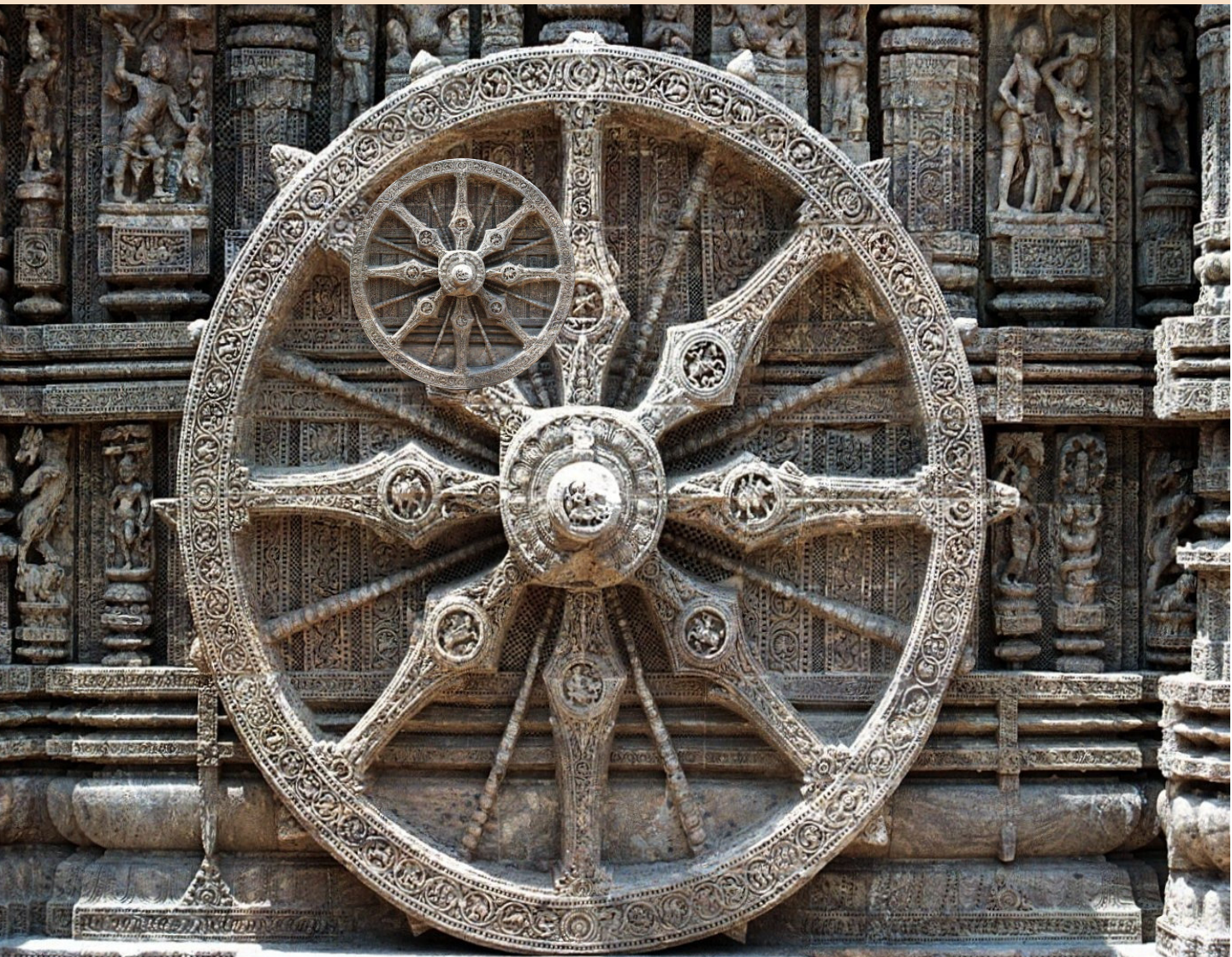
अगस्त 2025

क्रान्ति

मासिक

सहयोग राशि
30/- ₹

जातिगत नफ़रत
सत्ता का शस्त्र या सभ्यता का श्राप?



ये वे पैग़म्बर हैं
जो अल्लाह के कृपापात्र हुए, आदम की सन्तान
में से और उन लोगों के वंशज में से जिनको
हमने नूह के साथ सवार किया, और इबराहीम
और इसराईल के वंशज में से और उनमें से
जिनको हमने सीधा मार्ग दिखाया और चुन
लिया। जब उन्हें रहमान की आयतें सुनाई जातीं
तो वे सजदा करते और रोते हुए
गिर पड़ते थे।

(क़ुरआन, 19:58)

Website Link :
www.kantimasik.com

संपादक
शिब्ली अरसलान
abuaniqa@gmail.com

प्रबंधक
नईम ख़ान
+91 9891160829

सहयोग राशि

एक प्रति 30/- रु॰ एक वर्ष 350/- रु॰
पांच वर्ष 1500/- रु॰ आजीवन रु॰ 5000/
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 110/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 40/- US डॉलर

ख़रिदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

हेल्पलाइन न॰
9818799223

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025

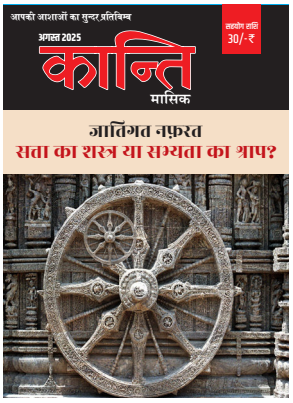
चेक / ड्राफ़्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत
ट्रस्ट (रजि॰), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं
Printer : Akhilesh Singh
Press : AARYA PRINTERS
201, Ground Floor, DSIDC Complex
Okhla Industrial Area phase-1,
New Delhi-110020
Editor : Shibli Arsalan

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

वर्ष 35 अंक 02 अगस्त 2025

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब



कान्ति मासिक

इस अंक में

मूल प्रश्न 04
भारत की जघन्तम समस्या : मूल कारण और स्थायी निवारण की तलाश
शिब्ली अरसलान

चिंतन 07
विवेक और वैश्विक संघर्ष
रिज़वान अहमद

सौंदर्य बोध 11
प्रयास और परिणाम के बीच में...?
तबाना नूरी

मुख्य स्तंभ 15
जातिगत नफ़रत : सत्ता का शस्त्र या सभ्यता का श्राप?
सुफ़ियान अहमद

अभिमत 19
स्वर्ण प्रभुत्ववाद का पिंजरा
जितेंद्र गौतम

समाधान 22
जातिगत श्रेष्ठता के विरुद्ध एक सशक्त दृष्टिकोण
लुबना सबूब

कविता 25
आज़ादी और सपने
अर्जुनदेव चारण

मंथन 26
सुधार के नाम पर शिक्षा से खिलवाड़
मिरात अहमद

नज़रिया 29
दुष्प्रचार की सुनामी में सत्य की लहर
डॉ. प्रदीप कुमार

विचारणीय 32
बुद्धि को विकल्प नहीं, विस्तार दें
मयसम ज़ारा

प्रकाश स्तंभ 35
विश्वास और प्रयास का मेल
अबरार हसन

सेहत 37
नज़रअंदाज़ न करें मानसूनी बीमारियों को
संपादन प्रभाग

करियर 40
डाटा कौशल सीखने वालों का बजेगा डंका
संपादन प्रभाग

कहानी 43
तमाशे में डूबा हुआ देश
असग़र वजाहत

लघुकथा 48
नाम रह गया पीछे
सुफ़ियान अहमद

आख़िरी पन्ना 49
संकेत, प्रभाव और ज्ञान
सायेम हुसैन

मूल प्रश्न



शिब्ली अरसलान

भारत की जघन्तम समस्या : मूल कारण और स्थायी निवारण की तलाश

गत दिनों निम्नलिखित दो घटनाओं की वीडियो क्लिप सोशल मीडिया में छाई रही। पहली दिल दहला देने वाली घटना ओडिशा के गंजाम ज़िले से सामने आई, यहां दो दलित युवकों के साथ बर्बरता की गई। उन्हें गो-तस्करी के शक में न सिर्फ़ बेरहमी से पीटा गया, बल्कि उनका सिर मुंडवाया गया। इतना ही नहीं घुटनों के बल चलने पर मजबूर किया गया, उन्हें घास खाने और नाले का गंदा पानी पीने के लिए विवश किया गया।

दूसरी घटना यूपी के इटावा की है, जहां एक गांव में ब्राह्मणों ने एक यादव कथावाचक की चोटी काटकर सिर मुंडवाया। महिला के पैर पर नाक रगड़वाई। कथावाचक के साथी से भी मारपीट कर उसका सिर मुंडवा दिया और हारमोनियम भी तोड़ दी। साइकिल के पंप से गाड़ी में हवा भरवाई। रिपोर्ट के अनुसार आरोपियों ने कहा कि ब्राह्मणों के गांव में भागवत पाठ करने की हिम्मत कैसे की।

इस प्रकार की घटनाओं की आलोचना करते हुए इसे अक्सर राजनीति और सत्ता से जोड़ दिया जाता है, या लॉ एंड ऑर्डर का प्रश्न बता दिया जाता है। ऐसी घटनाएं केवल सत्ता और राजनीति से संबंध नहीं रखतीं। जातीय उन्माद और जातिगत नफ़रत इस देश में डीप-रूटेड है, इसका एक ऐतिहासिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ है। अतः उपरोक्त घटनाओं पर महज़ भाजपा को गरिया कर और पुलिस क़ानून का मुद्दा बताकर हम कोई गंभीर बात नहीं करते। बौद्धिक प्रगतिशीलता के दावों के बावजूद भारतवर्ष में जन्म आधारित ऊंच-नीच वाली अवैज्ञानिक और अमानवीय सोच ख़ूब फल-फूल रही है। लिबरल्स में भी ऐसी सोच पायी जाती है।

जातीय भेदभाव जहां से ऊर्जा ग्रहण करता है, वहां पर प्रहार ज़रूरी है। जातीय विभाजन और भेदभाव को धार्मिक ग्रंथों से भी वैधता मिलती है, मनुस्मृति और धर्मसूत्रों में दलितों के लिए अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया गया है। उन्हें मंदिरों में प्रवेश नहीं करने देना, शिक्षा से वंचित रखना, तथाकथित उच्च जातियों के सामने जूते पहनने या ऊंची आवाज़ में बोलने पर दंड देना, इस सबको धार्मिक अनुशासन का हिस्सा बना दिया गया। इस विषय पर इंतिज़ार नईम साहब की पुस्तक "दलित समस्या: जड़ में कौन?" बेहद अहम है। इस पुस्तक की सबसे ख़ास बात ये है कि इसमें लेखक ने अपनी विनम्रता और सत्याग्रह का प्रमाण देते हुए ज्यूं का त्यूं उद्धरण ही प्रस्तुत किये हैं, स्वयं के विचार और विश्लेषण से दूरी बरती गयी है। अधिकांश उद्धरण हिंदू धर्म के पुरोधा और प्रतिष्ठित ग्रंथों ही के हैं। बौद्ध लेखन बहुत कम है, वामपंथी लेखकों के उद्धरण नहीं के बराबर हैं।

कहने का तात्पर्य है कि भारतीय समाज की एक क्लिष्ट और जटिल समस्या ये जातिवाद है, इसे नकारा नहीं जा सकता है। जब कोई जातिवादी जातिगत हिंसा करके समाज में छुपना चाहता है तो उसे आसानी से स्पेस मिल जाती है। ये भी स्पष्ट है कि समस्या का मूल भी भारतीय हिंदू परंपरा व संस्कृति में है। जब समस्या है तो समाधान निकालना होगा। समस्या को बने रहने देना तो इसे और विकृत करना और सड़ाना है। भारत की इस गर्हित समस्या से भारत को पीछा छुड़ाना ही पड़ेगा वरना एक दिन फिर वो इतनी भयावह हो जायेगी कि सभ्यता और समाज इसकी अग्नि में भस्म हो जाएंगी। आज के तर्क आधारित वैज्ञानिक सोच रखने वाले समाज को गहरी विचारशीलता के साथ इस समस्या को समूल नष्ट करने का मंसूबा बनाना ही होगा।

जब एक कथावाचक की चोटी काटी जाती है, तो यह किसी जाति या समूह का अपमान मात्र नहीं है, बल्कि धर्म की उस आत्मा और चेतना की हत्या होती है, जो मानव समानता का संदेश देती है। जातीय हिंसा और नफ़रत उस विचार के विरुद्ध है, जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात करता है।

इस संदर्भ में शिक्षा का महत्व काफ़ी बढ़ जाता है। कॉलेज और यूनिवर्सिटीज़ में केवल संविधान पढ़ लेना और पढ़ा देना पर्याप्त नहीं, बल्कि यह भी सिखाना होगा कि 'आदमी आदमी से बड़ा नहीं होता'। किसी की जाति, वर्ण या पेशा—उसकी नैतिकता, करुणा और विवेक से बड़ा नहीं हो सकता। शिक्षा व्यवस्था को सामाजिक समानता की जड़ों तक पहुंचना होगा। जातिवाद से मुक्ति केवल क़ानून से नहीं, शिक्षा और मानवीय संवाद से ही संभव है।

शिक्षा और मानवीय संवाद में ये शामिल करना होगा कि प्रत्येक मानव समाज हज़ारों और लाखों लोगों से मिलकर बनता है। प्रत्येक व्यक्ति आत्मा, बुद्धी और विवेक रखता है, जिसे फलने-फूलने और विकसित होने के लिए उपयुक्त अवसर की ज़रूरत है। उसको यदि अवसर नहीं प्राप्त होता है और व्यक्तित्व के विकास की आज़ादी नहीं होती है तो वो कुंठित हो जाता है और उसका जीवन पशुवत हो जाता है।

दूसरी ओर रंग, नस्ल और जाति-बिरादरी के झूठे दंभ का शिकार होकर इंसान अपने जैसे इंसानों पर अत्याचार करने लगता है और उनके लिए तरह- तरह की परेशानियां और रुकावटें खड़ी कर देता है, ताकि वे कहीं अपनी उन्नति करके उसके प्रभाव को चुनौती न देने लग जाए। स्पष्ट है, ये घिनौनी स्वार्थपरता मानवता के लिए अत्यंत हानिकारक है। वो शिक्षा जो धर्म का मूल चिंतन है, आम करनी होगी कि सारी मानवता ईश्वर का परिवार है, यही "वसुधैव कुटुंबकम्" का अर्थ है, यही बात इस्लामी शिक्षा में यूं कही गयी है कि सारे इंसान ही नहीं बल्कि सारी मख़लूक़ (जिसे ईश्वर ने पैदा किया है) अल्लाह का घराना है। कोई इंसान केवल विशेष जाति, रंग, नस्ल, क्षेत्र में पैदा होने से न तो उच्च, श्रेष्ठ और सज्जन कहलाने का अधिकारी है और न ही ये न्यूनता, अपमान और निकृष्टता का मानदंड है।

क़ुरआन में कहा गया है, देखिये ईश्वर कैसे इंसानों को संबोधित कर रहा है :

"ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह के यहां तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे अधिक तक़वा रखता है। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जानने वाला, ख़बर रखने वाला है।" (क़ुरआन, 49:13)

ईश्वर के आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा, "ऐ लोगो, जान लो कि तुम्हारा रब एक है। तुम्हारा पिता (आदम) एक है, किसी अरबवासी को किसी ग़ैर-अरबवासी पर श्रेष्ठता नहीं और न किसी ग़ैर-अरबवासी को किसी अरबवासी पर, न गोरे को काले पर और न काले को गोरे पर श्रेष्ठता प्राप्त है। श्रेष्ठता यदि किसी को है तो केवल ईश-भय और परहेज़गारी से है।"

हज़रत मुहम्मद के महानतम व्यक्तित्व के द्वारा संपूर्ण एवं व्यापक सदक्रांति आई और अनेक समस्याओं, संकटों व परेशानियों से जूझती मानवता का उद्धार हुआ। एक ओर जहां विभिन्न कुरीतियों व व्यसनों का अंत हुआ, स्त्रियों, दासों और अनाथों को सम्मान मिला, वहीं दूसरी ओर वंश, रंग आदि के भेदभाव का अंत हो गया। जो अरबवासी हज़रत मुहम्मद के आगमन से पूर्व काले लोगों से नफ़रत करते थे, उनकी नफ़रतें हज़रत मुहम्मद की वजह से प्रेम में बदल गयीं। उन अरबवासियों में एक हब्शी ग़ुलाम हज़रत बिलाल को बड़ी प्रतिष्ठा मिली।

कान्ति के वे सब्सक्राइबर

जिन्होंने अभी तक अपनी ख़रीदारी की रक़म जमा नहीं की है,

बराय मेहरबानी

इस QR Code

के ज़रिये जल्द अदायगी करें।

Name: KANTI

Pay Directly to: kanti8920589292@indianbk

नोट :

अदायगी के बाद

स्क्रीनशॉट

इस नम्बर पर

(9818799223)

ज़रूर भेजें।

विवेक और वैश्विक संघर्ष



आज यदि समस्त मानव जाति किसी एक मंच पर खड़ी हो जाए और उनसे उनकी पीड़ा, आकांक्षाओं, भय और शांति की चाह के बारे में प्रश्न किया जाए, तो उनके उत्तर एक जैसे होंगे। हर मनुष्य सुख की तलाश में है, असुरक्षा से डरता है, और अपने अस्तित्व को अर्थ देने वाले किसी लक्ष्य की ओर देख रहा है। फिर भी, इस धरती पर टकराव, युद्ध, सामूहिक नरसंहार और वैचारिक विभाजन थमने का नाम नहीं ले रहे। सवाल यह है कि जब हमारी मूलभूत भावनाएं समान हैं, तो हम क्यों टकराते हैं?

21वीं सदी का मनुष्य तकनीकी दृष्टि से जितना विकसित है, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से उतना ही खंडित प्रतीत होता है। उसने संवाद के माध्यम विकसित कर लिए हैं, लेकिन आत्मा से आत्मा का संवाद खो गया है। आज भी, उसकी आवश्यकताएं वही हैं—रोटी, शांति, सुरक्षा और सम्मान—जो सदियों पहले थीं। फिर भी, वह स्वयं को धर्म, जाति, राष्ट्र, भाषा और विचारधाराओं में बांट कर देखता है।

चिंतन



रिज़वान अहमद

मनुष्य को जीवन में एक ऐसा लक्ष्य चाहिए जिसे वह अंतिम उपलब्धि माने, जो उसकी अस्तित्वगत बेचैनी को समाप्त कर दे। परंतु वह इस लक्ष्य के चयन में भटकता है। कोई राष्ट्र-सेवा को अंतिम उद्देश्य मानता है, कोई आर्थिक सम्पन्नता को, कोई धार्मिक वर्चस्व को, तो कोई वैचारिक अधिपत्य को। पर इन लक्ष्यों की समस्या यह है कि वे सीमित और विभाजक हैं—हर विचारधारा, हर राष्ट्रवाद, हर भाषा-आधारित पहचान दूसरे के विरुद्ध खड़ी हो जाती है।

उदाहरण के लिए, आज दुनिया का एक बड़ा हिस्सा "राष्ट्र-हित" के



नाम पर वैश्विक मानवाधिकारों की अनदेखी कर रहा है। ग़ाज़ा में नागरिक मारे जा रहे हैं, लेकिन शक्तिशाली राष्ट्र अपने-अपने "रणनीतिक हितों" की भाषा में गूंगे हैं। भारत और पाकिस्तान जैसे देश आज भी विभाजन की छाया से बाहर नहीं निकल पाए हैं। अमेरिका-चीन, रूस-नाटो, ईरान-इज़राइल—हर ओर एक वैचारिक अथवा रणनीतिक संकीर्णता काम कर रही है।

मानवता का प्रारम्भिक विकास क़बीलों और वंशों की सेवा के भाव से हुआ था। उस समय यह आवश्यक भी था, क्योंकि वह उसके अस्तित्व का आधार था। फिर यह सीमा भाषा और नस्ल तक पहुंची। पर हर बार सीमित पहचान के साथ असुरक्षा जुड़ी रही—जो मेरे 'जैसा' नहीं, वह मेरा शत्रु है।

आज का राष्ट्रवाद भी इसी मनोविज्ञान का विस्तार है—जहां राष्ट्र की संप्रभुता सर्वोच्च मूल्य बन गई है, भले ही उसके लिए दूसरे राष्ट्रों की संप्रभुता रौंद दी जाए। परिणामस्वरूप, अंतरराष्ट्रीय संबंध 'मानवीयता' के बजाय 'हित-संतुलन' पर टिके हैं। संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाएं निष्प्रभावी होती जा रही हैं, क्योंकि उन्हें शक्ति नहीं, केवल आश्वासन का मंच दिया गया है।

आज दुनिया का एक बड़ा हिस्सा "राष्ट्र-हित" के नाम पर वैश्विक मानवाधिकारों की अनदेखी कर रहा है। ग़ाज़ा में नागरिक मारे जा रहे हैं, लेकिन शक्तिशाली राष्ट्र अपने-अपने "रणनीतिक हितों" की भाषा में गूंगे हैं। भारत और पाकिस्तान जैसे देश आज भी विभाजन की छाया से बाहर नहीं निकल पाए हैं। अमेरिका-चीन, रूस-नाटो, ईरान-इज़राइल— हर ओर एक वैचारिक अथवा रणनीतिक संकीर्णता काम कर रही है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' या 'विश्व बंधुत्व' की अवधारणा अनेक सभ्यताओं ने दी है। पर यह कल्पना व्यवहार में क्यों असफल रही? इसका उत्तर यह है कि यह केवल एक भावना रही, व्यावहारिक योजना नहीं बन सकी।

मनुष्य जब तक साझा और सार्वभौमिक सिद्धांतों को नहीं अपनाएगा, तब तक यह विचार महज़ भाषणों और घोषणाओं तक सीमित रहेगा। सिद्धांत ही वह धुरी है जो उसके संबंधों को दिशा देता है। पूंजीवाद और साम्यवाद के टकराव, राष्ट्रवाद और वैश्विकता के द्वंद्व, धार्मिक कट्टरता और उदारवाद की

खींचतान—सब सिद्धांतों की असंगति के परिणाम हैं। हर पक्ष अपने को नैतिक मानता है और दूसरे को अन्यायी, लेकिन जिस नैतिकता की कसौटी सार्वभौमिक न हो, वह पक्षपाती और अन्यायी है।

आज 'डेमोक्रेसी' और 'ह्यूमन राइट्स' के नाम पर पश्चिम एशिया में हस्तक्षेप को न्यायसंगत ठहराया जाता है, लेकिन वहीं फ़िलिस्तीनियों के जनसंहार पर चुप्पी साध ली जाती है। यह दोहरा मापदंड केवल सिद्ध करता



है कि मनुष्य अब भी केवल अपनी सीमित पहचान से बंधा हुआ है, न कि व्यापक मानवीयता से।

इस विकट स्थिति का समाधान किसी नई विचारधारा या राजनीतिक गठबंधन से नहीं निकलेगा। आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य अपने अस्तित्व की सार्वभौमिकता को स्वीकार करे। जब तक वह यह नहीं मानेगा कि सबका मूल एक है, सबकी आवश्यकताएं एक हैं, और सबका उद्देश्य एक साझा 'सत्य' की ओर बढ़ना है, तब तक मतभेद बने रहेंगे।

यह साझा सत्य केवल आध्यात्मिक धरातल पर समझा जा सकता है—वह सत्य जो न तो किसी राष्ट्र की सीमाओं में बंधा है, न किसी विचारधारा की परिधि में। यही वह धरातल है जहां सभी मनुष्य अपने नैसर्गिक अनुभवों, संवेदनाओं और आकांक्षाओं के साथ मिलते हैं।

आज का युग सूचनाओं की क्रांति का युग है, लेकिन यह तभी मानवता के पक्ष में होगा जब सूचनाओं के साथ विवेक भी होगा, और विवेक के साथ करुणा। जब तक मनुष्य अपने लक्ष्य को संकुचित रखेगा, वह बंटा रहेगा। और जब तक वह बंटा रहेगा, युद्ध, वैमनस्य और असहिष्णुता उसका पीछा नहीं छोड़ेंगे।

क़ुरआन हमें आत्म-चिंतन, साझी मानवता और सत्य के पक्ष में खड़े होने की राह दिखाता है। वह हमें याद दिलाता है कि हम विभिन्न नस्लों, भाषाओं और भूगोलों में बांटे जा सकते हैं, लेकिन हमारी उत्पत्ति एक ही स्रोत से हुई है—"नफ़्स-ए-वाहिदा" (एक प्राण से)। (क़ुरआन, 4:1)

इस वास्तविकता का बोध जब किसी समाज या राष्ट्र को होता है, तो वह संकीर्णताओं से ऊपर उठकर इंसानियत की ओर लौटता है।

आज की वैश्विक परिस्थितियां हमें पुनः उस बिंदु पर ले आई हैं जहां मनुष्य को यह निर्णय लेना है—क्या वह अपनी पहचान की सीमाओं में क़ैद रहकर नफ़रत और टकराव की आग में जलता रहेगा या उस सार्वभौमिक नैतिकता को अपनाएगा जो सभी इंसानों को एक-दूसरे से जोड़ती है। क़ुरआन की यह पुकार आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है—"सभी ईमान वाले आपस में भाई हैं।"

(क़ुरआन, 49:10)

सत्य के पक्ष में खड़े होने का अर्थ केवल अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाना नहीं है, बल्कि अपने भीतर के पूर्वाग्रहों, अहंकारों और सीमितताओं से भी संघर्ष करना है। यही आत्म-चिंतन का मार्ग है—जहां इंसान स्वयं को टटोलता है, और फिर दुनिया से संवाद करता है।

जब तक हमारा जीवन-लक्ष्य केवल अपने लाभ, अपनी जाति, अपने राष्ट्र और अपनी विचारधारा की सेवा बना रहेगा, तब तक पृथ्वी शांति से वंचित रहेगी। पर जब मानवता, सत्य और न्याय को हम साझा धरोहर मान लेंगे, तभी यह दुनिया वाक़ई में रहने योग्य बन सकेगी।

क़ुरआन हमें इसी दिशा में बुलाता है—अपने रब की ओर लौटो, अपनी फ़ितरत की ओर लौटो, और उस सत्य की ओर लौटो जो सबके लिए समान है। यही वापसी, हमारी मुक्ति की राह है। ■■

क़ौम के अहल सर्वत और अह्ले-ख़ैर हज़रात से ख़ुसूसी अपील

यतीमख़ाना इस्लामिया, गया

107 साल की ख़िदमात

आपके माली तआवुन का मुंतज़िर है



तआरुफ़ : इदारा की बुनियाद अक्तूबर 1917 में एक उस्ताद और दो यतीम बच्चों से आठ आने (50 पैसे) माहवार किराया की कोठरी में Rs. 30 रुपये की छोटी-सी रक़म से पड़ी थी। **तालीमी साल :** अप्रैल ता मार्च **तालीमी मराहिल :** इब्तिदाई, • सानवी, • आला, • शोबा-ए-हिफ़्ज़, • इनायत (I.T.I) • फ़ासलाती तालीम : I.A., B.A, M.A और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) • तादाद ज़ेरे-तालीम तलबा व तालिबात : तक़रीबन 450 • **तादाद कुल यतीम तलबा** 60 • बैरूनी तलबा, जो अपना ख़र्च देकर हॉस्टल में रहते हैं, उसके अलावा हैं। • तादाद तदरीसी व ग़ैर-तदरीसी स्टाफ़ : 20 **सालाना ख़र्च :** पैंतीस लाख (RS. 35,00,000) रुपये से ज़्यादा। **ज़रिया आमदनी :** मुस्लिम अवाम के चंदे। **ख़र्चे :** यतीम तलबा का सारा ख़र्च (तआम, क़ियाम, रिहाइश वग़ैरा बिल्कुल मुफ़्त) ये सारा ख़र्चे इदारा पूरा करता है। किसी तरह का कोई ख़र्च नहीं लिया जाता है। **याद रखें :** (1) यहां का कोई भी मुहस्सिल कमीशन पर चंदा वसूल नहीं किया करता है। (2) पांच ज़बानों में क़ुरआन व इस्लामियात के साथ क्लास 1 से मैट्रिक तक जो बिहार बोर्ड से मंज़ूरशुदा है मेयारी तालीम है। • हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक का नज़्म (3) 107 साल से यतीम और ग़ैर-यतीम तलबा की इस्लामी माहौल में दीनी व असरी तालीम के साथ तालीमी व तरबियती ख़िदमात अंजाम दे रहा है। (4) इदारा ही के Campus में दो हरे-भरे पार्क के साथ शानदार मस्जिद, तालीमगाह, इक़ामतगाह, मतबख़ और दूसरे शोबे वग़ैरा हैं • इसलिए तलबा को कहीं आना-जाना नहीं पड़ता है। **कफ़ाला स्कीम (Sponsorship)** के तहत एक यतीम तालिब-इल्म का सालाना ख़र्च RS. 25,000 है। आप भी इस कारे-सवाब में शरीक हों। • यहां के तलबा को मैट्रिक (Matric) पास करने के बाद कॉलेज के अलावा अरबी यूनिवर्सिटी में आलिमियत के पहले व दूसरे साल में आसानी से दाख़िला मिल जाता है। (5) यतीमख़ाना से मैट्रिक पास करने वाले यतीम तलबा का दाख़िला यतीमख़ाना के इनायत (I.T.I.) में बिल्कुल मुफ़्त है। उनसे किसी तरह का कोई ख़र्च नहीं लिया जाता है। पहले की तरह रहने-सहने और खाने-पीने की सारी सहूलियात दी जाती है। **अपील :** इस माद्दा परस्ताना और जदीद दौर में दीनी व असरी उलूम के रिहायशी (Residential) इदारों की पहले से कहीं ज़्यादा ज़रूरत है। • आसमान छूती महंगाई में इदारा की भरपूर माली मदद करें। तआवुन की मुख़्तलिफ़ शक्लें हैं जैसे • ज़कात, • अतियात, • सदक़ात, वग़ैरा और इदारा के बाक़ी तालीमी व तामीरी मन्सूबों के लिए भी रुपये की बहुत ज़रूरत है। इदारा आपसे नन्हे-मुन्ने मासूम यतीम बच्चों को तालीम के साथ-साथ बाहुनर बनाने के लिए और उन्हें ऊंचा उठाने के लिए फ़राख़दिलाना माली तआवुन की अपील करता है।

नोट : इदारा की मुख़्तसर तारीख़ दस्तावेज़ी (Documentary Film) फ़िल्म नज़रे-इनायत You Tube (Nazr-e-Enayeth) पर देखें।

चैक व ड्राफ़्ट और कोर बैंकिंग स्लिप पर सिर्फ यह लिखें : THE GAYA MUSLIM ORPHANAGAE

बराए राबिता चैक व ड्राफ़्ट और मनीआर्डर भेजने का पता

Hon. Secretary, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE •
Cherki-824237, Distt : Gaya (Bihar) India

Mobile : 9801213022, Whatsapp No. 7258063440

: Beneficiary Name
THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE
(Bank A/C No.: 300402010010581 (ZAKATH
(Bank A/C No.: 300402010002982 (DONATIONS
Bank IFSC Code No: UBIN0530042
Bank: UNION BANK OF INDIA
(MAIN BRANCH GAYA)

Scan & Pay

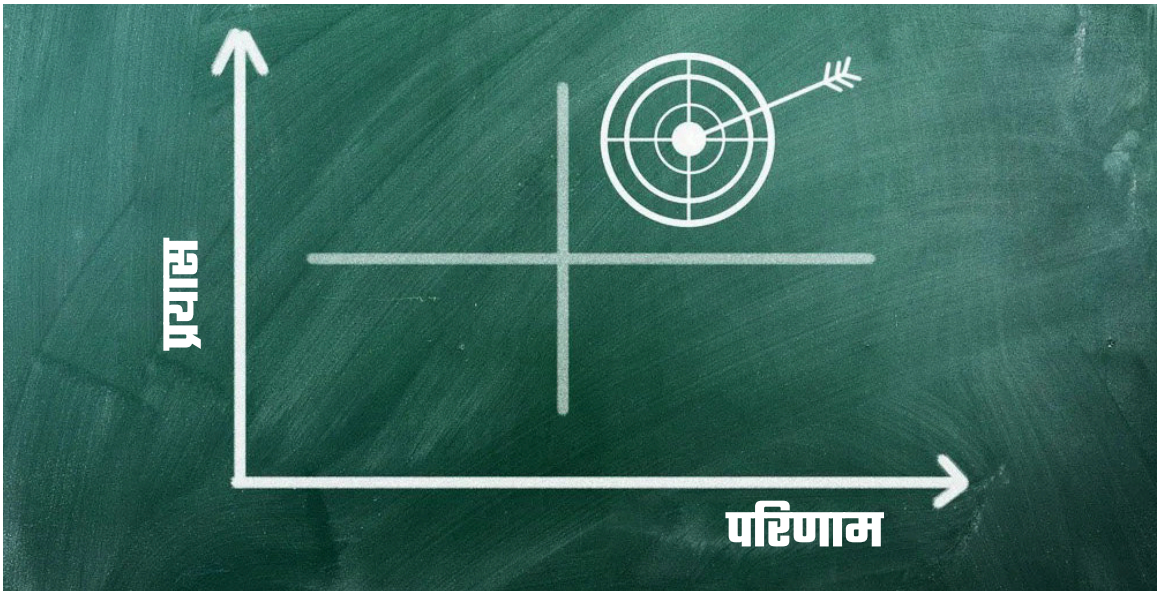
याद रखें : बैंक में रक़म ट्रांसफ़र की तफ़्सील बराए मेहरबानी स्कैन ऐंड पे पर (Scan to Pay) या किसी ज़रिये से रक़म ट्रांसफ़र के बाद स्क्रीन शॉट (Screen Shot) और नाम व पता ऊपर के व्हाट्सऐप नंबर पर भेज दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

इंजीनियर मुहम्मद हसनैन ख़ान
कारगुज़ार सदर : 9631867066

डॉक्टर जेड.ऐच. ख़ान
एजाज़ी सेक्रेट्री

E-mail : gmocde@yahoo.com.in
Website: www.gmogaya.in

पटना ब्रांच ऑफ़िस : पटना शहर के हमदर्द अपना चेक व ड्राफ़्ट और रक़म देने के लिए इनसे राबिता क़ायम करें। जनाब ग़ुलाम मुहम्मद ख़ां समनपुरा, पटना। 9934943229, जनाब इंजीनियर मुहम्मद हसनैन ख़ां समनपुरा, पटना। 9631867066



प्रयास और परिणाम के बीच में...?

जीवन में हर कोई सफलता चाहता है—कोई परीक्षा में, कोई कारोबार में, कोई रिश्तों में और कोई आत्म-संतोष में, लेकिन सफलता सिर्फ़ चाहने भर से नहीं मिलती, वह एक पूरी प्रक्रिया की मांग करती है। यह प्रक्रिया किसी भी वैज्ञानिक सिद्धांत की तरह स्पष्ट और सख़्त होती है। जैसे पानी तब तक नहीं उबलता जब तक उसका तापमान 100°C तक न पहुंचे, वैसे ही कोई भी नतीजा तब तक सामने नहीं आता जब तक उसकी शर्तें पूरी न की जाएं।

यह बात सुनने में मामूली लग सकती है, लेकिन इसमें एक गहरी जीवन-दृष्टि छिपी है—अधूरे प्रयास कभी पूरे परिणाम नहीं दे सकते। बहुत से लोग सोचते हैं कि वे लगातार मेहनत कर रहे हैं, लेकिन जब वे परिणाम नहीं देखते तो मायूस हो जाते हैं। सवाल यह नहीं है कि आप मेहनत कर रहे हैं या नहीं, सवाल यह है कि क्या वह मेहनत सही दिशा में, सही तरीक़े से और पूरी शिद्दत के साथ की जा रही है?

सौंदर्य बोध

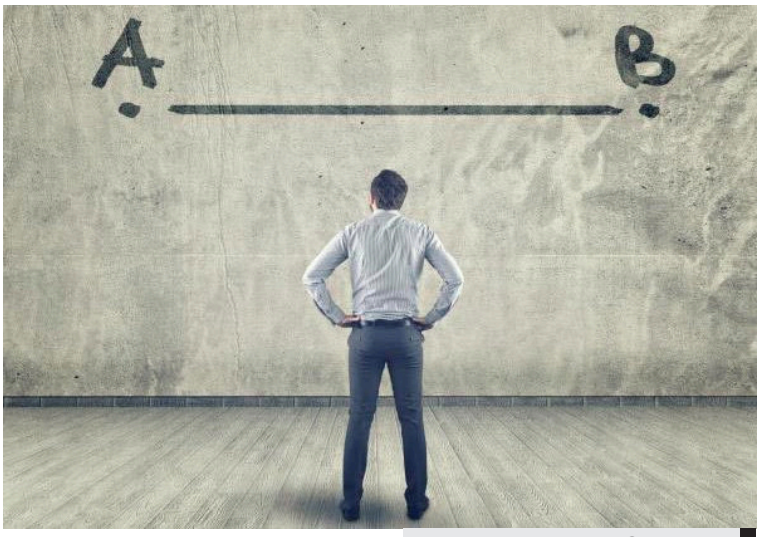


तबाना नूरी

मान लीजिए कोई छात्र दिन-रात पढ़ाई करता है, लेकिन बिना योजना, बिना समझ और बिना आत्म-निरीक्षण के। वह चाहे जितना समय लगाए, अगर उसका तरीक़ा सही नहीं है, तो परिणाम निराशाजनक ही होगा। यह वैसा ही है जैसे कोई पानी को 50°C तक गर्म करता रहे और यह उम्मीद रखे कि वह उबलने लगेगा। प्रकृति के नियमों की तरह जीवन के नियम भी कठोर हैं—वे भावुक नहीं होते, वे निष्पक्ष होते हैं।

हमारी संस्कृति में भावना को बहुत महत्त्व दिया जाता है, और देना भी चाहिए, लेकिन भावना नियमों की जगह नहीं ले सकती। अगर किसी व्यक्ति का इरादा नेक है, मगर वह व्यापार में आर्थिक गणनाओं की अनदेखी करता है, तो व्यापार डूबेगा ही। इसी तरह, अगर कोई किसान बिना सही मौसम, बीज और समय का ध्यान रखे मेहनत करता है, तो फ़सल अच्छी नहीं होगी। प्रकृति और समाज—दोनों की अपनी-अपनी शर्तें होती हैं, और नतीजे उन्हीं की भाषा समझते हैं।

सफलता सिर्फ़ प्रेरणा का फल नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है।



उसमें निम्नलिखित तत्व ज़रूरी होते हैं–

1. स्पष्ट लक्ष्य–जब तक आपको यह न पता हो कि आप कहां जाना चाहते हैं, तब तक रास्ते का कोई अर्थ नहीं।

2. दृष्टिकोण और रणनीति–प्रयासों की दिशा तय करने के लिए सोच और योजना चाहिए।

3. संसाधनों की पहचान और उपयोग–बिना संसाधनों के केवल इच्छा से कुछ नहीं होता।

4. समय का प्रबंधन–समय की अनदेखी करना, प्रक्रिया को अधूरा छोड़ देना है।

5. धैर्य और निरंतरता–99 डिग्री पर पहुंचा पानी भी उबलता नहीं, 100वीं डिग्री चाहिए। आख़िरी क्षण तक टिके रहना ही उबाल है।

जब हम बार-बार असफल होते हैं, तो ज़रूरी है कि हम अपने प्रयासों का मूल्यांकन करें। कई बार हम केवल "गर्म करने" में लगे रहते हैं—यानी कुछ करते हैं, मगर यह नहीं देखते कि क्या वह सही तापमान तक पहुंच रहा है। आत्म-निरीक्षण यही देखने की प्रक्रिया है कि हमारी मेहनत किस हद तक परिणामोन्मुख है।

यह बात सुनने में मामूली लग सकती है, लेकिन इसमें एक गहरी जीवन-दृष्टि छिपी है—अधूरे प्रयास कभी पूरे परिणाम नहीं दे सकते। बहुत से लोग सोचते हैं कि वे लगातार मेहनत कर रहे हैं, लेकिन जब वे परिणाम नहीं देखते तो मायूस हो जाते हैं। सवाल यह नहीं है कि आप मेहनत कर रहे हैं या नहीं, सवाल यह है कि क्या वह मेहनत सही दिशा में, सही तरीक़े से, और पूरी शिद्दत के साथ की जा रही है?

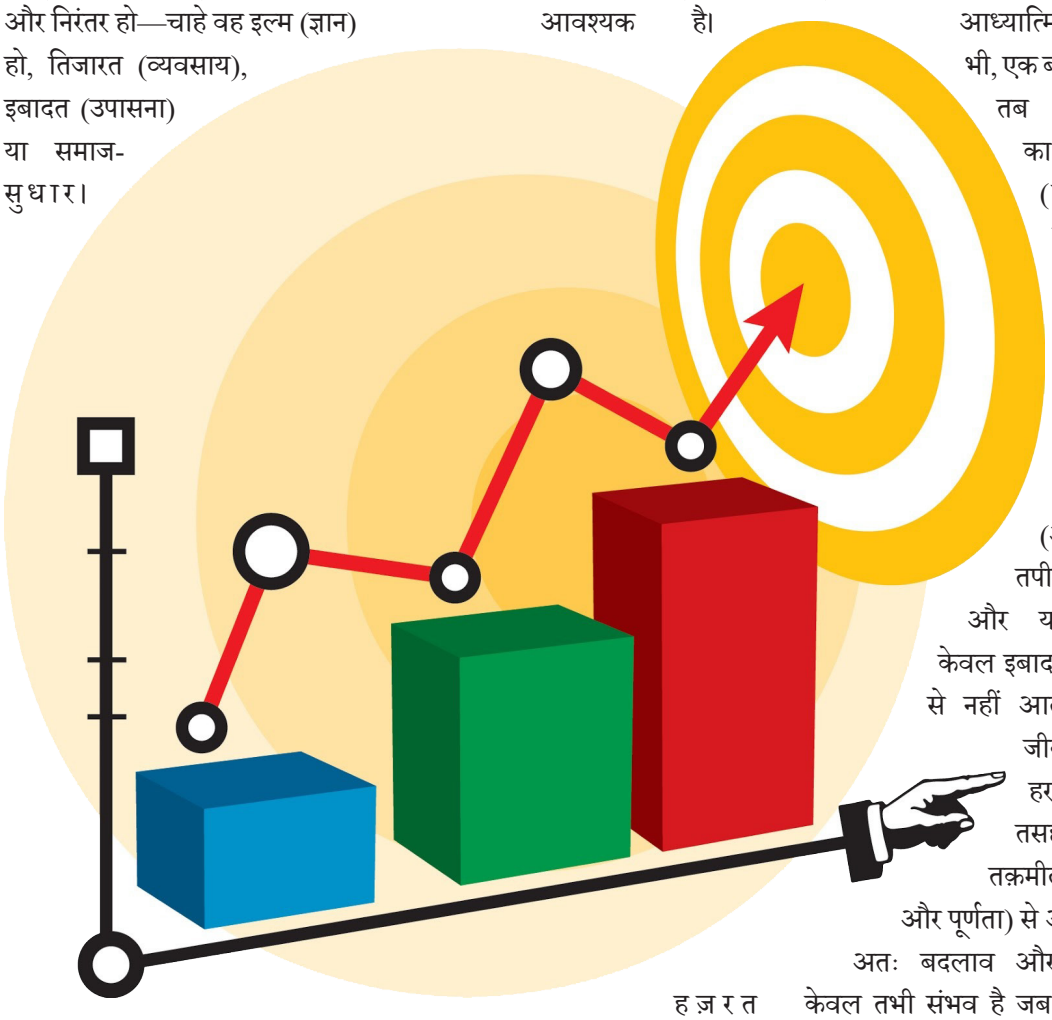
जैसे पानी को गर्म करने के लिए निरंतर ऊर्जा चाहिए, वैसे ही किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए निरंतर और केंद्रित प्रयास चाहिए। अगर आप बीच में रुकते हैं, तापमान गिरता है। यही कारण है कि आधे-अधूरे प्रयास न केवल समय की बर्बादी हैं, बल्कि वे हताशा भी पैदा करते हैं।

हमारा समाज भी इसी अधूरी कोशिश की मानसिकता से जूझता है। हम बदलाव चाहते हैं, लेकिन परिवर्तन की पूरी प्रक्रिया को अपनाने से हिचकते हैं। हम शिक्षा सुधार की बात करते हैं, लेकिन पाठ्यक्रम, शिक्षकों की गुणवत्ता, भाषा की समझ और संसाधनों की उपलब्धता जैसे मूल तत्वों पर बात नहीं करते। हम लोकतंत्र की बात करते हैं, लेकिन उसकी बुनियादी शर्तों—जैसे नागरिक चेतना, पारदर्शिता और जवाबदेही—को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। ऐसे में नतीजे अधूरे ही रह जाते हैं।

कोशिश का मतलब यह नहीं कि कुछ कर दिया; कोशिश का मतलब है पूरी शर्तों को, पूरे तरीक़े से, पूरी दृढ़ता के साथ निभाना। पानी को उबालने के लिए 100 डिग्री चाहिए—50 डिग्री पर चाहे जितना समय दें, नतीजा नहीं बदलेगा। यही सिद्धांत जीवन, करियर, समाज और आध्यात्मिकता—हर क्षेत्र में लागू होता है। मनचाहे नतीजे एक सटीक प्रक्रिया के परिणाम होते हैं। जब तक हम उस प्रक्रिया को पूरी तरह नहीं अपनाते, तब तक हम केवल 'गर्म' कर रहे होते हैं—उबाल अभी दूर होता है।

इसलिए ज़रूरत इस बात की नहीं कि हम केवल मेहनत करें, बल्कि यह सुनिश्चित करें कि हमारी मेहनत पूरी हो, सटीक हो और निरंतर हो। तभी वह 'उबाल' आएगा, जो ज़िंदगी को बदल देता है।

इस्लामी जीवन-दर्शन भी यही कहता है कि मेहनत वही क़ाबिल-ए-क़बूल होती है जो पूरी हो, सटीक हो, और निरंतर हो—चाहे वह इल्म (ज्ञान) हो, तिजारत (व्यवसाय), इबादत (उपासना) या समाज-सुधार।



क़ुरआन की यह आयत हमारे संपूर्ण विमर्श की अंतिम कड़ी हो सकती है। क़ुरआन हमें न केवल इरादे की पवित्रता का पाठ पढ़ाता है, बल्कि परिणाम पाने के लिए असबाब (उपायों) की अनिवार्यता भी स्पष्ट करता है। केवल चाहने या महसूस करने से कुछ नहीं होता, प्रयास (सई) करना होता है, और वह भी संपूर्णता के साथ।

इस्लामी चिंतन में भी यह स्पष्ट है कि केवल 'नीयत' (इरादा) ही काफ़ी नहीं, बल्कि उसे 'अमल' (कर्म) और 'इख़लास' (निष्ठा) के साथ पूरा करना आवश्यक है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल.)की एक प्रसिद्ध हदीस है–

"अल्लाह को यह पसंद है कि जब तुम कोई काम करो तो उसे पूरी ख़ूबी से करो।" (सहीह मुस्लिम)

आधा प्रयास करना, अधूरी योजना बनाना, या केवल भावना के भरोसे कुछ कर बैठना, पानी को केवल 40-50 डिग्री तक गर्म करने जैसा है। अल्लाह तआला ने हर चीज़ के लिए सुन्नतुल्लाह (ईश्वरीय नियम) तय कर रखी है—और कोई परिणाम तब तक उत्पन्न नहीं होता जब तक वह नियम पूरा न हो।

आध्यात्मिक दृष्टि से भी, एक बंदा (इंसान) तब तक ईश्वर का 'क़ुर्ब' (निकटता) नहीं पा सकता जब तक वह सच्चे प्रयासों से अपने नफ़्स (अहं) को तपीश न दे, और यह तपिश केवल इबादत या ज़िक्र से नहीं आती, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में तसहील और तक़मील (नियत और पूर्णता) से आती है।

अतः बदलाव और सफलता केवल तभी संभव है जब हम अपने भीतर और बाहर की प्रक्रिया को पूर्णता की ओर ले जाएं। आधे प्रयास नहीं, पूरा समर्पण चाहिए। यही जीवन का विज्ञान है, और यही उस परवरदिगार का इंसाफ़ी निज़ाम भी है। ■■

एक अपील , एक ऐलान और तआरुफ़

आपकी ख़ुसूसी तवज्जह का सबसे ज़्यादा मुस्तहिक

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना, गया

38 साल की ख़िदमात



कैफ़ीयते-क़ियाम : इदारा का तीन यतीम लड़कियों से 21 दिसम्बर 1986 को एक किराया के खपरैल मकान में क़ियाम अमल में आया था।

हिन्दुस्तान की रियासत बिहार, झारखंड, बंगाल, उड़ीसा में अपने तर्ज़ की पहली और वाहिद इक़ामती (Residential) तालीमगाह जो इस्लामी और असरी उलूम का संगम होने की वजह से मशहूर है। • इदारा बुनियाद के दिन से ही सही इस्लामी ख़ुतूत पर यतीम के साथ-साथ ग़रीब और ग़ैर-यतीम तालिबात की तालीमी व तर्बीयती ख़िदमात अंजाम दे रहा है। • यहां की तालिबात को मैट्रिक (Matric) पास करने के बाद कॉलेज के अलावा अरबी यूनिवर्सिटी में पहले और दूसरे साल में बाआसानी दाख़िला मिल जाता है। • शोबा-ए-हिफ़्ज़ की तालिबा को भी हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक तक पढ़ाया जाता है। • पांच ज़ुबानों में क़ुरआन और इस्लामियात और बिहार बोर्ड के निसाबे-तालीम के साथ मेयारी तालीम का नज़्म है। • **तालीमी साल** अप्रैल ता मार्च, • इदारा के अहाता (Campus) में ही पर्दे में रहकर नर्सरी से मैट्रिक तक की तालीम, होम साइंस, सिलाई-कटाई, मेहंदी व पेंटिंग और कम्प्यूटर की तालीम वग़ैरा दी जाती है। इसके लिए बच्चियों को कहीं आना-जाना नहीं पड़ता। **तालीमी मराहिल** • इब्तिदाई •सानवी • आला • फ़ासलाती तालीम • शोबा हिफ़्ज़ **यतीम तालिबात की तादाद** 75 **नोट** यतीम तालिबात का सारा ख़र्च, तआम व क़ियाम वग़ैरा बिल्कुल मुफ़्त है। **बैरूनी तालिबात की तादाद** अपने ख़र्च पर दारुल अक़ामा (Boarding) में रहकर तालीम हासिल करने वाली और दूसरे गांव से पढ़कर जाने वाली लगभग 100 हैं। **किफ़ाला स्कीम (Sponsorship)** के तहत एक यतीम बच्ची का सालाना ख़र्च पच्चीस हज़ार रुपये (Rs. 25,000) है। आप भी एक यतीम बच्ची की किफ़ालत की ज़िम्मेदारी लेकर सवाब में शरीक हों। **असातिज़ा, मुअल्लिमात और दीगर मुलाज़िमीन की तादाद** 33 तदरीसी और ग़ैर-तदरीसी स्टाफ़ की एक माह की तनख़्वाह एक लाख पच्चास हज़ार रुपये (Rs.1,50,000) से ज़्यादा है। **सालाना ख़र्च** तक़रीबन चालीस लाख रुपये (Rs. 40,00,000)। **ज़रिया आमदनी** मुस्लिम अवाम के चंदे **अपील** आज के माद्दापरस्ताना और जदीद दौर में लड़कियों के लिए जदीद और मुकम्मल इस्लामी तर्ज़े-तालीम के साथ रिहाइशी (Residential) इदारों की पहले से कहीं ज़्यादा बढ़कर ज़रूरत है। • आप इस महंगाई को देखते हुए और रमज़ान के मुबारक मौक़ा पर इदारे की नन्ही-मुन्नी मासूम यतीम बच्चियों को ऊंचा उठाने के लिए अपने • ज़कात • अतियात • सदक़ात से भरपूर माली मदद करें ताकि वे तालीम और हुनर के मैदान में आगे बढ़ सकें और किसी से पीछे न रहें। • बाक़ी तामीरी व तालीमी मन्सूबों को पूरा करने के लिए रक़म की फ़ौरी ज़रूरत है। • इदारा आपके फ़राख़दिलाना और मुख़लिसाना भरपूर माली तआवुन का मुंतज़िर है। **याद रखें** यह लड़कियों का इदारा है। यहां चंदा वसूल करने वालों की बहुत कमी है। यहां का कोई भी मुहस्सिल कमीशन पर चंदा वसूल नहीं किया करता है।

नोट : इदारा की मुख़्तसर तारीख़ दस्तावेज़ी फ़िल्म (Documentary Film) नज़रे-इनायत You Tube (Nazr-e-Enayeth) पर देखें।

चैक व ड्राफ़्ट और कोर बैंकिंग स्लिप पर सिर्फ यह लिखें : THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGAE

बराए राबिता चैक व ड्राफ़्ट और मनीआर्डर भेजने का पता

Founder & Hon. G. Secretary, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE, At • : Kolowna, P.o : Cherki-824237, Distt : Gaya (Bihar) India

Email : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.Com, Mobile : 8969435151, Website : www.gmgo.in

: Beneficiary Name
THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE
(Bank A/C No. : 300402010007752 (ज़कात
(Bank A/C No. : 300402010009846 (डोनेशन
Bank IFSC Code No : UBIN0530042
Bank : UNION BANK OF INDIA
(MAIN BRANCH GAYA)

Scan & Pay

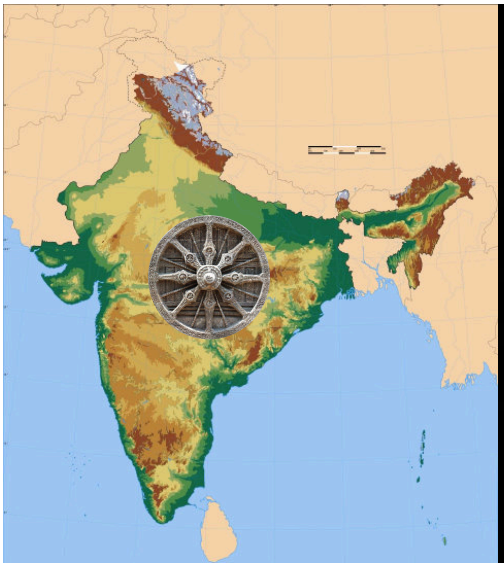
याद रखें : बैंक में रक़म ट्रांसफ़र की तफ़्सील बराए मेहरबानी स्कैन एंड पै (Scan & Pay) या किसी ज़रिये से रक़म ट्रांसफ़र के बाद स्क्रीन शॉट (Screen Shot) नाम व पता सहित व्हाट्स एप कर दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

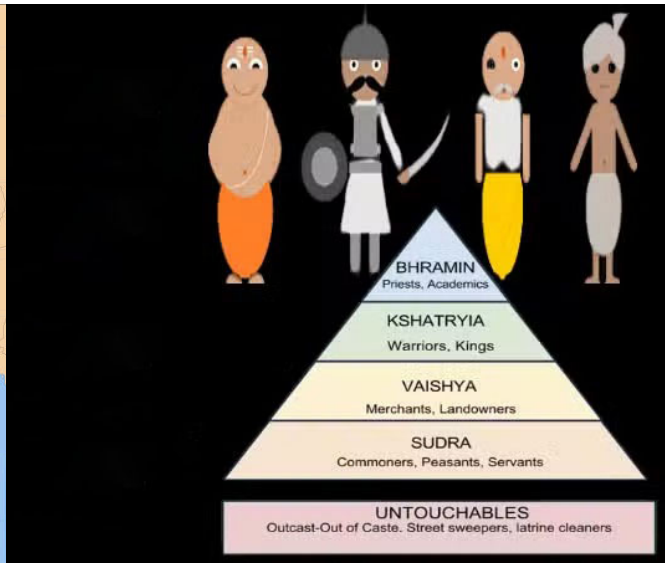
व्हाट्स एप नम्बर 7367909126 बानी व इज़ाज़ी जनरल सेक्रेट्री इकबाल अहमद ख़ां 9934480190

पटना ब्रांच ऑफ़िस : पटना शहर के हमदर्द अपना चैक व ड्राफ़्ट और रक़म देने के लिए इनसे राबिता करें।

जनाब ग़ुलाम मुहम्मद ख़ां (सद्र) समनपूरा, पटना, मोबाइल : 9934943229

जनाब इंजीनियर मुहम्मद हसनैन ख़ां, समनपूरा, पटना, मोबाइल : 9631867066





जातिगत नफ़रत : सत्ता का शस्त्र या सभ्यता का श्राप?

जातिगत नफ़रत, रंगभेदी या नस्लभेदी घटनाओं का संबंध केवल सत्ता और राजनीति से नहीं होता, बल्कि ऐसे कृत्यों के पीछे एक गहरा, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सत्य छुपा होता, जिसे अक्सर सतही राजनीतिक विमर्श में अनदेखा कर दिया जाता है। राजनीति तो उस सामाजिक चेतना का प्रतिबिंब होती है जो जनता के बीच पहले से मौजूद होती है। भारत में जातिगत घृणा और भेदभाव केवल चुनावी राजनीति का परिणाम नहीं है, ये एक मानसिकता है, जो सदियों से हमारी मान्यताओं, सामाजिक परंपराओं और पारिवारिक संस्कारों के माध्यम से एक पीढ़ी से

मुख्य स्तंभ



सुफ़ियान अहमद

दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होती रही है।

मूल प्रश्न

एक दलित को मंदिर में प्रवेश से रोकना, किसी यादव को छोटी जाति कहकर अपमानित करना या किसी मुसहर बच्चे को स्कूल में पानी तक न छूने देना सरीखे कृत्य किसी मंत्री या विधायक के आदेश से नहीं किए जाते। ऐसी घटनाएं समाज के उस अदृश्य जातिवादी प्रशिक्षण का परिणाम हैं जो हमारे शिक्षक, पिता और धर्मगुरु पीढ़ियों से देते आ रहे हैं। यही कारण है कि हमारे देश में जन्म के आधार पर ही सम्मान और अपमान, अधिकार और अपवंचन, स्पर्श और अस्पृश्यता का खेल आज भी जारी है। जातिगत घृणा की घटनाएं भारतीय समाज में मौजूद उस गहरे जातिगत ज़हर की सार्वजनिक छवियां हैं, जो न केवल सत्ता संरचनाओं में व्याप्त हैं, बल्कि हमारे धार्मिक और सांस्कृतिक मानस में भी गहराई से पैबस्त हैं।

यही कारण है कि जातिवादी

टिप्पणी करने वाला व्यक्ति किसी क़ानून से नहीं डरता, वह जानता है कि उसका समाज उसका नैतिक समर्थन करेगा। इस सामाजिक समर्थन की जड़ें इतनी गहरी हैं कि कोई भी राजनीतिक दल, चाहे वह दलितों की बात करे या बहुजन की, इस ढांचे को तोड़ने की हिम्मत नहीं करता।

जातीय भेदभाव का ऐतिहासिक संदर्भ

भारत में जाति-व्यवस्था कोई हालिया निर्मिति नहीं है। यह हज़ारों वर्षों पुरानी एक सामाजिक संरचना



है, जिसे प्रारंभ में वर्ण-व्यवस्था के रूप में स्थापित किया गया था– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। वैदिक साहित्य में इसका आरंभिक स्वरूप कर्म आधारित था, बाद में यह जन्म आधारित हो गया। इसमें सबसे नीचे रखे गए शूद्र, जिन्हें आज दलित कहा जाता है। इन्हें न केवल सामाजिक सम्मान से वंचित किया गया, बल्कि उनके स्पर्श, छाया, दृष्टि तक को अपवित्र घोषित किया गया।

इस सामाजिक विभाजन को धार्मिक ग्रंथों से भी वैधता दी गई। मनुस्मृति, धर्मसूत्रों और कुछ पुराणों में दलितों के लिए अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया गया। उन्हें मंदिरों में प्रवेश नहीं करने देना, शिक्षा से वंचित रखना, तथाकथित उच्च जातियों के सामने जूते पहनने या ऊंची आवाज़ में बोलने पर दंड देना, इस सबको एक संगठित धार्मिक अनुशासन का हिस्सा बना दिया गया।

इसलिए यह ज़रूरी है कि हम धर्म की मूल आत्मा और प्रभुत्ववाद के अंतर को समझें। धर्म कभी भी किसी विशेष वर्ण या जाति के वर्चस्व को प्रोत्साहित नहीं करता।

सनातन संस्कृति या ब्राह्मणवादी प्रभुत्व?

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने इसे ब्राह्मणवाद कहा, यानी एक ऐसा तंत्र जो धर्म के नाम पर दलितों, महिलाओं और श्रमिक वर्गों को पायदान दर पायदान नीचे धकेलता है। उन्होंने इसे 'जातिवादी हिंसा की वैचारिक फैक्ट्री' कहा, जिसकी जड़ें भारत के धार्मिक ढांचे में गहराई से जुड़ी हैं। आज भी जब कुछ लोग किसी यादव कथावाचक या किसी शूद्र को

जातिवादी टिप्पणी करने वाला व्यक्ति किसी क़ानून से नहीं डरता, वह जानता है कि उसका समाज उसका नैतिक समर्थन करेगा। इस सामाजिक समर्थन की जड़ें इतनी गहरी हैं कि कोई भी राजनीतिक दल, चाहे वह दलितों की बात करे या बहुजन की, इस ढांचे को तोड़ने की हिम्मत नहीं करता।

अपमानित करते हैं तो वे उसी वैदिक वैचारिक परंपरा से उर्जा ग्रहण कर रहे होते हैं, जिसमें ''ऊंच'' और ''नीच'' के सिद्धांत को 'दैविक विधान' मान लिया गया था।

ऐसी घटनाएं न केवल धर्म का चोला पहने हुए समाज के पाखंड को



उजागर करती हैं, बल्कि संविधान के मूल अधिकारों पर भी करारा तमाचा हैं।

वैचारिक मान्यता की आग में राजनीति का घी

यह कहना ग़लत नहीं होगा कि सत्ता और राजनीति जातिवाद की जनक नहीं, उपभोक्ता है। राजनीति या सत्ता इस सामाजिक बीमारी का उपयोग वोटों की खेती के लिए करती है, जैसे कोई व्यापारी पहले से बने बाज़ार में अपने उत्पाद बेचता है। राजनीति ने इस आग में घी ज़रूर डाला, लेकिन आग और ईंधन वर्ण व्यवस्था की वैचारिक मान्यता के रूप में पहले से समाज में मौजूद था।

जन्म के आधार पर जब असमानता को धार्मिक रूप से वैध मान लिया गया हो और भेदभाव को धर्म, परंपरा या 'संस्कृति' का हिस्सा बना दिया गया हो, तब उसे केवल राजनीतिक इच्छाशक्ति से समाप्त नहीं किया जा सकता। जातिगत नफ़रत की जड़ें न केवल सत्ता में है, बल्कि उससे कहीं पहले समाज के धार्मिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक ढांचे में है। राजनीति इसे भुनाती है, लेकिन वह इसे जन्म नहीं देती। इसीलिए अस्ली लड़ाई सत्ता से नहीं, जातिवादी मानसिकता से है। बदलाव केवल सत्ता परिवर्तन से नहीं, समाज परिवर्तन से आएगा।

बौद्धिक प्रगतिशीलता बनाम जातीय यथार्थ

भारतीय समाज एक अजीब विरोधाभास जी रहा है। एक ओर IIT और ISRO की कामयाबियां हैं, दूसरी ओर गांवों में घोर जातिवाद और छुआछूत। शहरी मध्यवर्ग सोशल मीडिया पर समानता की बातें करता है, पर शादी-ब्याह में 'कुल' और 'गोत्र' की सूची पहले देखता है।

बौद्धिकता, तकनीकी विकास और शिक्षा की बात करने वाला समाज, जाति के सामने नतमस्तक हो जाता है। जातिगत हिंसा अब केवल शारीरिक नहीं रही, यह अब डिजिटल होती जा

रही है। सोशल मीडिया पर दलित-बहुजन आवाज़ों को ट्रोल किया जाता है, उनके लेखों को अस्वीकार किया जाता है, और उनके सवालों को दलित राजनीति कहकर टाल दिया जाता है।

सामाजिक न्याय का पुनरावलोकन

भारतीय संविधान में अनुच्छेद 15, 17 और 46 स्पष्ट रूप से जातिगत भेदभाव को असंवैधानिक ठहराते हैं। अनुच्छेद 17 अस्पृश्यता को अपराध घोषित करता है, पर क्या समाज इसे अपराध मानता है?

क़ानून की पहुंच सीमित है, पर भारत का जातिवादी व्यवहार बहुत सूक्ष्म और अपारदर्शी रूप में कार्य करता है। स्कूल, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों तक में भी जातिगत भेदभाव के नज़ारे देखे जाते हैं। किराए के घरों के लिए जाति पूछी जाती है। जाति के आधार पर कुछ दरवाज़े आज भी बहुत से लोगों के लिए बंद कर दिए जाते हैं। यह वह हिंसा है जो न पुलिस में दर्ज होती है, न अदालतों में लड़ाई बनती है।

जब तक व्यक्ति अपने भीतर यह नहीं मानेगा कि जातिवाद अमानवीय और अवैज्ञानिक है, तब तक क़ानून बेमानी और राजनीति पाखंडी रहेगी। जब तक जातिवादी सोच को संस्कृति मानकर पोषित किया जाएगा, तब तक संविधान की समानता केवल किताबों में सीमित रहेगी।

धर्म का मर्म

यदि भारत को वास्तव में जाति मुक्त समाज बनाना है तो केवल संविधान की शिक्षा नहीं, धर्म की सही व्याख्या की भी ज़रूरत है।



ईश्वर के निकट किसी व्यक्ति की श्रेष्ठता उसका जन्म, जाति या वंश नहीं तय करता, बल्कि उसका चरित्र, नैतिकता और संयम (परहेज़गारी) ही उसका असली मूल्य है। "परहेज़गारी" या "तक़वा" का अर्थ है—सत्यनिष्ठ जीवन, न्याय, करुणा और ईश्वर से डरते हुए मानवता के साथ व्यवहार करना। इस आयत का सार यही है कि सभी मनुष्य समान हैं और कोई भी केवल जन्म के आधार पर ऊंचा या नीचा नहीं होता।

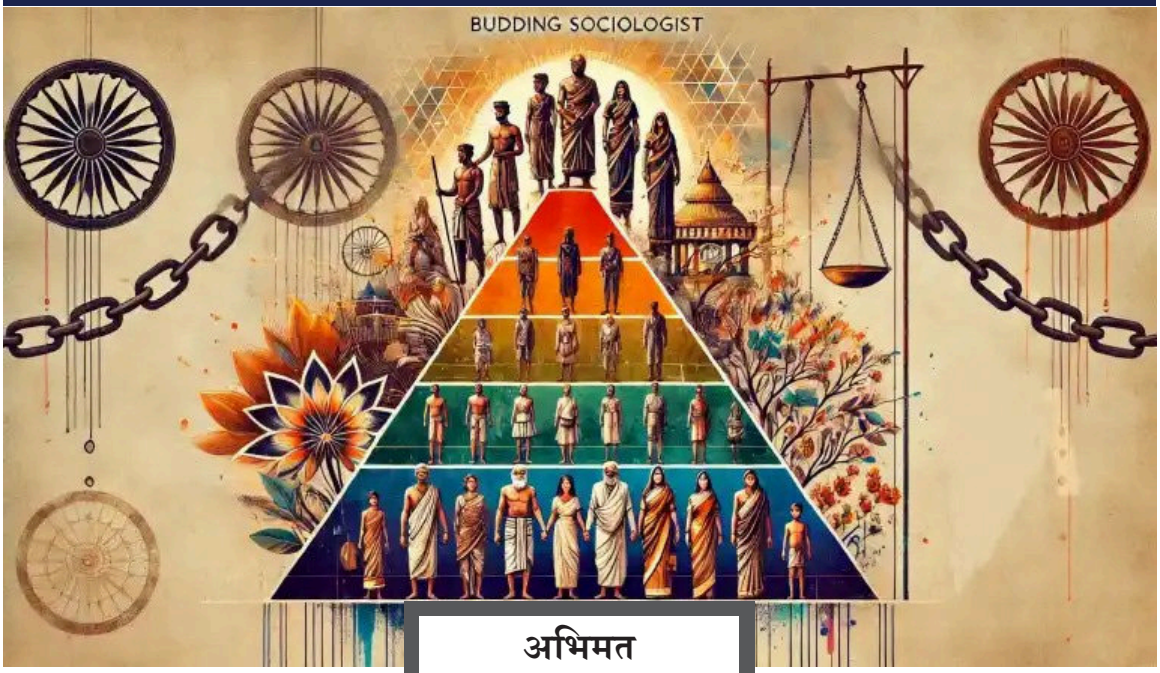
कबीर, रैदास, गुरु नानक, बुद्ध और अंबेडकर ने इसी धार्मिक संरचना को चुनौती दी थी। उन्होंने धर्म को शुद्ध आध्यात्मिकता के स्तर पर देखा, जहां मनुष्य का मूल्य उसके कर्मों, आचरण और करुणा से तय होता है, न कि जन्म से। यही दृष्टि उस वाणी में भी झलकती है जो कहती है—"अल्लाह के नज़दीक सबसे इज़्ज़त वाला वही है जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार है।"

(क़ुरआन, 49:13)

अर्थात् ईश्वर के निकट किसी व्यक्ति की श्रेष्ठता उसका जन्म, जाति या वंश नहीं तय करता, बल्कि उसका चरित्र, नैतिकता और संयम (परहेज़गारी) ही उसका अस्ली मूल्य है। "परहेज़गारी" या "तक़वा" का अर्थ है—सत्यनिष्ठ जीवन, न्याय, करुणा और ईश्वर से डरते हुए मानवता के साथ व्यवहार करना। इस आयत का सार यही है कि सभी मनुष्य समान हैं और कोई भी केवल जन्म के आधार पर ऊंचा या नीचा नहीं होता।

■■

स्वर्ण प्रभुत्ववाद का पिंजरा



अभिमत



जितेंद्र गौतम

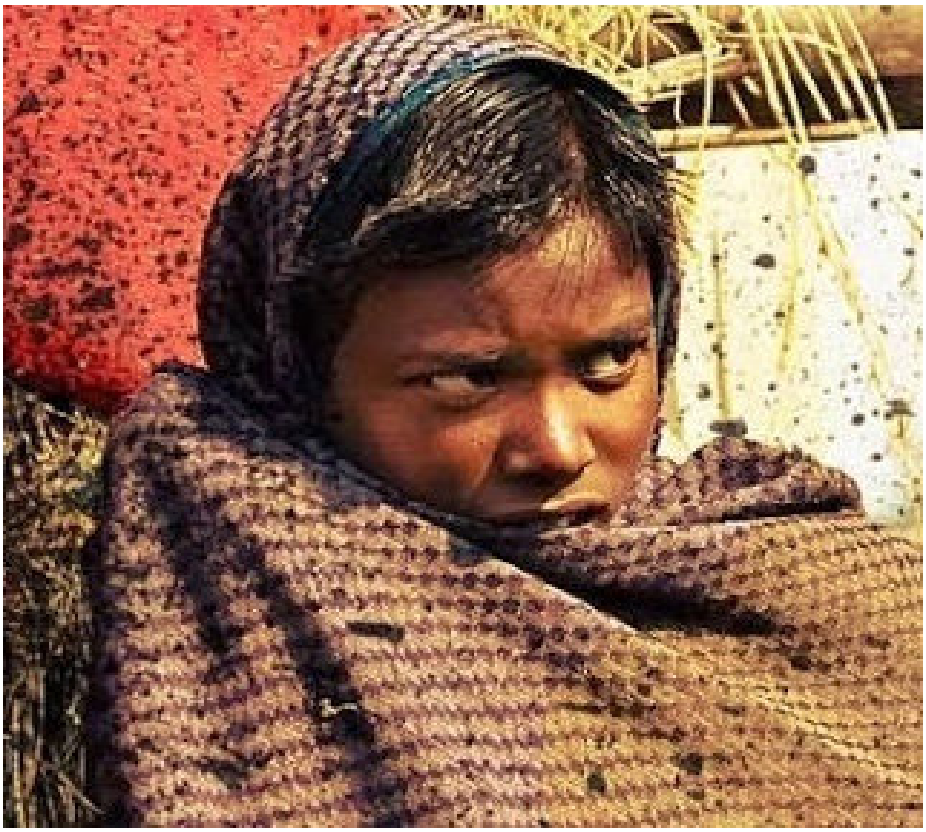
उत्तर प्रदेश के इटावा का कथावाचक कांड सामाजिक और राष्ट्रीय एकता की कामना करने वाले हर व्यक्ति को डराने वाला है। यह केवल एक गांव की घटना नहीं, बल्कि एक प्रतीक है उस सामाजिक तनाव, असहिष्णुता और सामूहिक चेतना के विघटन का, जो भारत जैसे विविधता-समृद्ध देश के लिए गम्भीर चिंता का विषय है।

इस घटना में, जहां कथावाचक मुकुटमणि सिंह यादव को कथित रूप से अपमानित किया गया, जाति के आधार पर उन्हें दंडित किया गया, वहां यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है—क्या हमारे समाज की चेतना इतनी विकृत हो गई है कि एक व्यक्ति का जातीय परिचय उसकी पूजा, साधना या कथा को ही अवैध घोषित कर सकता है? और क्या इस सबके लिए केवल राजनीति को दोष देना पर्याप्त है?

कथावाचक मुकुटमणि सिंह यादव इटावा के एक गांव में श्रीमद्भागवत कथा वाचन कर रहे थे। कथा के बाद जब उनकी जातीय पहचान स्पष्ट हुई, तो समाज के तथाकथित ठेकेदारों ने उन्हें दंडित किया—उनकी शिखा काटी गई, उन्हें अपमानित किया गया, और सामाजिक रूप से बहिष्कृत कर दिया गया।

यहां हम एक साथ कई परतों को देखते हैं—धार्मिक आस्था, जातीय पहचान, सामाजिक व्यवस्था और न्याय का स्वरूप। यह घटना बताती है कि हमारा समाज आज भी कितनी गहराई तक पहचान के पिंजरे में बंद है।

कोई भी संवेदनशील नागरिक यह मानता है कि राजनीति समाज की परछाई होती है, और राजनीति का स्तर समाज की चेतना के स्तर से ऊपर नहीं हो सकता। यदि राजनीति जातिवादी है, ध्रुवीकरण पर आधारित है, और विभाजनकारी नीतियों से चलती है, तो वह उसी सामाजिक मनोविज्ञान से संचालित होती है जो उसे गढ़ता है।



हमें यह स्वीकारना होगा कि आज की राजनीति ने जाति को वोट बैंक में बदल दिया है। आरक्षण से लेकर प्रतिनिधित्व और पहचान की राजनीति तक, जाति का इस्तेमाल सत्ता प्राप्ति के लिए सबसे उपयोगी औज़ार बन चुका है, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या केवल राजनीति इस गिरावट के लिए उत्तरदायी है?

भारत में जाति व्यवस्था हज़ारों वर्षों से चली आ रही है। हालांकि इस व्यवस्था का मूल उद्देश्य श्रम विभाजन था, लेकिन धीरे-धीरे यह सामाजिक भेदभाव और वर्चस्व का आधार बन गई। धर्मशास्त्रों की ग़लत व्याख्याएं, सामाजिक अभिजात्य का दंभ और ऐतिहासिक असमानताओं ने इसे एक कठोर, अमानवीय व्यवस्था में बदल दिया।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के वर्गीकरण के बीच सदियों की दूरी, छूत-अछूत की अवधारणाएं और जातीय पवित्रता की संकल्पनाएं आज भी ग्रामीण भारत में सामाजिक व्यवहार के निर्णायक तत्व हैं। जब कोई यादव, जाटव या कोई अन्य कथित "पिछड़ी जाति" का व्यक्ति व्यास पीठ पर बैठता है और शास्त्रों की व्याख्या करता है, तो वह केवल कथा नहीं कह रहा होता—वह एक सामाजिक व्यवस्था को चुनौती दे रहा होता है।

यह चुनौती आज भी असहनीय इसलिए है, क्योंकि ज्ञान का स्रोत, आध्यात्मिकता का मार्ग और धार्मिक नेतृत्व, कुछ ख़ास जातियों के दायरे में सीमित कर दिया गया है। यह वर्गवादी मानसिकता सामाजिक परिवर्तन को रोकने वाली सबसे बड़ी बाधा है।

हम यह भी नहीं भूल सकते कि यह केवल गावों की समस्या नहीं है। आज भी शहरों में बड़े-बड़े मंदिरों में दलित पुजारी नहीं होते, कथा मंचों पर पिछड़े वर्ग के विद्वानों को आमंत्रित नहीं किया जाता, और टेलीविज़न पर धार्मिक प्रवचनों की दुनिया एक जातीय एकाधिकार का दृश्य प्रस्तुत करती है।

समाज में धर्म और जाति की यह संयुक्त सत्ता केवल सामाजिक विभाजन ही नहीं, बल्कि न्याय और लोकतंत्र की मूल आत्मा को भी खोखला कर रही है। यह स्थिति केवल संवैधानिक उपचारों से नहीं सुधर सकती; इसके लिए सामाजिक आत्म-परीक्षा, आलोचना और सुधार की सशक्त प्रक्रिया आवश्यक है।

जब एक कथावाचक की शिखा काटी जाती है, तो यह किसी व्यक्ति की नहीं, बल्कि उस चेतना की हत्या होती है, जो समावेशी धार्मिकता का संदेश देती है। यह हिंसा उस विचार के विरुद्ध है, जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात करता है। एक ओर हम दुनिया को 'soft power' के रूप में अपनी संस्कृति और अध्यात्म का पाठ पढ़ाना चाहते हैं, और दूसरी ओर अपने ही

नागरिकों को जातिगत अपमान से नहीं बचा पाते।

इस संदर्भ में शिक्षा का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। केवल संविधान पढ़ा देना पर्याप्त नहीं, बल्कि यह भी सिखाना होगा कि 'आदमी आदमी से बड़ा नहीं होता', उसकी जाति, वर्ण या पेशा—उसकी नैतिकता, करुणा और विवेक से बड़ा नहीं हो सकता। शिक्षा व्यवस्था को सामाजिक समानता की जड़ों तक पहुंचना होगा।

आज की आवश्यकता केवल सहानुभूति की नहीं, बल्कि सक्रिय सह-भागिता की है। जिस तरह समाज में जातीय वर्चस्व की दीवारें खड़ी की गई हैं, उसी तरह ज़रूरत है कि उन दीवारों को ढहाने के लिए दलितों, पिछड़ों, सवर्णों और अल्पसंख्यकों—सभी को एकजुट होना पड़ेगा। केवल शोषित वर्गों की आवाज़ नहीं, बल्कि सत्ता-सम्पन्न वर्गों की आत्मालोचना भी इस मुक्ति की प्रक्रिया का हिस्सा होनी चाहिए।

यदि कोई अपराध होता है, तो उसके लिए पुलिस और न्यायालय हैं। सामाजिक दंड, अपमान और हिंसा से समाज न्यायसंगत नहीं होता, केवल क्रूर होता है। जाति के नाम पर वोट मांगने वालों को जातीय हिंसा की ज़िम्मेदारी से बचने नहीं देना चाहिए। अगर वे जाति के नाम पर सत्ता चाहते हैं, तो उन्हें उस जाति के नाम पर हुए अपमान की जवाबदेही भी लेनी होगी।

इस संबंध में मीडिया को अपनी भूमिका निभानी होगी। उसे केवल सनसनी नहीं, सच्चाई की ज़िम्मेदारी लेनी होगी। घटनाओं को धार्मिक और जातीय चश्मे से दिखाने के बजाय, उन्हें

हमें हर हाल में प्रभुत्व की उस वैचारिक व्यवस्था का विरोध करना होगा, जिसमें सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सत्ता केवल एक जाति विशेष के नियंत्रण में रहे, और इसे धर्म शास्त्रों, परंपराओं और शुद्धता की संकल्पनाओं से वैध ठहराया जाए। यह प्रभुत्ववाद का सबसे सुनियोजित रूप है।



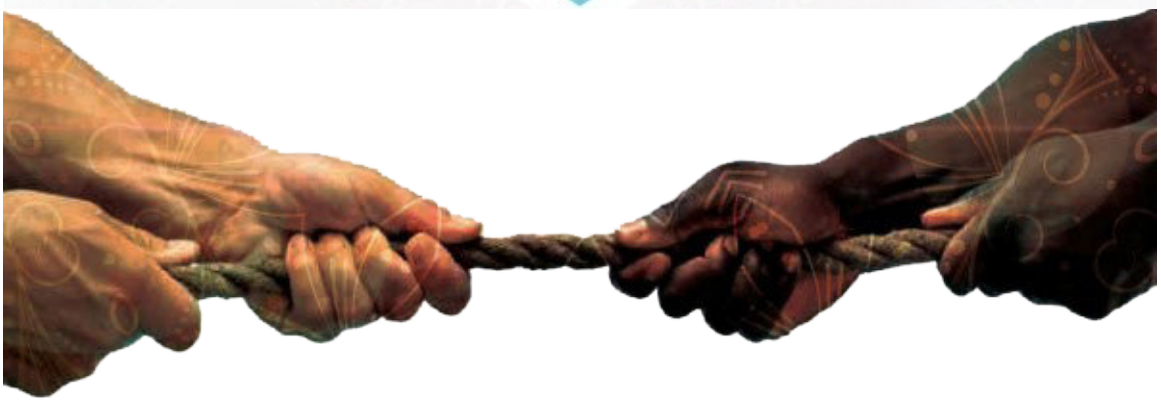
संवैधानिक और मानवीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना होगा। जातिवाद से मुक्ति केवल क़ानून से नहीं, शिक्षा और मानवीय संवाद से संभव है। गांव-गांव में सामाजिक समरसता के अभियान चलाने होंगे।

इस घटना के बहाने यदि हम यह सोचते हैं कि पूरा दोष केवल राजनीति का है, तो हम इस समस्या को अधूरा समझते हैं। राजनीति ज़रूर ज़िम्मेदार है, लेकिन उससे भी बड़ी ज़िम्मेदारी हमारी सामाजिक सोच, धार्मिक संकीर्णता और जातिगत दंभ की है।

आज भारत को केवल विकास की राजनीति नहीं चाहिए, बल्कि विकासशील चेतना चाहिए—ऐसी चेतना जो धर्म को विभाजन का नहीं, एकत्व का माध्यम माने; जो समाज को जातीय पहचान से मुक्त करके, नैतिकता, करुणा और न्याय की नई भूमि पर खड़ा करे।

हमें हर हाल में प्रभुत्व की उस वैचारिक व्यवस्था का विरोध करना होगा, जिसमें सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सत्ता केवल एक जाति विशेष के नियंत्रण में रहे, और इसे धर्मशास्त्रों, परंपराओं और शुद्धता की संकल्पनाओं से वैध ठहराया जाए। यह प्रभुत्ववाद का सबसे सुनियोजित रूप है। यह व्यवस्था न केवल दूसरों को बहिष्कृत करती है, बल्कि उन्हें आत्म-संदेह और कुंठा में भी धकेल देती है। यही वह पिंजरा है, जिसमें समता का पक्ष दम तोड़ता है। ■■

जातिगत श्रेष्ठता के विरुद्ध एक सशक्त दृष्टिकोण



भारत ही नहीं, दुनियाभर में जाति, रंग और नस्ल के आधार पर जो भेदभाव होता है, वह केवल सत्ता और राजनीति की देन नहीं है। यह एक गहरे सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विमर्श से जुड़ी समस्या है, जो समाज के अंत:करण में समाई हुई है। सत्ता तो उसका केवल बाहरी रूप है—वह वही प्रतिबिंबित करती है जो समाज में गहराई से व्याप्त होता है, लेकिन यदि हम इस समस्या की तह तक जाएं और समाधान की ओर बढ़ना चाहें, तो केवल राजनीतिक या संवैधानिक उपाय पर्याप्त नहीं होंगे। हमें उस नैतिक और आध्यात्मिक चेतना की ओर लौटना होगा जो इंसान को इंसान समझने का नज़रिया देती है। इसी चेतना का सशक्त स्वर इस्लामी शिक्षाओं में दिखाई देता है, विशेषकर तक़वा (परहेज़गारी) की अवधारणा में।

जातिगत मानसिकता किसी विशेष राष्ट्र तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव सभ्यता के लगभग हर समाज में किसी न किसी रूप में मौजूद रही है। भारत में यह व्यवस्था वर्ण-व्यवस्था के रूप में स्थापित हुई, जिसे धार्मिक वैधता भी प्रदान की गई। यही नहीं, इस व्यवस्था को शिक्षा, संस्कार और

समाधान



लुबना सबूब

रीति-रिवाजों के ज़रिए इतने गहरे रूप में आत्मसात कराया गया कि आज भी एक उच्च शिक्षित व्यक्ति के भीतर भी जातिगत श्रेष्ठता का भ्रम जीवित रहता है।

समाज में जन्म से तय होने वाली पहचान को ही मूल्य का आधार बना देना एक बहुत ही क्रूर अवधारणा है। इससे न केवल लाखों-करोड़ों लोगों को इंसानियत से नीचे गिरा दिया जाता है, बल्कि पूरे समाज में एक असमानता, अविश्वास और अलगाव की भावना पैदा होती है।

यही वह मानसिकता है जिसे महापुरुषों ने चुनौती दी थी—बुद्ध ने इसे करुणा और समता से नकारा, कबीर और रैदास ने इसे आत्मा की शुद्धता से अस्वीकार किया, और गुरु नानक तथा अंबेडकर ने इसे सामाजिक क्रांति के ज़रिए बदलने का प्रयत्न किया। इन सभी प्रयासों में जो केंद्रीय मूल्य दिखाई देता है, वह यह है कि मनुष्य की अस्ली पहचान उसके जन्म से नहीं, बल्कि उसके कर्म, आचरण और आंतरिक पवित्रता से तय होती है।

मानव समता की अवधारणा

इस्लामी शिक्षाएं इस सिद्धांत पर टिकी हैं कि सभी मनुष्य अल्लाह के बनाए हुए हैं और उनके बीच कोई भी भेदभाव केवल जन्म, रंग, नस्ल या भाषा के आधार पर नहीं हो सकता।

क़ुरआन में स्पष्ट कहा गया है–

"ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह के यहां तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे अधिक तक़वा (ईशपरायणता) रखता है। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जानने वाला, ख़बर रखने वाला है।"

(क़ुरआन 49:13)

होती है।

तक़वा का अर्थ : एक नैतिक और आध्यात्मिक जीवनशैली

"तक़वा" केवल एक धार्मिक कर्तव्य नहीं, बल्कि एक समग्र जीवन दृष्टि है। इसका अर्थ है—अपने कार्यों, विचारों और व्यवहारों में ईश्वर के प्रति ज़िम्मेदारी का बोध। यह बोध इंसान को निरंकुश नहीं होने देता, बल्कि उसे हमेशा यह एहसास कराता है कि वह एक जवाबदेह सत्ता के सामने खड़ा है।

व्यावहारिक रूप में देखा जाए तो उसके सबसे उत्कृष्ट उदाहरण पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) की जीवनी में मिलते हैं। अरब समाज नस्ल और क़बीले की श्रेष्ठता में डूबा हुआ था। अश्वेतों, ग़ुलामों और बाहरी समुदायों को हेय दृष्टि से देखा जाता था।

ऐसे माहौल में जब नबी (सल्ल.) ने हज़रत बिलाल (रज़ि.), जोकि एक काले अफ़्रीक़ी ग़ुलाम थे, को अज़ान देने का प्रमुख कार्य सौंपा, तो यह एक



यह आयत इंसानी बराबरी और तक़वा के आधार पर मूल्य निर्धारण की ऐसी पराकाष्ठा प्रस्तुत करती है जिसे आधुनिक संविधान भी पूरी तरह आत्मसात नहीं कर पाए हैं। यहां यह स्पष्ट कर दिया गया कि विविधता का मक़सद भेदभाव नहीं, बल्कि पारस्परिक पहचान और संवाद है। श्रेष्ठता का आधार केवल "तक़वा" है, यानी वह आंतरिक पवित्रता जो न्याय, करुणा और सत्यनिष्ठ जीवन से प्रकट

इस एहसास से उत्पन्न होता है इंसाफ़, अख़लाक़ (नैतिकता) और रहमत (दया)।

जिस समाज में तक़वा हो, वहां जातिगत घृणा की कोई गुंजाइश नहीं बचती, क्योंकि वहां इंसान को उसके कर्म, उसके व्यवहार और उसकी नीयत से आंका जाता है, न कि उसके वंश या जाति से।

जातिवाद के ख़िलाफ़ एक क्रांति

इस्लामी दृष्टिकोण को यदि

क्रांतिकारी घटना थी। अज़ान, जो इस्लाम में दिन में पांच बार दी जाती है, वह किसी उच्च कुल के व्यक्ति द्वारा नहीं, बल्कि एक पूर्व ग़ुलाम अफ़्रीक़ी द्वारा दी जाती रही। यह इस्लामी न्यायिक दृष्टिकोण का अत्यंत शक्तिशाली प्रतीक है।

पैग़म्बर ने कहा–"अरबी को अजमी (ग़ैर-अरबी) पर, और गोरे को काले पर कोई श्रेष्ठता नहीं, सिवाय तक़वा के।" (हदीस : मुस्नद अहमद)

यह कथन केवल एक धार्मिक निर्देश नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति की नींव है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में इस्लामी शिक्षा का महत्व

भारत जैसे देश में, जहां जातिगत पहचान व्यक्ति के जीवन का अनिवार्य हिस्सा बना दी गई है, वहां इस्लामी शिक्षा एक वैकल्पिक नैतिक मार्ग प्रस्तुत करती है। यह मार्ग कहता है कि "तुम कौन हो?" का उत्तर तुम्हारे जन्म में नहीं, बल्कि तुम्हारे कर्म और इरादे में है। यदि भारतीय समाज इस मूल्य को स्वीकार कर ले, तो "ऊंच-नीच", "अस्पृश्यता", "जातिगत दंभ" जैसी बुराइयों का अंत हो सकता है।

भारत के अनेक मुस्लिम समाजों में भी जातिगत भेदभाव के अवशेष देखने को मिलते हैं, जो इस्लामी शिक्षाओं के प्रतिकूल हैं। ऐसे में यह ज़रूरी है कि इस्लाम के मूल सन्देश को आत्मसात किया जाए और अपने समाज के भीतर से भी इस मानसिकता को जड़ से हटाया जाए।

जाति के विरुद्ध एक नैतिक क्रांति

यदि भारत को वास्तव में जाति-मुक्त समाज बनाना है, तो यह केवल संविधान की किताब पढ़कर संभव नहीं होगा। संविधान बाह्य ढांचा है, लेकिन मानसिकता आंतरिक है। इसके लिए धर्म की पुनर्व्याख्या आवश्यक है—और इस पुनर्व्याख्या में वह दृष्टि शामिल होनी चाहिए जो इंसान को आत्मा के स्तर पर बराबर मानती हो, जो जन्म से नहीं, कर्म और करुणा से मानव मूल्य तय करे। यह वही दृष्टिकोण है जो क़ुरआन की आयत 49:13 में वर्णित है। यही वह गूढ़ संदेश है जिसे



इस्लामी परंपरा में छुपा हुआ यह संदेश केवल मुसलमानों के लिए नहीं, बल्कि समस्त मानवता के लिए है। यही समय है कि हम इस चेतना को पुनः जाग्रत करें—अपने समाज के लिए, अपने बच्चों के लिए, और उस इंसानियत के लिए जो जातिवाद की ऊंची दीवारों के पीछे दम तोड़ रही है।

हर धर्म के अनुयायी को अपनाना चाहिए—क्योंकि यह केवल धार्मिक निर्देश नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के लिए एक नैतिक प्रस्ताव है।

जातिगत श्रेष्ठता के विरुद्ध एक सशक्त दृष्टिकोण

जातिगत भेदभाव के विरुद्ध इस्लामी शिक्षा एक सशक्त दृष्टिकोण देती है। यह दृष्टिकोण न केवल सिद्धांत रूप में, बल्कि व्यवहार और इतिहास में भी स्वयं को प्रमाणित कर चुका है। भारत में इस दृष्टिकोण की स्वीकार्यता जातिगत मानसिकता को चुनौती दे सकती है—यदि इसे केवल धार्मिक दायरे में नहीं, बल्कि एक नैतिक-आध्यात्मिक प्रस्ताव के रूप में प्रस्तुत किया जाए।

यह प्रत्येक मनुष्य को सत्य, करुणा, न्याय और ईश्वर की निगरानी में जीवन जीने की प्रेरणा देता है। इस वैचारिक व्यवस्था के आधार पर ही एक ऐसा समाज बनाया जा सकता है जहां सभी इंसान बराबर हों, और किसी को उसके जन्म के कारण न ऊंचा माना जाए न नीचा।

इस्लामी परंपरा में छुपा हुआ यह संदेश केवल मुसलमानों के लिए नहीं, बल्कि समस्त मानवता के लिए है। यही समय है कि हम इस चेतना को पुनः जाग्रत करें—अपने समाज के लिए, अपने बच्चों के लिए, और उस इंसानियत के लिए जो जातिवाद की ऊंची दीवारों के पीछे दम तोड़ रही है। ■■

आज़ादी और सपने



कविता



अर्जुनदेव चारण

बेटे / रटो नहीं शब्द
अक्षर के जाले
इनमें / फंस गया तो

सांसों का टोटा है।
नहीं समझेगा तू,

अभी छोटा है।
बेटे

आज़ादी और सपने
तुम्हें पढ़ाए जाएंगे

पर / इनके अर्थ
तुम्हारी आंखों में / नहीं समाएंगे।

इन्हें / जानने की ज़िद करोगे
तो बिना मौत मारे जाओगे।

■■



सुधार के नाम पर शिक्षा से खिलवाड़

मंथन



मिरात अहमद

भारतीय गणराज्य की लोकतांत्रिक संरचना में शिक्षा को सबसे बुनियादी अधिकार के रूप में मान्यता प्राप्त है। "शिक्षा का अधिकार अधिनियम" (Right to Education Act) यह सुनिश्चित करता है कि छह से चौदह वर्ष की आयु तक का हर बच्चा गुणवत्तापूर्ण, निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करे। परंतु हाल के वर्षों में केंद्र और राज्यों की सरकारों की कुछ नीतियां शिक्षा के इस मूल अधिकार को ही पंगु बनाने में लगी हुई हैं। विशेषकर उत्तर प्रदेश, राजस्थान जैसे राज्यों में सरकारी स्कूलों का बंद होना या विलय के नाम पर उन्हें निष्क्रिय कर देना इस ओर इशारा करता है कि भारत में अब शिक्षा की प्राथमिकता कमज़ोर होती जा रही है।

स्कूलों को बंद करने की नीति : सुधार या संहार?

हाल ही में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लगभग 5,000 प्राथमिक विद्यालयों को बंद करने या विलय करने का निर्णय लिया गया है। इससे पहले राजस्थान सरकार भी हज़ारों स्कूलों को इसी तर्क पर बंद कर चुकी है कि जहां 50 से कम विद्यार्थी हैं, वहां के बच्चों को "निकटवर्ती" स्कूल में स्थानांतरित किया जाएगा। यह तर्क सुनने में भले ही प्रभावशाली लगे, पर जो लोग भारत के छह लाख से अधिक गांवों की भौगोलिक और सामाजिक परिस्थितियों से परिचित हैं, वे समझते हैं कि यह निर्णय शिक्षा को और अधिक दुर्गम बना देगा।

शिक्षा के अधिकार का हनन

शिक्षा का अधिकार अधिनियम स्पष्ट करता है कि पहली से पांचवीं तक के बच्चों के लिए स्कूल की दूरी एक किलोमीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए और छठी से आठवीं तक के लिए यह दूरी अधिकतम तीन किलोमीटर होनी चाहिए। परंतु जब इन मानदंडों को दरकिनार कर स्कूलों को बंद किया जा रहा है, तो यह न केवल क़ानून का उल्लंघन है, बल्कि बच्चों की शैक्षिक यात्रा को भी बाधित करने

का एक अनैतिक प्रयास है।

लड़कियों की शिक्षा पर सीधा हमला

ग्रामीण भारत में, विशेषकर उत्तर भारत के राज्यों—बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड आदि में, पहले ही लड़कियों की साक्षरता दर चिंताजनक रूप से कम है। यदि पास के सरकारी स्कूलों को बंद किया जाता है, तो सबसे पहले और सबसे अधिक प्रभावित लड़कियां ही होती हैं। माता-पिता अब उन्हें दूर के



स्कूलों में भेजने से हिचकेंगे—सुरक्षा, परिवहन और सांस्कृतिक पाबंदियां इसके मुख्य कारण होंगे। यह स्थिति लड़कियों की शिक्षा को कई दशक पीछे धकेल सकती है।

केंद्रीय विश्वविद्यालयों में सीयूईटी की नीति और नामांकन में गिरावट

शिक्षा क्षेत्र में एक और विवादास्पद परिवर्तन है – सीयूईटी (CUET) यानी 'कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट' की अनिवार्यता। यह नीति उच्च शिक्षा को आसान और पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से लाई गई थी, लेकिन इसका सबसे अधिक नुक़सान लड़कियों को हुआ। आंकड़े बताते हैं कि सीयूईटी लागू होने के बाद से केंद्रीय विश्वविद्यालयों में लड़कियों के नामांकन में 30 प्रतिशत तक की गिरावट आई है। दिल्ली विश्वविद्यालय, जो कभी पूरे भारत से मेधावी विद्यार्थियों को आकर्षित करता था, अब सीमित राज्यों का ही केंद्र बन गया है। यह भी भारतीय शिक्षा की समावेशिता और विविधता के विरुद्ध जाता है।

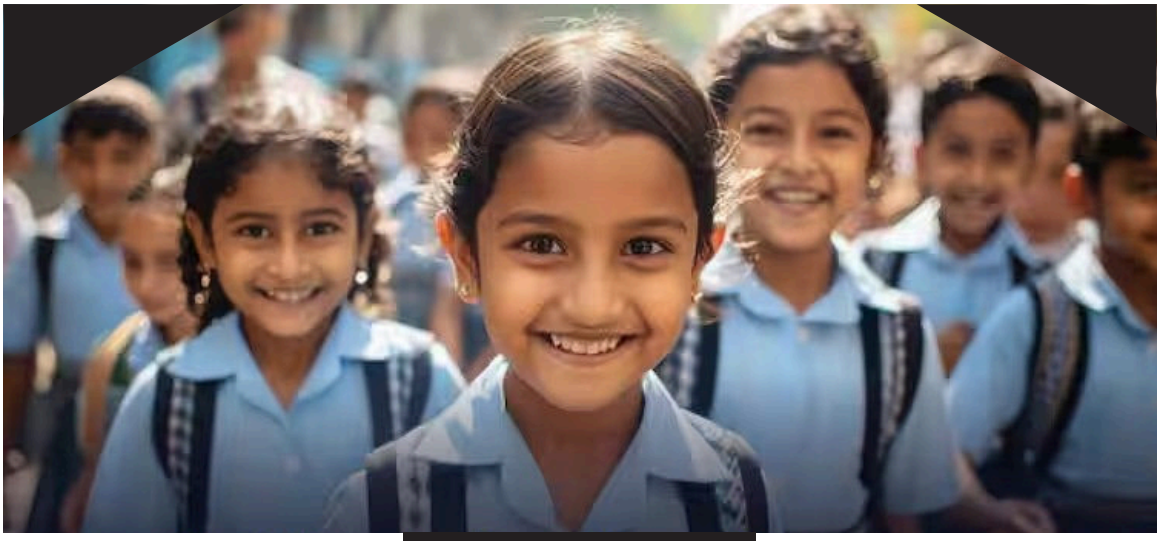
निजीकरण की आंधी और सरकारी स्कूलों की उपेक्षा

सरकारी स्कूलों को बंद करने की नीति के पीछे जो मानसिकता काम कर रही है, वह उस वर्ग की है जो शहरी, अंग्रेज़ी-माध्यम और निजी स्कूलों से निकला है। नीति-निर्माता इस सच्चाई से वाक़िफ़ नहीं हैं कि गांवों और छोटे क़स्बों में निजी स्कूलों की बाढ़ भले ही आ रही हो, परंतु वे बुनियादी संरचना—शौचालय, खेल का मैदान, पुस्तकालय, प्रयोगशाला आदि—से पूरी तरह वंचित हैं। इन स्कूलों में शिक्षकों की योग्यता पर कोई पैमाना नहीं है, और दाख़िले के बाद वहां से बच्चे को निकालना भी कठिन हो जाता है।

कारणों की पड़ताल ज़रूरी

सरकारी स्कूलों में बच्चों की घटती संख्या का कारण सिर्फ़ स्कूलों की संख्या नहीं है, बल्कि शिक्षक पर लादे गए ग़ैर-शैक्षणिक कार्य, निरीक्षण तंत्र की विफलता और प्रेरणा देने वाले तंत्र की अनुपस्थिति भी है। शिक्षकों को चुनाव कराने, जनगणना और मिड डे मील जैसे कार्यों में लगा देना शिक्षा के मूल उद्देश्य से भटकाव है।

सर्वे बताते हैं कि ज़िलाधिकारियों का औसतन पांच प्रतिशत से भी कम सरकारी स्कूलों में निरीक्षण होता है। जब स्कूलों की निगरानी नहीं होगी, जब नीतियों का ज़मीनी परीक्षण नहीं होगा, तब सरकारी तंत्र की विफलता स्पष्ट दिखाई देगी।



न्यायालय के निर्देशों की अनसुनी क्यों ?

वर्ष 2015 इलाहाबाद हाईकोर्ट ने स्पष्ट आदेश दिया था कि सभी सरकारी कर्मचारियों, विधायकों और अधिकारियों के बच्चे सरकारी स्कूलों में अनिवार्य रूप से पढ़ें। यदि इस निर्णय को लागू किया जाता, तो सरकारी स्कूलों की दशा स्वतः सुधरती, क्योंकि निर्णय लेने वाले तब स्वयं इस व्यवस्था का हिस्सा होते। परंतु यह आदेश ठंडे बस्ते में डाल दिया गया।

नई शिक्षा नीति और नामांकन में बाधाएं

नई शिक्षा नीति (NEP) के अंतर्गत यह नियम बनाया गया है कि पहली कक्षा में प्रवेश छह वर्ष की आयु के बाद ही होगा। इससे सरकारी स्कूलों में नामांकन में और कमी आ गई है। उधर निजी स्कूलों में प्रवेश की होड़ लगी है, जहां पांच साल में ही बच्चों का प्रवेश हो जाता है। जब सरकारी और निजी व्यवस्था में एकरूपता नहीं होगी, तो असमानता बढ़ेगी ही। अतः यह नियम पुनर्विचार योग्य है।

शिक्षा एक राष्ट्र की आत्मा होती है। जब आत्मा घायल होती है, तो उसका विकास संभव नहीं हो पाता है। भारत को यदि वास्तव में विकसित राष्ट्र बनना है, तो शिक्षा व्यवस्था को बहस का नहीं, क्रियान्वयन का विषय बनाना होगा। सरकारी स्कूलों को बंद कर देना, शिक्षा सुधार नहीं, शिक्षा पलायन है। सरकार को चाहिए कि वह जनसंवाद करे, ज़मीनी सच्चाई समझे और भारत के हर बच्चे को समान शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित करे।

सुधार के नाम पर न हो शिक्षा से खिलवाड़

बंद स्कूलों को फिर से चालू किया जाए, विशेषकर उन इलाक़ों में जहां लड़कियों की संख्या अधिक है। नीतियों में स्थानीय विविधता को समझते हुए निर्णय लिया जाए, एकरूप नीति पूरे भारत पर थोपना व्यावहारिक नहीं है। शिक्षकों को ग़ैर-शैक्षणिक कार्यों से मुक्त किया जाए, और प्रेरणादायी प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाएं। सरकारी स्कूलों में बुनियादी संरचना जैसे-पुस्तकालय, लैब, खेल का मैदान, ICT सुविधा और मातृभाषा आधारित पाठ्यक्रम पर ज़ोर दिया जाए। इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश को लागू किया जाए, जिससे जनप्रतिनिधि और अफ़सर ख़ुद सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता के साझेदार बनें।

शिक्षा एक राष्ट्र की आत्मा होती है। जब आत्मा घायल होती है, तो उसका विकास संभव नहीं हो पाता है। भारत को यदि वास्तव में विकसित राष्ट्र बनना है, तो शिक्षा व्यवस्था को बहस का नहीं, क्रियान्वयन का विषय बनाना होगा। सरकारी स्कूलों को बंद कर देना, शिक्षा सुधार नहीं, शिक्षा पलायन है। सरकार को चाहिए कि वह जनसंवाद करे, ज़मीनी सच्चाई समझे और भारत के हर बच्चे को समान शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित करे। यही भारत की अस्ली उन्नति होगी। ■■

दुष्प्रचार की सुनामी में सत्य की लहर



बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में जब पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा गया, तब शायद किसी ने यह कल्पना नहीं की थी कि एक दिन ऐसा भी आएगा जब सच्चाई को अपने अस्तित्व के लिए ख़ुद लड़ना होगा। भारत जैसे लोकतांत्रिक और विविधतापूर्ण देश में यह चुनौती और भी विकराल हो गई है। आज की दुनिया में सूचना जितनी तेज़ी से फैलती है, उतनी ही तेज़ी से भ्रामक और झूठी ख़बरें भी हमारे मानस को प्रभावित करती हैं। सोशल मीडिया, जो एक समय आम आदमी की आवाज़ था, अब दुष्प्रचार का सबसे शक्तिशाली औज़ार बन चुका है।

यह एक सरल मनोवैज्ञानिक सत्य है कि मनुष्य कहानी से जुड़ता है, तथ्य से नहीं। कहानी में भावनाएं होती हैं, नायक होते हैं, संकट और समाधान होते हैं। एक तथ्य, चाहे वह कितना ही प्रमाणिक क्यों न हो, अगर वह

नज़रिया



डॉ. प्रदीप कुमार

उबाऊ और शुष्क रूप में प्रस्तुत किया जाए, तो वह लोगों की स्मृति में टिक नहीं पाता। दूसरी ओर, एक झूठी मगर चतुराई से गढ़ी गई कहानी, जो लोगों की भावनाओं से जुड़ती हो, वह जल्दी फैलती है और लंबे समय तक याद रखी जाती है।

भारत की वर्तमान स्थिति में यह संकट गहराता जा रहा है। सांप्रदायिक तनाव, चुनावी ध्रुवीकरण, राष्ट्रवाद के नाम पर विभाजनकारी विमर्श और विरोध के प्रति शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण, इन सबने एक ऐसा वातावरण तैयार किया है, जिसमें फ़र्ज़ी ख़बरें सहजता से स्वीकार ली जाती हैं, और सत्य संदेह के घेरे में आ जाता है।

फेसबुक, एक्स (पूर्व ट्विटर), यूट्यूब, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप जैसे प्लेटफॉर्म अब केवल संवाद के माध्यम नहीं रहे। ये प्लेटफॉर्म उपभोक्ताओं की रुचियों, पूर्वधारणाओं और भावनाओं को भांपकर वही सामग्री उन्हें दिखाते हैं जो उनके विचारों से मेल खाती हो। यह "Confirmation Bias" को बढ़ाता है। यानी लोग वही सुनते और देखते हैं जो वे पहले से मानते हैं। ऐसे में किसी नई या विरोधी बात का उनके मस्तिष्क तक पहुंचना मुश्किल हो जाता है।

यह न केवल लोकतांत्रिक विमर्श को कुंद करता है, बल्कि समाज को विचारधारात्मक समूहों में बांट देता है। नतीजतन, एक ख़बर या वीडियो जिसे एक वर्ग सराहता है, वही दूसरे वर्ग को नफ़रत से भर देता है। ऐसे माहौल में तथ्यों की भूमिका गौण हो जाती है

और भावनाओं की राजनीति हावी हो जाती है।

भारत सरकार द्वारा 2019 में शुरू की गई PIB फैक्ट चेक यूनिट और अन्य स्वतंत्र संस्थाएं जैसे Alt News, BOOMLive, The Quint की फैक्ट चेकिंग शाखा, आदि सराहनीय कार्य कर रही हैं, लेकिन इनका प्रभाव सीमित है। इनकी भाषा अकादमिक होती है और सबसे बड़ी बात—इनकी पहुंच उन लोगों तक नहीं है जो भ्रामक ख़बरों के सबसे बड़े उपभोक्ता हैं।

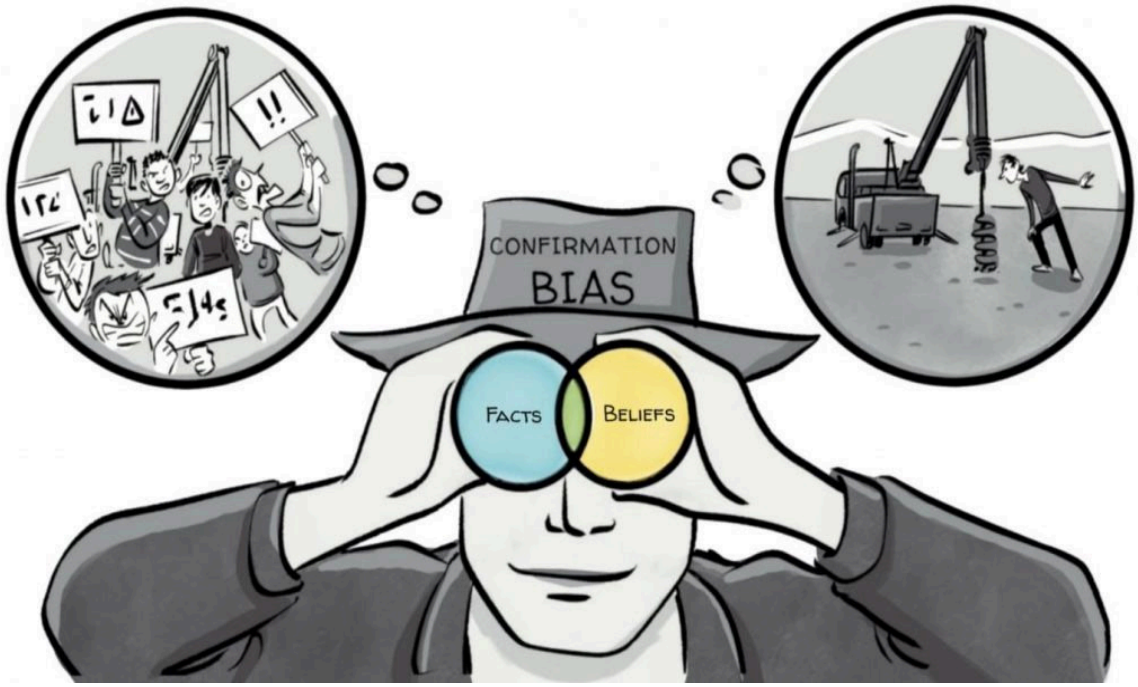
फैक्ट चेकिंग का मौजूदा स्वरूप अधिकतर 'तथ्य बनाम झूठ' तक सिमटा हुआ है। लेकिन जैसा कि अनुभव बताता है, केवल 'फेक' ठप्पा लगा देने से दुष्प्रचार की धार को रोका नहीं जा सकता। दरअस्ल, इसे चुनौती देने के लिए हमें उसी रणनीति को अपनाना होगा जिसे दुष्प्रचार अपनाता है—रोचक, भावनात्मक और लोगों के अनुभवों से जुड़ी कहानियां। सच्चाई प्रभावशाली हो सकती है यदि उसे ठीक तरह से प्रस्तुत किया जाए। यही तरीक़ा फैक्ट चेकिंग इकाइयों के लिए प्रेरणा बन सकता है।

मान लीजिए किसी इलाक़े में अफ़वाह फैली कि "XYZ समुदाय के लोग बच्चों को अग़वा कर रहे हैं।" इस झूठी ख़बर का खंडन केवल सरकारी प्रेस विज्ञप्ति से नहीं होगा। यदि किसी स्थानीय निवासी की कहानी सामने लाई जाए—जो इस अफ़वाह के कारण ख़ुद हिंसा का शिकार बना, या जिसने साहस दिखाकर इस झूठ का विरोध किया—तो वह अधिक प्रभाव छोड़ती है।

आकर्षक शैली में छोटी-छोटी वीडियो कहानियां बनाकर लोगों को बताया जा सकता है कि अफ़वाहें कैसे समाज को नुक़सान पहुंचाती हैं।

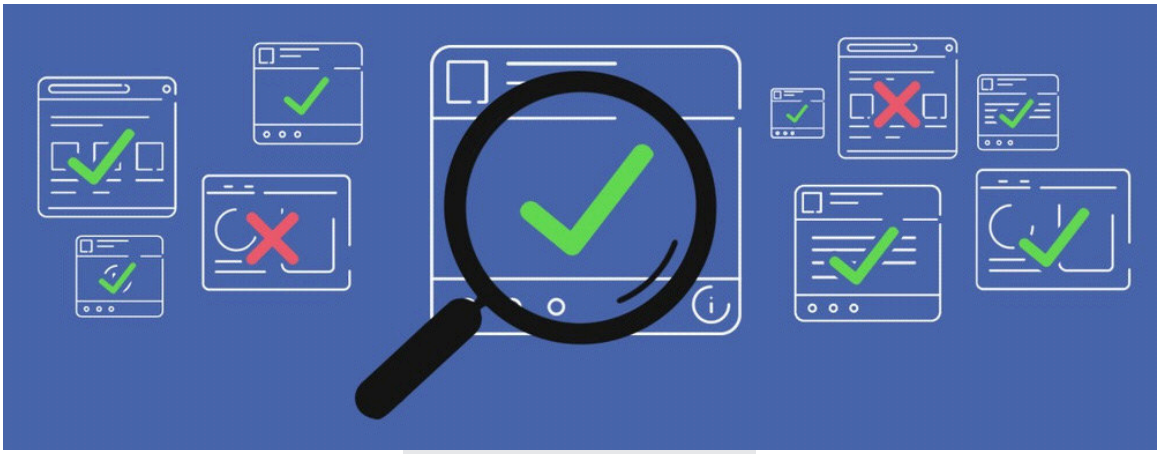
इसी तरह व्यंग्य, रील्स, मीम्स जैसे लोकप्रिय माध्यमों का उपयोग करके तथ्य-आधारित जानकारी रोचक रूप में दी जा सकती है। व्यंग्य की भाषा में कही गई बात लंबे समय तक दिमाग़ में रहती है। राजनीतिक व्यंग्यकारों, स्टैंड-अप कॉमेडियनों, लोक गायकों और नुक्कड़ नाट्य मंडलियों को इस मुहिम में जोड़ा जा सकता है।

दुष्प्रचार की सबसे बड़ी ताक़त यह है कि वह समूह-आधारित पहचान



को छूता है। यदि कोई ख़बर आपकी जाति, धर्म, पार्टी या विचारधारा के पक्ष में है, तो आप उसे स्वीकार करते हैं, भले ही वह ग़लत हो। और यदि वही तथ्य उसके विरोध में जाता हो तो आप उसे 'प्रोपेगैंडा' कहकर नकार देते हैं।

इस मानसिकता को बदलना आसान नहीं है, लेकिन संभव है। इसके लिए आवश्यक है कि फैक्ट चेकिंग इकाइयां केवल सूचना न दें,



बल्कि संवाद करें। वे समुदायों के साथ बैठें, लोकभाषा में बात करें, स्थानीय उदाहरण दें और यह बताएं कि सच्चाई उनके लिए क्यों महत्वपूर्ण है। इसके लिए एक नई रणनीति की आवश्यकता है–

1. इमोशनल फैक्ट चेकिंग : तथ्य केवल बौद्धिक नहीं, भावनात्मक भी हों। जैसे यह बताना कि एक अफ़वाह ने किसी की दुकान जला दी, किसी की बेटी की शादी तोड़ दी, या किसी निर्दोष को पीटकर मार डाला।

2. जन भागीदारी आधारित सत्य-वाचन : जिन लोगों ने फ़र्ज़ी ख़बरों का अनुभव किया, वे सामने आएं और बताएं कि उन्हें कैसे नुक़सान हुआ, इससे समाज में आत्म-निरीक्षण को बढ़ावा मिलेगा।

3. स्थानीय भाषाओं और सांस्कृतिक प्रतीकों का उपयोग: हर राज्य, हर गांव, हर मोहल्ले की अपनी भाषा और परंपरा है। सत्य को उन्हीं प्रतीकों के माध्यम से पेश किया जाए।

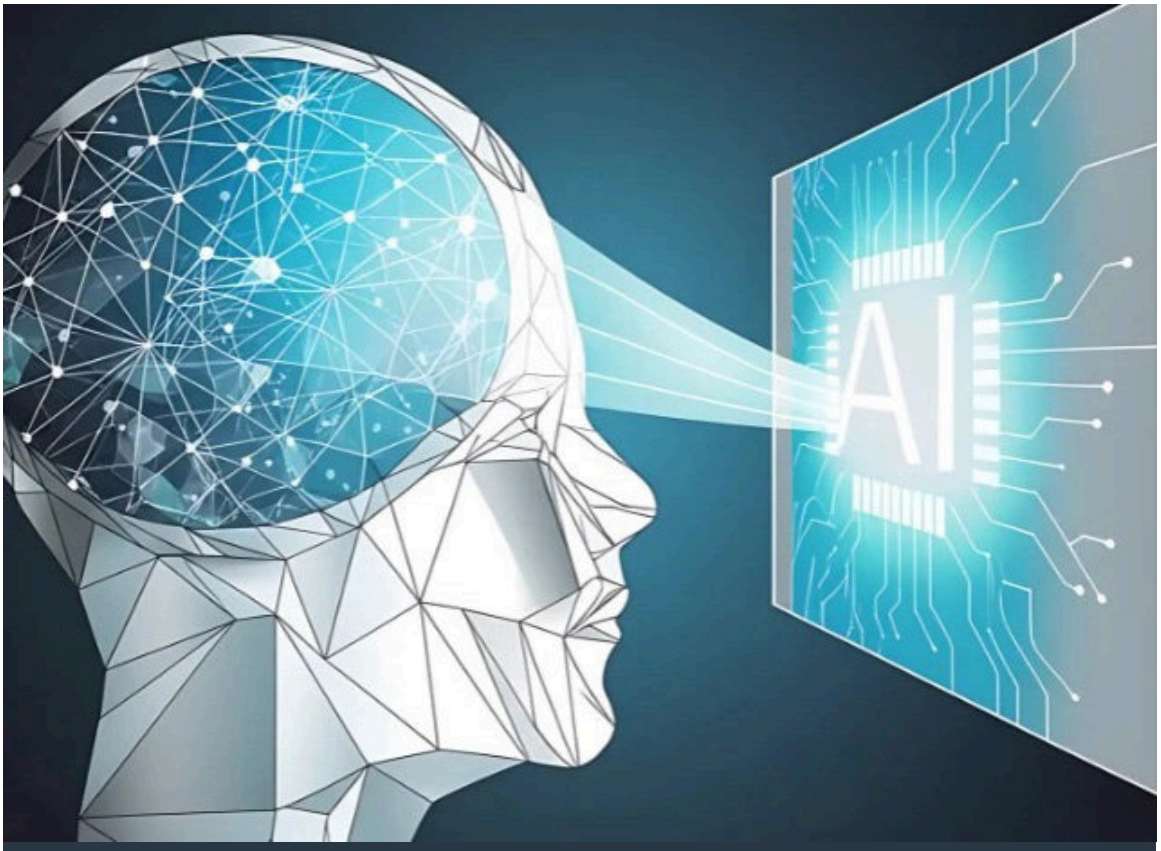
4. फैक्ट क्लिप्स और नाटक मंचन : स्कूलों, पंचायतों और सामुदायिक केन्द्रों में छोटे-छोटे दृश्य मंचनों द्वारा सच को मज़ेदार और असरदार ढंग से पेश किया जाए।

हमें यह समझना होगा कि सच्चाई की सबसे बड़ी कमज़ोरी उसकी प्रस्तुति है, और झूठ की सबसे बड़ी ताक़त उसकी कहानी। यदि हम सच्चाई को भी उतनी ही कलात्मकता, भावनात्मकता और सामूहिक जुड़ाव के साथ प्रस्तुत करें, तो कोई कारण नहीं कि हम इस सूचना युद्ध में विजय न प्राप्त कर सकें।

5. कहानी-आधारित मोबाइल ऐप और गेम्स : बच्चे और युवा, जो सबसे अधिक मोबाइल इस्तेमाल करते हैं, उनके लिए गेम के ज़रिये सही जानकारी फैलाना एक क्रांतिकारी क़दम हो सकता है।

भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में सत्य को बचाने की लड़ाई अब केवल पत्रकारों या फैक्ट चेकर्स की नहीं रह गई है। यह प्रत्येक नागरिक की ज़िम्मेदारी बन गई है। दुष्प्रचार का मुक़ाबला 'प्रतिक्रिया' से नहीं, बल्कि 'रचनात्मकता' से किया जाना चाहिए।

हमें यह समझना होगा कि सच्चाई की सबसे बड़ी कमज़ोरी उसकी प्रस्तुति है, और झूठ की सबसे बड़ी ताक़त उसकी कहानी। यदि हम सच्चाई को भी उतनी ही कलात्मकता, भावनात्मकता और सामूहिक जुड़ाव के साथ प्रस्तुत करें, तो कोई कारण नहीं कि हम इस सूचना युद्ध में विजय न प्राप्त कर सकें। सच्चाई यह है कि अगर आप आगे बढ़कर अपनी कहानी नहीं सुनाएंगे, तो कोई और उसे अपने मुताबिक़ सुना देगा। ■■



बुद्धि को विकल्प नहीं, विस्तार दें

हम मनुष्यों ने ज्ञान की प्राप्ति, विचारों की अभिव्यक्ति और समस्याओं के समाधान के लिए सदियों से भाषा, लेखन और संवाद का प्रयोग किया है, लेकिन जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग जैसी तकनीकें हमारी ज़िंदगी में प्रवेश कर रही हैं, हमारी मूलभूत क्षमताओं—विशेष रूप से सोचने, समझने और रचनात्मक रूप से सृजन करने की प्रकृति बदलती जा रही है। चैटजीपीटी, जोकि ओपनएआई द्वारा विकसित एक उन्नत भाषा मॉडल है, आज शिक्षा, रोज़गार और रचनात्मक लेखन से लेकर तकनीकी समाधान तक हर क्षेत्र में व्यापक रूप से प्रयुक्त हो रहा है।

विचारणीय



मयसम ज़ारा

यह मानना अनुचित नहीं होगा कि चैटजीपीटी एक उपयोगी उपकरण है। यह जटिल समस्याओं को सरल बनाता है, भाषा की बाधाओं को तोड़ता है, तकनीकी सवालों का त्वरित समाधान देता है और यहां तक कि छात्रों को असाइनमेंट या शोध-पत्र लिखने में भी सहायता करता है, किंतु यही सुविधा जब स्वाभाविक अभ्यास की जगह लेने लगे, तब यह सहायक नहीं, बाधक बन जाती है।

बुद्धि की मशीन पर निर्भरता

हाल ही में एमआईटी मीडिया लैब (अमेरिका स्थित सुप्रसिद्ध "मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी" विश्वविद्यालय का एक

प्रमुख अनुसंधान केंद्र, जो तकनीक, मानव व्यवहार और डिज़ाइन के बीच संबंधों पर काम करता है) द्वारा किए गए एक शोध ने इस ओर ध्यान आकर्षित किया है कि जो छात्र AI टूल्स का अत्यधिक उपयोग करते हैं, विशेषकर चैटजीपीटी का, उनके मस्तिष्क की सक्रियता में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है। यह गिरावट विशेष रूप से तीन महत्वपूर्ण क्षेत्रों—याददाश्त, रचनात्मकता और निर्णय निर्माण—में देखी गई। यह निष्कर्ष चिंताजनक है, क्योंकि यही तीन क्षेत्र किसी छात्र या व्यस्क के बौद्धिक विकास के मूल आधार हैं।

कल्पना कीजिए कि एक छात्र, जिसे परीक्षा में किसी मुद्दे पर निबंध लिखना है, वह बिना सोचे-समझे चैटजीपीटी से लिखवाता है। वह शब्दों को तो पढ़ता है, पर विचारों को नहीं आत्मसात करता। परिणामतः वह न केवल विषय की गहराई से वंचित रहता है, बल्कि उसकी भाषा की पकड़, तार्किक सोच और विश्लेषण की क्षमता भी कमज़ोर हो जाती है।

यह समस्या केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है। रोज़गार के क्षेत्र में भी कई लोग अब ग्राहक ईमेल, रिपोर्ट, प्रस्ताव आदि AI की मदद से तैयार कर रहे हैं। इससे जहां एक ओर समय की बचत होती है, वहीं दूसरी ओर रचनात्मक सोच और संप्रेषण की पारंपरिक दक्षताएं धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही हैं।

शिक्षा और कला का भविष्य

शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं होता, बल्कि सोचने, विश्लेषण करने और निष्कर्ष तक पहुंचने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना होता है। यह तभी संभव है जब छात्र विषय में रुचि लें, आत्म-चिंतन करें, प्रश्न पूछें और उत्तर खोजें।

जब छात्र AI के सहारे तैयार किए गए उत्तरों पर पूरी तरह निर्भर हो जाते हैं, तो यह शिक्षण की आत्मा को ही नष्ट करता है। यह वैसा ही है जैसे कोई संगीत विद्यार्थी बिना ख़ुद रियाज़ किए सिर्फ़ ऑटो-ट्यून पर निर्भर हो जाए, या चित्रकार केवल डिजिटल टूल्स से चित्र बनाना सीख कर ब्रश और रंग की अनुभूति को छोड़ दे।

कला और साहित्य, जहां भावनात्मक गहराई और जीवनानुभवों की छाप प्रमुख होती है, वहां AI केवल प्रारंभिक सहायक बन सकता है, लेकिन यदि लेखक, कवि या कलाकार मशीन की भाषा पर निर्भर होने लगे, तो रचना का 'मनुष्यत्व' समाप्त हो जाता है।

जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग जैसी तकनीकें हमारी ज़िंदगी में प्रवेश कर रही हैं, हमारी मूलभूत क्षमताओं—विशेष रूप से सोचने, समझने और रचनात्मक रूप से सृजन करने की प्रकृति बदलती जा रही है। आज शिक्षा, रोज़गार और रचनात्मक लेखन से लेकर तकनीकी समाधान तक हर क्षेत्र में यह व्यापक रूप से प्रयुक्त हो रहा है।

संतुलित दृष्टिकोण ज़रूरी

हर तकनीक की तरह चैटजीपीटी भी एक औज़ार है। यह मस्तिष्क का विकल्प नहीं है, बल्कि एक विस्तारक हो सकता है, यदि इसे विवेकपूर्ण ढंग से प्रयोग किया जाए।

छात्रों और युवाओं को यह समझना चाहिए कि–

- चैटजीपीटी प्रेरणा देने वाला हो सकता है, निर्णायक नहीं।
- इसका उपयोग प्रारंभिक मसौदे (draft) के लिए करें, लेकिन अंतिम विचार और भाषा स्वयं दें।
- कठिन सवालों को हल करने में इसकी सहायता लें, लेकिन उत्तर को समझें, दोहराएं और आत्मसात करें।
- जानकारी मिलने के बाद स्रोतों को जांचें—क्या वे प्रमाणिक हैं? क्या विचार तार्किक हैं?
- विचार करने की आदत बनाए रखें—कठिनाई के बिना सहज समाधान, विकास नहीं लाते।

शिक्षकों और अभिभावकों को भी चाहिए कि वे AI के उपयोग पर नज़र रखें, पर छात्रों की जिज्ञासा को भी प्रोत्साहित करें।

मानव मस्तिष्क एक पेशी (muscle) की तरह होता है—जितना

अभ्यास करेंगे, उतना सशक्त होगा। इसके लिए ज़रूरी है कि–

• प्रतिदिन कुछ समय बिना किसी डिजिटल सहायता के लेखन या गणना करें।

• पुस्तकों से पढ़ें, सारांश बनाएं और स्वयं प्रश्न तैयार करें।

• मित्रों से विषय पर चर्चा करें—विचारों का आदान-प्रदान रचनात्मकता को बढ़ाता है।

AI से प्राप्त हर उत्तर को अंतिम सत्य मानने के बजाय, प्रश्न पूछना सीखें:

• यह उत्तर किस आधार पर दिया गया है?

• क्या इससे भिन्न विचार भी संभव हैं?

• क्या यह जानकारी किसी एजेंडे का हिस्सा तो नहीं?

हम एक ऐसे युग में प्रवेश कर चुके हैं जहां ज्ञान की गति तेज़ है, पर गहराई कम होती जा रही है। विचारों की बहुलता है, पर आत्म-चिंतन की कमी है । चैटजीपीटी जैसी तकनीकों का विवेकहीन उपयोग इस प्रवृत्ति को और प्रबल बना सकता है।

किन्तु यदि हम जागरूक और संतुलित दृष्टिकोण अपनाएं, तो यही तकनीक हमारी सोच का विस्तार भी बन सकती है। आवश्यकता केवल इतनी है कि हम तकनीक के पीछे न चलें, बल्कि तकनीक को दिशा देने वाला मस्तिष्क बनाए रखें।

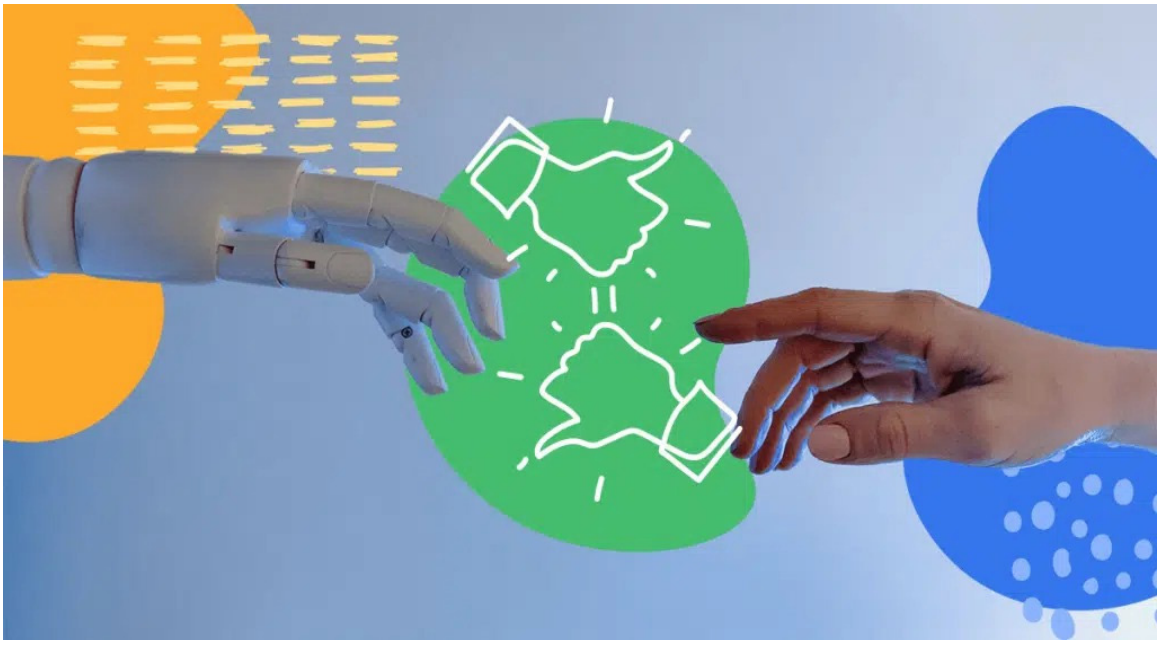
AI और चैटजीपीटी को बंद करना समाधान नहीं है, बल्कि उसका विवेकपूर्ण प्रयोग ही स्थायी समाधान है। हमें छात्रों, लेखकों, कर्मचारियों और नागरिकों को यह सिखाना होगा कि–

• सोचने की स्वतंत्रता सबसे बड़ी शक्ति है,

• रचनात्मकता की जड़ें अभ्यास में होती हैं,

• और मस्तिष्क की सक्रियता ही किसी भी तकनीक की सर्वोत्तम सार्थकता है।

इसलिए सोचें, समझें और फिर तकनीक को साथ लेकर चलें। इसका प्रयोग इस प्रकार से करें कि यह हमारी सोच, निर्णय और कार्य में केवल मददगार बने, दिशा दे, लेकिन निर्णय का अधिकार हमारे पास रहे—Not as a master, but as a mindful companion. ■■



• सूचना मिलने के बाद "क्यों" और "कैसे" के प्रश्न स्वयं से पूछें।

• लेखन में AI के बजाय अपनी भाषा, शैली और समझ का उपयोग करें।

AI द्वारा दी गई जानकारी हमेशा सही या निष्पक्ष नहीं होती। यह पूर्वग्रह (bias) रख सकती है, अधूरी हो सकती है, या संदर्भ से बाहर हो सकती है। इसलिए, विद्यार्थी और नागरिक दोनों को तार्किक दृष्टिकोण (critical thinking) अपनाना चाहिए।

विश्वास और प्रयास का मेल

प्रकाश स्तंभ



अबरार हसन

किसी भी समाज की जागरूकता और उसकी ऐतिहासिक गति का निर्धारण इस बात से होता है कि वह संघर्ष को किस रूप में स्वीकार करता है—महज़ एक प्रतिक्रिया के रूप में, या एक रचनात्मक जीवन-दृष्टि के रूप में। आज का दौर, जहां अन्याय, असमानता और नैतिक विचलन सामान्य होते जा रहे हैं, वहां यह प्रश्न और भी प्रासंगिक हो गया है कि क्या हम एक प्रयत्नशील, जागरूक और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं या फिर ग़फ़लत की चादर ओढ़कर सामाजिक और आत्मिक मृत्यु की ओर बढ़ना चाहते हैं।

"जिद्दोजहद" या संघर्ष केवल शारीरिक या राजनीतिक विरोध नहीं, बल्कि एक आत्मिक, नैतिक और बौद्धिक प्रयास है। 'जिद्दोजहद' वह ऊर्जा है जो व्यक्ति को निष्क्रियता से निकालकर परिवर्तन के मार्ग पर ले जाती है, जबकि 'ग़फ़लत' एक ऐसी धीमी मौत है जो आत्मा को माद्दा (भौतिकता) में लपेट कर उसकी चेतना को समाप्त कर देती है।

हर परिवर्तन की शुरुआत आत्म-संघर्ष से होती है। आज जब हमारी क़ौम, समाज और मूल्य प्रणाली गहरे संकट से जूझ रही है, तो जागने का, समझने का, उठ खड़े होने का और 'जिद्दोजहद' का आह्वान आवश्यक है।

'जिद्दोजहद' अरबी मूल का शब्द है, जिसका अर्थ केवल भौतिक संघर्ष नहीं, बल्कि निरंतर आत्मिक, नैतिक और सामाजिक प्रयास भी है। यह

"जिद्दोजहद" या संघर्ष केवल शारीरिक या राजनीतिक विरोध नहीं, बल्कि एक आत्मिक, नैतिक और बौद्धिक प्रयास है। 'जिद्दोजहद' वह ऊर्जा है जो व्यक्ति को निष्क्रियता से निकालकर परिवर्तन के मार्ग पर ले जाती है।

वह ऊर्जा है जो व्यक्ति को निष्क्रियता से बाहर लाकर उद्देश्य की ओर ले जाती है। यह संघर्ष केवल दुश्मनों से युद्ध की बात नहीं करता, बल्कि अपने भीतर के आलस्य, भय, अन्याय, शोषण और नास्तिकता से टकराने की हिम्मत भी देता है।

इस्लामिक शिक्षाओं में "जिहाद" का सबसे ऊंचा रूप "नफ़्स के ख़िलाफ़ जिद्दोजहद" को माना गया है—यानी अपने लोभ, मोह, भय और ग़फ़लत पर विजय पाना। यह आत्मा की शुद्धि और नैतिकता की सर्वोच्चता का संघर्ष है।

ग़फ़लत : एक धीमी मौत

'ग़फ़लत' अर्थात् बेपरवाही या लापरवाही में डूबा हुआ जीवन। यह कोई तत्काल मृत्यु नहीं है, बल्कि धीरे-धीरे भीतर से मर जाने की प्रक्रिया है। ग़फ़लत वह ज़हर है जो न सोचने देता है, न पूछने, न उठने। जब कोई व्यक्ति, समाज या क़ौम ग़फ़लत में जीने लगती है, तो वह अत्याचार को सामान्य समझने लगती है। फिर अन्याय उसे चुभता नहीं, भ्रष्टाचार उसे ग़ुस्सा नहीं दिलाता, और दीन (धार्मिक चेतना) एक औपचारिकता बनकर रह जाता है।

जिद्दोजहद का ऐतिहासिक मूल्य

इतिहास गवाह है कि जिस क़ौम ने जिद्दोजहद की भावना को जिया, उसने अपने समय में परिवर्तन किए। चाहे वह पैग़म्बर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की आग से टकराने की बात हो, पैग़म्बर मूसा (अलैहिस्सलाम) का फ़िरऔन से भिड़ना हो, या पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) का मक्का के ज़ालिम तंत्र के सामने सत्य की आवाज़ बुलंद

करना—हर जगह यह जिद्दोजहद ही थी जिसने रौशनी को फैलाया और अंधकार को पीछे धकेला।

भारत में भी फ़क़ीरों, संतों और सूफ़ियों ने इसी जिद्दोजहद के ज़रिए सामाजिक अन्याय, जातिवाद और धार्मिक भेदभाव के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई। गांधी, रैदास, नानक और अंबेडकर जैसे नाम इसी रूहानी संघर्ष के प्रतीक हैं। जो क़ौम नींद में सोती रहेगी वह सामाजिक और राजनीतिक रूप से मृतप्राय हो जाएगी। सत्ता की रणनीति यही है कि वह हमें 'बातों' और 'भावनाओं' में उलझाए रखे ताकि हम अपने अस्ल मुद्दों पर संघर्ष करना भूल जाएं।

जिद्दोजहद की आधुनिक व्याख्या

आज की जिद्दोजहद बंदूक़ या तलवार से नहीं, बल्कि क़लम, किताब और तालीम से लड़ी जानी है। यह समय का सबसे बड़ा मोर्चा है। हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों को उच्च शिक्षा, वैज्ञानिक सोच, आलोचनात्मक विवेक और दीन की गहराई—इन चारों का संतुलन देकर तैयार करें।

वह क़ौम जो न अपने इतिहास को जानती है, न अपने वर्तमान की समीक्षा करती है, और न अपने भविष्य की योजना बनाती है—वह अपने अस्तित्व की अंतिम सांसें गिन रही होती है।

आत्म-संघर्ष से सामाजिक पुनरुत्थान

हर जिद्दोजहद पहले आत्मा से शुरू होती है। अगर आप में हिम्मत है कि आप अपने ग़लत इरादों, बेवजह की उम्मीदों और आलस्य से लड़ सकें, तो आप समाज में भी बदलाव ला सकते हैं। जिद्दोजहद का पहला मैदान ख़ुद का दिल है। अगर यह जीत गए, तो फिर सत्ता, समाज और व्यवस्था का सामना करना आसान हो जाएगा।

क़ुरआन का संदेश

क़ुरआन कहता है—"निश्चित ही अल्लाह किसी क़ौम की दशा नहीं बदलता जब तक वे स्वयं अपने को न बदलें।" (क़ुरआन, 13:11)

हर जद्दोजहद पहले आत्मा से शुरू होती है। अगर आप में हिम्मत है कि आप अपने ग़लत इरादों, बेवजह की उम्मीदों और आलस्य से लड़ सकें, तो आप समाज में भी बदलाव ला सकते हैं। जद्दोजहद का पहला मैदान खुद का दिल है। अगर यह जीत गए, तो फिर सत्ता, समाज और व्यवस्था का सामना करना आसान हो जाएगा।

यह आयत हमें हमारी भूमिका की याद दिलाती है। यह बताती है कि अल्लाह की मदद तब आती है जब हम ख़ुद उठ खड़े हों। यह 'तवक्कुल' और 'अमल' का संगम है—विश्वास और प्रयास का मेल।

अब चुनाव हमारे हाथ में है

"जिद्दोजहद की ज़िंदगी या ग़फ़लत की मौत?" यह वाक्य आज भी उतना ही सत्य है जितना सदियों पहले था। आपको चुनना है कि आप एक ऐसी ज़िंदगी जीना चाहते हैं जो प्रयत्नशील, उद्देश्यपूर्ण और आत्म-सजग हो, या एक ऐसी मौत मरना चाहते हैं जो धीरे-धीरे आपको गुमनामी, अपमान और निर्बलता की गर्त में धकेल दे।

आज हर इंसाफ़पसंद को, हर उत्पीड़ित वर्ग को यह तय करना होगा कि क्या वे अन्याय, शोषण और ग़फ़लत को नियति मानकर बैठ जाएंगे, या जिद्दोजहद का झंडा उठाएंगे—अपनी रूह, समाज और क़ौम की हिफ़ाज़त के लिए। याद रहे कि यदि हम खड़े नहीं हुए, तो हमारी अगली पीढ़ी रेंगने के लिए अभिशप्त होगी।

जब कोई क़ौम जिद्दोजहद से मुंह मोड़ लेती है, तो वह केवल हारती नहीं—वह धीरे-धीरे अपना वजूद खो देती है। उसकी पहचान, आत्मा और स्वाभिमान मिट्टी में मिल जाते हैं। आज जब हर ओर से भ्रम, भय और भावनात्मक छल की आंधी चल रही है, तब सबसे बड़ा जिहाद—यानी सबसे बड़ी जिद्दोजहद—अपनी होशमंदी, बौद्धिकता और आत्म-सचेतना को ज़िंदा रखना है। यह संघर्ष महज़ किसी दुश्मन से नहीं, बल्कि उस ग़फ़लत से है जो हमें भीतर ही भीतर खोखला कर रही है।

जिद्दोजहद की यह पुकार हमें याद दिलाती है कि इस जीवन का उद्देश्य केवल जीना नहीं, बल्कि हक़ के लिए खड़ा होना है—वह हक़ जो रूह को रौशनी देता है, जो अन्याय से टकराता है, जो समाज को ज़मीर देता है।

आज चुनाव हमारे हाथ में है, या तो हम ग़फ़लत, चुप्पी और आत्म-समर्पण के दलदल में उतर जाएं या सच्चाई, मेहनत और उद्देश्य की राह पर चलें और एक जीवित और जागरूक समाज का निर्माण करें। ■■

नज़रअंदाज़ न करें मानसूनी बीमारियों को



यद्यपि मानसून चिलचिलाती गर्मी से राहत देता है, पर यह अपने साथ अनेक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियां भी लाता है। यह मौसम जहां धरती को हरियाली से भर देता है, वहीं बीमारियों का मौन वाहक भी बन जाता है। नमी, जलजमाव और वातावरण में बदलाव बीमारियों के लिए अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न करते हैं। गंदगी और रुके हुए पानी में पनपते मच्छर, जीवाणु और विषाणु अनेक प्रकार की संक्रामक बीमारियों को जन्म देते हैं। ऐसे में ज़रूरी हो जाता है कि हम सावधान रहें और छोटे-छोटे एहतियातों से ख़ुद को और अपने परिवार को सुरक्षित रखें। मानसून में स्वास्थ्य की देखभाल एक सजग नागरिक की प्राथमिकता होनी चाहिए।

सेहत



संपादन प्रभाग

1. सर्दी और फ्लू

नमी वाला मौसम, जिसके कारण एयर कंडीशनिंग की आवश्यकता होती है, हमें तापमान में उतार-चढ़ाव के संपर्क में लाता है, इससे सामान्य सर्दी और फ्लू होता है। इसके लक्षण खांसी, बहती या भरी हुई नाक, साइनसाइटिस और शरीर में दर्द से लेकर अलग-अलग होते हैं। इससे श्वसन संक्रमण होता है।

रोकथाम

अचानक तापमान परिवर्तन से बचें। अत्यधिक पौष्टिक भोजन का सेवन करें। प्राकृतिक जड़ी-बूटियों और फलों से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं।

2. हेपेटाइटिस-ए

हेपेटाइटिस-ए एक वायरल संक्रमण है जो यकृत को प्रभावित करता है, इसके लक्षणों में बुख़ार, कमज़ोरी, उल्टी और पीलिया शामिल हैं।

रोकथाम

बासी और अस्वास्थ्यकर तरीक़े से तैयार किए गए जूस या दूषित भोजन और पेय या बिना फ़िल्टर किए गए पानी से बचें। पीने के पानी को हमेशा उबालकर या फ़िल्टर करके पिएं।

3. डेंगू बुख़ार

यह एडीज मच्छर द्वारा फैलता है, यह एक वायरल बीमारी है, इसके लक्षणों में तेज़ बुख़ार, गंभीर सिरदर्द , जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द और दाने शामिल हैं। गंभीर मामलों में, यह डेंगू रक्तस्रावी बुख़ार या डेंगू शॉक सिंड्रोम का कारण बन सकता है। मच्छर साफ़ स्थिर पानी में पनपता है और आमतौर पर दिन के समय काटता है।

रोकथाम

• **स्थिर पानी को हटाएं :** फूलों के गमलों या अन्य कंटेनरों जैसे किसी भी संभावित प्रजनन स्थल को ख़ाली करें, साफ़ करें या ढक दें। सभी कूलरों और पानी के भंडारण कंटेनरों का पानी प्रतिदिन बदलें।

• घर के अंदर मच्छर भगाने वाली वेपोराइज़र मशीन या बग़ीचों के लिए सिट्रोनेला अगरबत्ती का इस्तेमाल करें। खुली त्वचा पर मच्छर भगाने वाले लोशन या क्रीम का इस्तेमाल करें।

• **सुरक्षात्मक कपड़े पहनें :** मच्छरों के काटने से बचने के लिए लंबी आस्तीन वाली शर्ट और पैंट पहनें या मच्छर भगाने वाले पैच स्टिकर लगाएं।

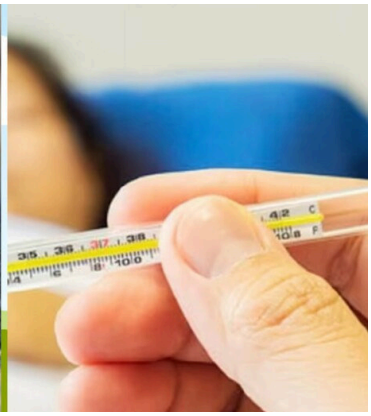
• **खिड़कियों पर जाली लगाएं:** खिड़कियों और दरवाज़ों पर जाली लगाएं।

• **मच्छरदानी का प्रयोग करें:** यदि आप ऐसे क्षेत्र में रहते हैं जहां डेंगू बुख़ार का प्रकोप अधिक है तो मच्छरदानी के नीचे सोएं।

4. मलेरिया

मलेरिया प्लास्मोडियम परजीवी के कारण होता है और संक्रमित मादा एनोफिलीज मच्छरों द्वारा फैलता है। इसके कई प्रकार हैं; कुछ गंभीर और जानलेवा होते हैं। इसके लक्षणों में तेज़ बुख़ार, ठंड लगना, सिरदर्द और शरीर





में दर्द शामिल हैं।

रोकथाम

• **मच्छरों के काटने से बचें:** मच्छरों से बचने के लिए मच्छर भगाने वाली दवाओं का प्रयोग करें, सुरक्षात्मक कपड़े पहनें तथा मच्छरदानी के नीचे सोएं।

• मच्छरों के प्रजनन स्थलों को कम करने के लिए स्थिर पानी को साफ़ करें और स्वच्छ वातावरण बनाए रखें।

• यदि आप मलेरिया प्रभावित क्षेत्र की यात्रा कर रहे हैं, तो रोगनिरोधी मलेरिया-रोधी दवा के लिए डॉक्टर से परामर्श लें।

5. चिकनगुनिया

चिकनगुनिया एक वायरल बीमारी है जो एडीज मच्छर से फैलती है। इसके लक्षणों में तेज़ बुख़ार, जोड़ों में तेज़ दर्द, मांसपेशियों में दर्द, सिरदर्द, थकान और दाने शामिल हैं।

रोकथाम और संरक्षण

मच्छर नियंत्रण उपायों का पालन करें : स्थिर पानी को हटा दें, मच्छर भगाने वाली दवाओं का उपयोग करें, सुरक्षात्मक कपड़े पहनें और खिड़कियों पर जाली लगाएं।

6. लेप्टोस्पायरोसिस

लेप्टोस्पायरोसिस एक जीवाणु संक्रमण है जो लेप्टोस्पाइरा बैक्टीरिया के कारण होता है। यह जानवरों के मूत्र में पाया जाता है, ख़ासकर चूहों में। भारी बारिश के दौरान जब चूहों से भरे नाले और गटर बारिश के पानी से भर जाते हैं, तो यह पानी और मिट्टी को दूषित कर देता है। संक्रमित पानी से गुज़रते समय, लेप्टोस्पाइरा बैक्टीरिया छोटे-छोटे कट या घर्षण के माध्यम से आपके शरीर में प्रवेश कर सकता है।

इसके लक्षणों में तेज़ बुख़ार, सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, उल्टी और पीलिया शामिल हैं।

रोकथाम

• बाढ़ वाले इलाक़ों में चलने से बचें या रबर के जूते सहित सुरक्षात्मक कपड़े पहनें। बाढ़ के पानी या दूषित मिट्टी के संपर्क में आने के बाद साबुन और पानी से हाथ और पैर धोएं।

7. टाइफाइड बुख़ार

टाइफाइड बुख़ार साल्मोनेला टाइफी जीवाणु के कारण होने वाला एक जीवाणु संक्रमण है। यह स्कूल और कॉलेज के छात्रों में सबसे आम

बीमारी है। यह भोजन और पानी के दूषित होने से फैलता है। इसके लक्षणों में तेज़ बुख़ार, सिरदर्द, पेट दर्द और कमज़ोरी शामिल हैं।

रोकथाम

• खाने से पहले या खाना छूने से पहले हाथ अच्छी तरह से धोएं। खाना पकाने से पहले हमेशा सब्ज़ियों को साफ़ करें और धोएं। सुनिश्चित करें कि खाना ठीक से पकाया और संग्रहित किया गया हो। कच्ची सब्ज़ियों को अच्छी तरह से धोना चाहिए।

• सुनिश्चित करें कि भोजन स्वच्छतापूर्वक तैयार किया गया हो और संग्रहित किया गया हो, चाहे वह घर पर बनाया गया हो या बाहर से। पीने से पहले पानी को उबाल लें या बैक्टीरिया के संक्रमण को ख़त्म करने के लिए वॉटर प्यूरीफायर का इस्तेमाल करें।

• छात्रावासों में रहने वाले छात्र टीका लगवा सकते हैं।

8. हैजा

यह एक जलजनित बीमारी है जो विब्रियो कोलेरा नामक बैक्टीरिया के कारण होती है। यह दूषित पानी के माध्यम से फैलती है।

लक्षण

अत्यधिक ढीले मल के कारण महत्वपूर्ण निर्जलीकरण होता है। मरीज़ों को IV द्रव, एंटीबायोटिक्स और सहायक दवा के लिए अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता होती है।

रोकथाम

उबला हुआ, साफ़, शुद्ध या उपचारित पानी पियें।

9. पेचिश और दस्त

अमीबिक पेचिश या बैक्टीरिया से होने वाले दस्त के कारण पेट में दर्द, दस्त और मतली हो सकती है। उचित दवा और पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स के साथ पर्याप्त पुनर्जलीकरण तरल पदार्थ की कमी को पूरा करने में मदद करेगा। घर पर पका हुआ, सुरक्षित भोजन जो पचाने में आसान हो, आपके पेट को तेज़ी से ठीक करने में मदद करेगा।

10. त्वचा की एलर्जी और संक्रमण

अगर आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर है या आप मधुमेह से पीड़ित हैं, तो आपको मानसून के दौरान त्वचा संक्रमण होने का ज़्यादा ख़तरा है। उच्च आर्द्रता के कारण त्वचा की एलर्जी , चकत्ते और फंगस, यीस्ट या बैक्टीरिया से संक्रमण होना आम बात है। हमेशा अपनी त्वचा को सूखा रखने और ढीले कपड़े पहनने की सलाह दी जाती है।

अचानक तापमान परिवर्तन से बचें। अत्यधिक पौष्टिक भोजन का सेवन करें। प्राकृतिक जड़ी-बूटियों और फलों से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं।

रोकथाम

नहाने के बाद पूरी तरह से सुखा लें; ज़रूरत पड़ने पर टैल्क लगाएं। अगर कपड़े गंदे हों तो उन्हें बार-बार बदलें। अगर ज़रूरत हो तो एंटीफंगल क्रीम या डस्टिंग पाउडर लगाएं।

सामान्य सावधानियां

• बारिश में भीगने से बचने के लिए हमेशा छाता या रेनकोट साथ रखें।

• यदि आप भीग जाएं तो तुरंत अपने आपको सुखा लें और गर्म रहें।

• हाइड्रेटेड रहें। पर्याप्त मात्रा में तरल पदार्थ लें, हालांकि बरसात के मौसम में आपकी प्यास कम हो सकती है।

• बाहर निकलते समय मच्छर भगाने वाली क्रीम का इस्तेमाल करें। घर पर मच्छरदानी या मच्छर भगाने वाली क्रीम का इस्तेमाल करें।

• अपने आस-पास का वातावरण साफ़ रखें—स्थिर पानी को ख़ाली कर दें या ढक कर रखें। निवारण हमेशा इलाज से बेहतर है!

• जल जनित संक्रमण से बचने के लिए उबला हुआ और फ़िल्टर किया हुआ पानी पिएं।

• घर का बना पौष्टिक खाना खाएं। बाहर का खाना खाने से खाद्य जनित बीमारियां हो सकती हैं।

• स्वच्छता संबंधी आदतों का पालन करें। भोजन से पहले और शौचालय का उपयोग करने के बाद नियमित रूप से अपने हाथ धोएं।

• टीका लगवाएं और संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से बचें। अपने डॉक्टर से सलाह लेने के बाद एहतियातन फ्लू शॉट और कोविड वैक्सीन लें।

• वायु जनित संक्रमण के प्रसार से बचने के लिए हमेशा मास्क पहनें और सामाजिक दूरी बनाए रखें।

• विटामिन की ख़ुराक लें, विशेषकर जब आपके शरीर में विटामिन बी-12 और डी-3 की कमी हो। ■■

डाटा कौशल सीखने वालों का बजेगा डंका



21 वीं सदी की शुरुआत में जब सूचना क्रांति की लहर दौड़ी, तब किसी ने नहीं सोचा था कि "डेटा" (Data) एक दिन इतना महत्त्वपूर्ण हो जाएगा। आज की दुनिया में जो इसके महत्व को समझे, वही आगे बढ़े। चाहे सरकारें हों, कंपनियां, स्टार्टअप्स या शिक्षा संस्थान—सभी की रीढ़ बन चुका है डेटा। ऐसे में "डाटा कौशल" (Data Skills) रखने वाले युवाओं के लिए यह युग सुनहरा अवसर लेकर आया है।

यह लेख न केवल डाटा कौशल की उपयोगिता को समझाता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि कैसे आज का युवा इस कौशल को सीखकर न केवल बेहतर नौकरी पा सकता है, बल्कि डिजिटल युग का नेतृत्व कर सकता है।

हर क्षेत्र में इसकी दस्तक

डाटा अब सिर्फ़ टेक्नोलॉजी से जुड़ा शब्द नहीं है। यह स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, जलवायु, राजनीति, न्यायपालिका, बिजनेस, मार्केटिंग — हर क्षेत्र में अपनी भूमिका निभा रहा है। उदाहरण के लिए :

करियर



संपादन प्रभाग

• **स्वास्थ्य :** कोविड-19 काल में डेटा एनालिसिस ने यह समझने में मदद की कि किस क्षेत्र में वायरस का प्रसार तेज़ है।

• **कृषि :** स्मार्ट फार्मिंग में सेंसर डेटा का विश्लेषण कर किसानों को फ़सल की स्थिति की जानकारी दी जाती है।

• **राजनीति :** चुनावी रुझान जानने के लिए सर्वे और डेटा एनालिसिस प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

इसलिए डेटा अब विश्लेषण का नहीं, निर्णय लेने का आधार बन चुका है।

डाटा कौशल का अर्थ क्या है?

डाटा कौशल यानी "Data Skills" का मतलब है—डेटा को इकट्ठा करना, व्यवस्थित करना, उसका विश्लेषण (Analysis) करना और उससे अर्थपूर्ण निष्कर्ष निकालना।

प्रमुख डाटा कौशलों में शामिल हैं :

• डेटा एनालिटिक्स (Data Analytics)

• डेटा साइंस (Data Science)

• आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI)



• मशीन लर्निंग (Machine Learning)

• SQL और डाटाबेस प्रबंधन

• Python, R जैसे भाषाओं में प्रोग्रामिंग

• डेटा विज़ुअलाइज़ेशन (Power BI, Tableau आदि)

• बिग डेटा और क्लाउड कंप्यूटिंग

इन सभी कौशलों की आज उच्च मांग है और आने वाले वर्षों में यह और भी बढ़ने वाली है।

क्यों डाटा कौशल वाले उम्मीदवारों की मांग बढ़ रही है?

डिजिटल युग में हर सेकंड ट्रिलियन बाइट्स डेटा बन रहा है। कंपनियां चाहती हैं कि इस डेटा को समझकर निर्णय लिए जाएं। उदाहरण के लिए :

• अमेज़न, Netflix, Flipkart जैसी कंपनियां ग्राहक का व्यवहार डेटा से समझकर उसकी पसंद की वस्तुएं पहले पेज पर दिखाती हैं।

• बैंक, बीमा कंपनियां धोखाधड़ी पहचानने के लिए डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करती हैं।

• सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता आंकने के लिए भी डाटा विज्ञान अनिवार्य होता जा रहा है।

इसलिए डेटा स्किल वाले पेशेवर अब हर क्षेत्र की ज़रूरत बन चुके हैं।

करियर के अवसर : कौन-कौन से पद उपलब्ध हैं?

डेटा कौशल के आधार पर निम्नलिखित उच्च मांग वाले करियर विकल्प मौजूद हैं :

1. डेटा एनालिस्ट : डेटा का विश्लेषण कर व्यावसायिक निर्णयों में सहायता करता है।

2. डेटा साइंटिस्ट : जटिल समस्याओं का समाधान डेटा की सहायता से करता है।

3. बिजनेस इंटेलिजेंस एनालिस्ट : कंपनियों की व्यापारिक रणनीति तय करने में मदद करता है।

4. मशीन लर्निंग इंजीनियर : डेटा आधारित एल्गोरिद्म और मॉडल विकसित करता है।

5. AI रिसर्चर : कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी नई खोजों में शामिल होता है।

6. डाटा इंजीनियर : डेटा संरचना और पाईपलाइन का विकास करता है।

7. डेटा विज़ुअलाइज़ेशन एक्सपर्ट : जटिल डेटा को सरल, चित्रात्मक रूप में प्रस्तुत करता है।

इसके अलावा फ्रीलांसिंग, डेटा आधारित स्टार्टअप और स्वयं के प्रोडक्ट डेवलपमेंट के भी कई अवसर हैं।

कौन कर सकता है यह कौशल अर्जित?

डाटा कौशल सीखना किसी एक पृष्ठभूमि तक सीमित नहीं है। यह हर उस व्यक्ति के लिए है जो तार्किक सोच, गणित, सांख्यिकी या प्रोग्रामिंग में थोड़ी भी रुचि रखता हो। विशेष रूप से निम्नलिखित पृष्ठभूमि वाले छात्र इसे आसानी से सीख सकते हैं :

• इंजीनियरिंग छात्र

• वाणिज्य या गणित के छात्र

• अर्थशास्त्र या सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थी

• कंप्यूटर साइंस या IT के पेशेवर

• यहां तक कि कला वर्ग के छात्र भी इच्छाशक्ति और अभ्यास से इसे सीख सकते हैं।

भारत में डाटा स्किल के लिए शैक्षणिक और प्रशिक्षण अवसर

भारत में कई संस्थान और

प्लेटफ़ॉर्म डाटा कौशल सिखाने के लिए प्रशिक्षण दे रहे हैं। जैसे :

• IITs और IIITs में डेटा साइंस में विशेष कोर्स

• NASSCOM और NSDC जैसे संगठन स्किल-डेवलपमेंट के लिए ट्रेनिंग कार्यक्रम चलाते हैं।

• ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म :

—Coursera, edX, Udemy, Great Learning, upGrad

—Google, Microsoft और IBM द्वारा सर्टिफिकेट कोर्स

—AICTE और SWAYAM जैसे सरकारी पोर्टल्स पर निःशुल्क प्रशिक्षण

इन कोर्सों के साथ परियोजनाएं (Projects), इंटर्नशिप और लाइव असाइनमेंट्स से व्यावहारिक अनुभव भी मिलता है।

आमदनी

वेतन इस क्षेत्र की विशेषता है। एक प्रारंभिक डेटा एनालिस्ट भी ₹6-8 लाख प्रतिवर्ष कमा सकता है, जबकि अनुभवी डाटा साइंटिस्ट्स का वेतन ₹20-30 लाख सालाना या उससे अधिक भी होता है।

• Entry-level (0-2 वर्ष): ₹5-8 लाख/वर्ष

• Mid-level (3-5 वर्ष): ₹10-18 लाख/वर्ष

• Senior-level (5+वर्ष): ₹20 लाख+/वर्ष

इसके अलावा फ्रीलांसिंग और ग्लोबल क्लाइंट्स से कमाई की कोई सीमा नहीं।

भविष्य में डाटा कौशल की मांग कहां पहुंचेगी?

वर्ल्ड इकोनॉमिक फ़ोरम की रिपोर्ट (2023) के अनुसार :

• अगले 5 वर्षों में डाटा एनालिस्ट्स और साइंटिस्ट्स सबसे तेज़ी से बढ़ते 10 करियर में शामिल होंगे।

• AI और मशीन लर्निंग का उपयोग हर क्षेत्र में होगा—क़ानून, मीडिया, निर्माण, रिटेल, स्वास्थ्य, सुरक्षा और कृषि में भी।

• भारत में 2030 तक 1 करोड़ से अधिक डेटा आधारित जॉब्स की संभावना है।

इसलिए यह कहना ग़लत नहीं होगा कि जो युवा आज डाटा कौशल में निपुण हो रहे हैं, उनका भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है।

चुनौतियां और समाधान

हालांकि डाटा स्किल्स में करियर अत्यंत आकर्षक है, लेकिन कुछ चुनौतियां हैं :

• तकनीकी भाषा की जटिलता

• निरंतर अद्यतन रहने की आवश्यकता

• अभ्यास और परियोजना का दबाव

परंतु यदि एक नियोजित रणनीति अपनाई जाए तो ये सब पार की जा सकती हैं :

• रोज़ एक घंटा अभ्यास

• छोटे-छोटे प्रोजेक्ट्स से शुरुआत

• ऑनलाइन कम्युनिटी से जुड़ना

• मॉक इंटरव्यू और पोर्टफोलियो बनाना

आज के दौर में यदि किसी को आत्म-निर्भर बनना है, ग्लोबल अवसरों तक पहुंचना है, या ख़ुद का बिज़नेस तक शुरू करना है—तो डाटा कौशल उसके लिए जादू की चाबी बन सकता है। भारत के युवाओं के पास यह सुनहरा अवसर है कि वे इस तकनीकी क्रांति में भागीदार बनें, और सिर्फ़ नौकरी पाने वाले नहीं, समस्या सुलझाने वाले और भविष्य गढ़ने वाले बनें। ■■

कान्ति साप्ताहिक और कान्ति मासिक के सभी पाठक

कृपया ध्यान दें !

अपना पूरा नाम : .....

पता : .....

पोस्ट ऑफिस : .....

डिस्ट्रिक्ट : .....स्टेट : .....पिन : .....

कांटेक्ट नंबर : .....

नीचे दिए गए व्हाट्सऐप नम्बर पर भेजने की मेहरबानी करें।

धन्यवाद!

व्हाट्सऐप नंबर : 98187 99223

नोट : अपना कांटेक्ट नंबर लिखना न भूलें।

तमाशे में डूबा हुआ देश

मैं पहले कहानियां लिखा करता था। अब मैंने कहानियां लिखना छोड़ दिया है, क्योंकि कहानी लिखने से कोई बात नहीं बनती। झूठे-सच्चे पात्र गढ़ना, इधर-उधर की घटनाओं को समेटना, चटपटे संवाद लिखना, अपनी पढ़ी हुई किताबों की जानकारियों और अपने ज्ञान को कहानी में उलट देने से क्या होता है? मैं अपने दूसरे कहानीकार मित्रों को सलाह देता हूं कि वे कहानी-वहानी लिखने का काम छोड़ दें।

हमारे इस देश में जहां रोज़, हर पल, हर जगह कहानी से ज़्यादा निर्मम घटना घट रही हो वहां कहानी लिखना बेकार की बात है। अपने चारों तरफ़ निगाह उठाकर देखिए, आपको बिखरी पड़ी कहानियां देखकर अपने कहानीकार होने पर शर्म आएगी जो मुझे आ चुकी है और मैंने कहानियां लिखना बंद कर दिया है। लेकिन चूंकि लिखने की आदत पड़ चुकी है और लिखे बिना चैन भी नहीं आता इसलिए सोचा है मैं कहानियां न लिखकर 'वाक़िया' लिखा करूंगा। 'वाक़िया' उर्दू का शब्द है जिसका मतलब 'घटना' निकाला जा सकता है, लेकिन शायद बात पूरी बनेगी नहीं। 'वाक़िया' किसी ऐसी सच्ची घटना का विवरण कहा जा सकता है जो रोचक, नाटकीय और मनोरंजक हो। केवल घटना मात्र न हो। अगर मैं आपको सिर्फ़ घटनाएं सुनाने लगूंगा तो उसमें कुछ मज़ा न आएगा और आप मुझे बेवकूफ़ और मूर्ख समझ कर पढ़ना बंद कर देंगे। हो सकता है यह काम आप 'वाक़िया' सुनने के बाद भी करें, लेकिन मुझे अब भी उम्मीद है कि और कुछ करें या न करें 'वाक़िये' को सुन लेंगे। यह सच्चा वाक़िया है। बहरहाल सच्चाई तो वैसे भी सामने आ जाएगी। मेरे कहने से न सच झूठ हो सकता है और न झूठ सच हो जाएगा।

कहानी



असग़र वजाहत

हमारे ही देश के एक शहर में एक आदमी ग़ायब हो गया और दो कुत्ते के पिल्ले ग़ायब हो गए। मैं शहर का नाम नहीं बताऊंगा क्योंकि वाक़ियानिगार होने का यह मतलब नहीं है कि मैं लोगों का दिल दुखाऊं और अपना जीना हराम कर लूं। आप जानते ही हैं कि आज हमारे अहिंसक देश में हर तरह की हिंसा तरक़्क़ी पर है। पहले जो बात तू-तू मैं-मैं पर ख़त्म हो जाती वह अब हत्या का कारण बन जाती है। अब तो हत्यारों का सम्मान होता है। मैं जिस इलाक़े का रहने वाला हूं वहां जिसने जितनी हत्याएं की होती हैं उसका उतना सम्मान होता है। यही कारण है कि आज तक मेरे इलाक़े में मेरा सम्मान नहीं हो सका है क्योंकि मैं मक्खी मारने लायक़ भी नहीं हूं। सम्मान के मानदंड बदल गए हैं। इसे साबित करने के लिए मिसाल के लिए एक और वाक़िया भी है।

विधानसभा के चुनाव हो जाने के बाद कुछ नेतागण विधायक कैंटीन में बैठे बातचीत कर रहे थे और सब एक दूसरे से पूछ रहे थे कि आपने कहां से 'कंटेस्ट' किया था। ध्यान दें कि उनमें लोकतंत्र की भावना कितनी प्रबल थी। वे हारने या जीतने की बात नहीं कर रहे थे, केवल 'कंटेस्ट' करने की बात कर रहे थे। सबने बताया कि उन्होंने कहां-कहां से 'कंटेस्ट' किया है। एक आदमी से पूछा गया तो उसने कहा कि मैंने कहीं से 'कंटेस्ट' नहीं किया है। सब उसे देखकर हैरत में पड़ गए और कहा, जाइए जाकर काउंटर से छह चाय ले आइए।

अब बात लोकतंत्र की शुरू हो गई है तो एक वाक़िया और सुनते चलिए। विधानसभा के सामने किसी मुद्दे पर अनिश्चितकालीन अनशन जारी था। किसी सामाजिक सरोकार के मुद्दे पर किसी संस्था की ओर से प्रतिदिन एक आदमी अनशन पर बैठता था। मैं उधर से गुज़र रहा था। मैंने देखा कि अनशन पर बैठा आदमी तो पम्मी शर्मा है। मैं

उसे जानता हूं। वह उभरता हुआ नेता है और उसने अपने लिए सभी पार्टियों के दरवाज़े खुले रखे हैं। मैंने सोचा क्यों न पम्मी शर्मा से मिल लूं, ऐसी कठिन घड़ी में मेरे दो शब्द उसे ताक़त देंगे और फिर पम्मी से कोई काम पड़ा तो उसे याद रहेगा कि मैंने कठिन क्षणों में उससे कुछ अच्छे शब्द कहे थे। ग़रज़ यह कि मैं उसके पास गया। वह मुझे देखकर इतना ख़ुश हो गया जितना पहले न होता था। उसने बताया कि अनशन चालीस दिन से चल रहा है, मुझे अपने देश के विकसित लोकतंत्र पर गर्व हुआ। मैंने उसकी तारीफ़ की। उसने कहा–'यार, एक दिन के लिए तुम भी अनशन पर बैठ जाओ।'

मैं पहले तो चौंका, कुछ घबराया पर उसने कहा–'यार एक दिन की तो बात है, सुबह बैठोगे...शाम को ख़त्म हो जाएगा।'

मैं तैयार हो गया। सोचा ठीक है यार देश की लोकतांत्रिक ताक़तों को मज़बूत करने के लिए इतना तो करना चाहिए।

मैं अगले दिन सुबह ही सुबह वहां पहुंच गया। वहां सात आठ लोग चाय पी रहे थे। पम्मी शर्मा भी था। उसने मुझे गद्दी पर बैठाया। गले में गेंदे के फूलों की माला डाली। तिलक लगाया। मेरा अनशन जारी हो गया। मैं अपनी आत्मा को उत्फुल्ल महसूस करने लगा। थोड़ी देर में पम्मी मेरे पास आया और बोला–'किसी आदमी का इंतिज़ाम कर लेना।'

मैं हैरत से उसकी तरफ़ देखने लगा। वह समझ गया था कि मैं अभी तक नहीं समझ पाया हूं।

वह बोला–'जो अनशन से हटेगा...उसे टेंट वाले का, चाय वाले का, जूस वाले का, माली का 'पेमेंट' करना होगा।'

मेरे तो पैरों तले से ज़मीन निकल गई। मैंने गिड़गिड़ाते हुए कहा–'यार, उस संगठन के लोग कहां हैं जिन्होंने अनशन कराया है?' उसने कहा 'वे तो सब अपने-अपने घर चले गए हैं... तुम्हें कुछ नहीं करना बस एक आदमी का इंतिज़ाम कर लो...और सुनो... वह जाने से पहले बोला–'शाम को जूस वाले से जूस मंगा लेना, उसके यहां भी हिसाब चल रहा है।' पम्मी चला गया।

पम्मी ने अपनी टोपी मेरे सिर में फिट कर दी थी। मैं अब समझा कि यही है हमारा लोकतंत्र। अब मेरे साथ क्या हुआ यह मैं आपको नहीं बताऊंगा। बस यह समझ लीजिए कि अब मैं उस शहर नहीं जाता जहां अनशन पर बैठा था। क्योंकि टेंट वाला, चाय वाला, जूस वाला, माली सब मुझे तलाश कर रहे हैं। पम्मी से मैंने जब यह बताया था कि यार टेंट वाला, चाय वाला वग़ैरा मुझे खोज रहे हैं तो वह लापरवाही से बोला था–'खोजने दो, इस देश में यही हो रहा है। किसी न किसी को कोई न कोई खोज रहा है और किसी को कोई नहीं मिलता। तुम आराम से अपने लिखने-पढ़ने के काम में लग जाओ।'

मैं पम्मी की सलाह पर लिखने-पढ़ने के काम में लग गया हूं तब ही यह वाक़िया लिख रहा हूं।

माफ़ कीजिएगा मैंने बात शुरू की थी, एक शहर में एक आदमी और कुत्ते के पिल्लों के ग़ायब होने से लेकिन होते हुआते मैं देश के लोकतंत्र पर आ गया। दरअस्ल वाक़ियानिगारों की यही कमी होती है, वो बात शुरू तो कर देते हैं पर जानते नहीं कि बात कहां पहुंचेगी।

तो जनाब एक शहर में एक आदमी ग़ायब हो गया। उसकी पत्नी पता चलाने पुलिस के पास गई तो पुलिस ने कहा कि अभी तक कोई सिरकटी लाश नहीं मिली है, जैसे ही मिलेगी उसे बता दिया जाएगा। आदमी की पत्नी यह सुनकर डर गई। पुलिस ने कहा–'इस देश में मौत से डरोगी तो रह ही नहीं सकती। हम लोग मौत से नहीं डरते। आत्मा पर हमारा विश्वास है। मौतें तो इस देश में ऐसे आती हैं जैसे दूसरे देशों में बहार आती है। देखो दस पांच हज़ार औरतें तो जला दी जाती हैं, दस बीस हज़ार सड़कों पर कुचल कर मर जाते हैं, पता नहीं कितने दंगों में मार दिए जाते हैं, अकाल और बाढ़ की तो पूछो ही मत। नौकरी पाने के इच्छुक गोली खाकर मर जाते हैं। आतंकवादी हज़ारों को मार डालते हैं। तो देश क्या है बूचड़खाना है। अब काजल की कोठरी में रहकर काला होने से क्या डरना... शुक्र कर, तेरे आदमी की अभी लाश नहीं मिली है। हो सकता है अपहरण हो गया हो। फ़िरौती के लिए चिट्ठी या फ़ोन आए।'

औरत बोली–'दरोग़ा जी, हमारे पास क्या है जो कोई फ़िरौती के लिए अग़वा करेगा! दो टाइम खाने को नहीं जुटता।'

'तब तो अपहरण की ट्रेनिंग लेने वालों ने अभ्यास के तौर पर तेरे पति का अपहरण कर लिया होगा।'

'ये क्या होता है दरोग़ा जी।'

'देख, देश में बहुत से प्राइवेट स्कूल कॉलेज खुल गए हैं। अपहरण उद्योग के रिटायर्ड लोगों ने मिलकर 'अपहरण कॉलेज' खोल दिया है।

अच्छी फ़ीस लेते हैं...वे अपने छात्रों से कहते हैं कि नमूने के तौर पर किसी का अपहरण करके दिखाओ...वे लोग तेरे पति को छोड़ देंगे...बशर्ते कि...' पुलिस वाला बोलते-बोलते रुक गया।

'क्या बशर्ते कि दरोग़ा जी?' औरत ने पूछा।

'देख, यह भी हो सकता है कि अपहरण के प्रयोग के बाद उन्होंने तेरे पति को किसी दूसरे स्कूल में पहुंचा दिया हो।'

'क्या मतलब दरोग़ा जी?'

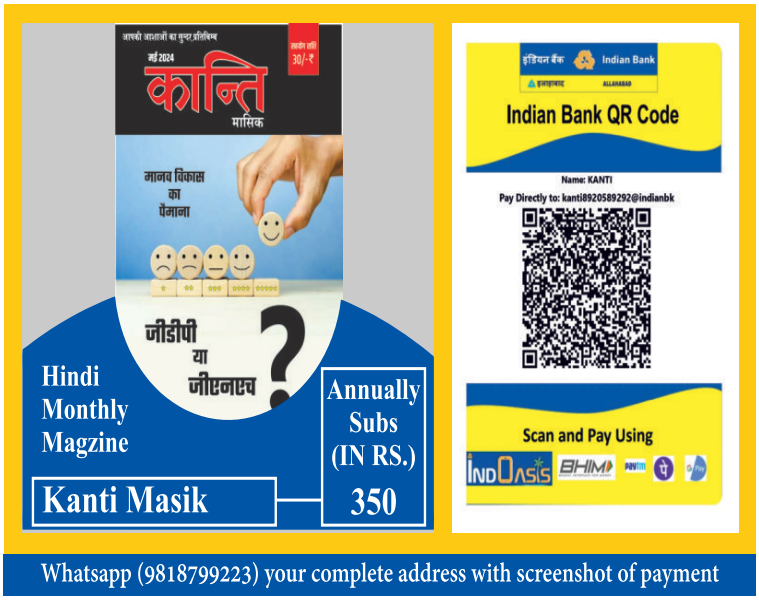
'देख हत्या करना, गोली मारना, गला काटना आदि-आदि सिखाने के भी तो स्कूल खुले हैं न?'

औरत रोने लगी। पुलिस बोली 'रो मत, हो सकता है मानव अंगों की तस्करी करने वाले किसी गिरोह ने पकड़ लिया हो। तेरा पति आ तो जाएगा पर ये समझ ले एक गुर्दा न होगा, या एक आंख न होगी, या मान ले...औरत रोने लगी। पुलिस ने कहा अब यहां थाने में न रो। यहां औरतें रोती हैं तो लोग जाने क्या-क्या समझते हैं। यहां से तो तुझे हंसते हुए जाना चाहिए।'

ये तो हुई आदमी के गुम हो जाने की बात। अब सुनें कुत्ते के पिल्लों की गुमशुदगी की दास्तान। दरअस्ल जो कुत्ते के पिल्ले खोए हैं उन्हें कुत्ते का पिल्ला कहने से भी डर रहा हूं। उसकी वजह है। आपको मालूम ही है कि कुछ साल पहले अमेरिका के राष्ट्रपति जब अपने दल-बल के साथ दिल्ली आए थे तो उनके साथ कुत्ते भी थे। उनके कुत्तों की प्रतिष्ठा, गरिमा, पद आदि के बारे में पता न होने के कारण एक भारतीय अधिकारी ने उन्हें कुत्ता कह दिया था। इसी बात पर उस अधिकारी के ख़िलाफ़ कुत्तों की मानहानि का दावा कर दिया गया था। अदालत में अमेरिकी सरकार के प्रतिनिधि ने कहा था, ये कुत्ते नहीं हैं इनके नाम और पद हैं। एक का नाम जैक जॉनी है और वह मेजर के पद पर है। दूसरे का नाम स्टीव शॉ है जो कैप्टन है। तीसरी कुतिया का नाम लिंडा जॉन्स है जिसने अभी-अभी ज्वाइन किया है और वह सेकेंड लेफ्टीनेंट है। अदालत ने इन अधिकारियों की मानहानि करने के सिलसिले में संबंधित अधिकारी को सज़ा सुनाई थी और यह आदेश दिया था कि भविष्य में इन कुत्तों को कुत्ता नहीं कहा जाएगा, यही वजह रही कि राजधानी के समाचार पत्र बड़े आदर और सम्मान से कुत्तों के नाम और पद छापते रहे। आप हम सब जानते हैं कि वैसे भी हमारे समाचार पत्र कुत्तों का कितना ध्यान रखते हैं, क्योंकि उससे लाभ-हानि जुड़ी होती है।

हुआ यह कि एक रात दो बजे मंत्री पुत्र के घर से थाने फ़ोन आया। थाने की नींद उड़ गई। मंत्री पुत्र ने डांटा और कहा कि तुम सोते रहते हो और चोर चोरी करते रहते हैं। तुम्हें पता है बेबी रतन और बेबी गौरी का अपहरण हो गया है। थाने में तुरंत कार्यवाही की बात उठी। पर सब जानते थे कि मंत्री पुत्र अभी तक अविवाहित है और उसने क़सम खाई हुई है कि जब तक स्वयं मंत्री नहीं बन जाएगा शादी नहीं करेगा। ऐसी हालत में बेबी रतन और बेबी गौरी कहां से आ गए। इस सवाल का जवाब कोई न दे सका तो हवालात में बंद एक अपराधी ने दिया। उसने बताया, बेबी रतन और बेबी गौरी मैडम लूसी और सर जॉनसन की औलादें हैं जिन्हें मंत्री पुत्र यू.एस. से ख़रीद कर लाए थे और अनजान तथा अनाड़ी इन्हें कुत्ते के पिल्ले कह उठे थे जिस पर उसी समय उनकी ज़बान खिंचवा ली गई थी।

रतन और गौरी के अपहरण की ख़बर जंगल की आग की तरह फैल गई। स्थानीय पत्रकारों के बाद टी.वी. चैनल वाले धमक पड़े और पूरा थाना



Whatsapp (9818799223) your complete address with screenshot of payment

कैमरों, लाइटों, कटरों से भर गया। कुछ टी.वी. वाले मंत्री पुत्र की कोठी पर पहुंच गए। सबसे पहले यह 'ब्रेकिंग न्यूज़' 'जल्वा चैनल' ने दी। उसके बाद यह ब्रेकिंग न्यूज़ 'समकुल चैनल' पर शुरू हुई। उसके बाद तो घमासान शुरू हो गया। हर चैनल पर ब्रेकिंग न्यूज़ स्टोरी चलने लगी, रतन और गौरी के 'स्टिल्स' और 'फुटेज' की मांग इतनी बढ़ गई कि प्रोडक्शन हाउसों वाले पागल हो गए।

चैनलों में तूफ़ान मच गया। एक रिपोर्टर की नौकरी इसलिए चली गई कि वह रतन की फ़ोटो नहीं ला सका। दूसरे चैनल में किसी का प्रोमोशन हो गया कि वह मंत्री पुत्र की 'बाइट' ले आया। एक पत्रकार को पीटा गया, क्योंकि उसने मंत्री पुत्र के कुत्ताघर, जिसे अंग्रेज़ी में सब 'केनल्ल' कहते थे, में घुसने की कोशिश की थी। दो पुलिस वाले सस्पेंड हो गए क्योंकि चार घंटे हो गए थे और उन्होंने रतन और गौरी का पता नहीं लगाया था। डी.एम. का ट्रांसफ़र होते-होते बचा और एस.पी. को 'कारण बताओ' नोटिस दे दिया गया।

पुलिस ने छापे मारने शुरू किए। चार टीमें बनाई गईं और रात-दिन रतन और गौरी की तलाश का काम शुरू हो गया। इसी दौरान मंत्री पुत्र के पास फ़ोन आया कि फ़लां-फ़लां जगह पचास करोड़ रुपया न पहुंचाया गया तो रतन और गौरी की हत्या कर दी जाएगी। अब स्टोरी का एक नया 'ऐंगल' निकल आया। चैनल विशेषज्ञों को बुलाकर उनसे बहस कराने लगे। सुखद यह रहा कि चैनल वालों को इस मसले में विशेषज्ञ बदलने नहीं पड़े। दो-चार आदमी जो राजनीति, समाज, वनस्पतिशास्त्र और खगोलशास्त्र के विशेषज्ञ थे और हर तरह के कार्यक्रमों में टी.वी. पर आया करते थे वही गौरी और रतनवाले मामले में भी आए और दर्शक यह सोचकर अचंभे में पड़ गए कि राजनीति के मर्मज्ञ कुत्तों के बारे में भी पूरी जानकारी रखते हैं। चैनल वाले गर्व से कहते थे कि विशेषज्ञता और 'प्रोफ़ेशनलिज्म' के ज़माने में हमने ऐसे लोग खोज रखे हैं जो संसार की किसी भी समस्या, ज्ञान-विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में, लोक-परलोक की किसी भी घटना के बारे में विद्वत्तापूर्ण ढंग से विचार व्यक्त कर सकते हैं।

हिंद महासागर में अमेरिकी बेड़ों को भारत की तरफ़ कूच करने का आदेश दे दिया गया है। और यह भी कहा गया कि भारत को चाहिए कि सेनाओं के पहुंचने से पहले कोकाकोला और पेप्सीकोला का पर्याप्त भंडार कर ले। मैक्डानाल्ड हैंबर्गर, अंकिल चिप्स, कनटकी चिकन, एफ.टी.जे. वग़ैरा की जितनी ज़्यादा दुकानें खोली जा सकती हों खुलवा दे, क्योंकि अमेरिकी सैनिक ज़ाहिर है दाल-रोटी नहीं खाएंगे।

टी.वी. चैनलों पर बहस का मुद्दा यह था कि इस 'ऑपरेशन टूथ' में रतन और गौरी सलामत निकल आएंगे या नहीं। यह भी जानकारी मिली कि अपहरणकर्ताओं ने मार्केट से दो सौ टन टी.एन.टी. भी ख़रीदी है और उसका ज़ख़ीरा भी उनके पास है। टी.वी. चैनलों के वही विशेषज्ञ जो वनस्पति विज्ञान से लेकर सुपरसोनिक जेटों तक के विशेषज्ञ थे कहने लगे इतना 'एक्सप्लोसिव मैटीरियल' तो पूरे फ़ार्म हाउस को ज्वालामुखी की तरह उड़ा देगा और ज़ाहिर है उसमें नन्हे-मुन्ने रतन और गौरी के बचने की क्या उम्मीद होगी। तब कहा गया कि यह दरअस्ल मनोवैज्ञानिक लड़ाई है। इसे भारत अकेले नहीं लड़ सकता। इसमें तो जब तक अमेरिका का सपोर्ट नहीं होगा यह लड़ाई नहीं जीती जा सकती। अमेरिका से कहा गया तो वहां से बड़ा सार्थक और उत्साहवर्धक जवाब आया।

अमेरिका ने कहा कि वह तो संसार के हर कोने में शांति स्थापित करने के लिए दृढ़संकल्प है। जहां भी शांति भंग होने, मानव अधिकारों के हनन का सवाल उठता है अमेरिका उठ खड़ा होता है। और अब चूंकि भारत में ऐसी स्थिति आ गई है इसलिए अमेरिका अवश्य ही आएगा। यह भारत की सभ्यता है कि वह अमेरिका को आमंत्रित कर रहा है।

यदि न भी कर रहा होता तो अमेरिका आता, क्योंकि वह विश्व में शांति स्थापित करना चाहता है और यह उसके 'एजेंडे' का एक और पहला मुद्दा है। यही नहीं, अमेरिका ने घोषणा

कर दी कि उसकी सेनाएं ध्वनि से तेज़ चलने वाले विमानों पर बैठकर भारत के लिए रवाना हो चुकी हैं।

हिंद महासागर में अमेरिकी बेड़ों को भारत की तरफ़ कूच करने का आदेश दे दिया गया है। और यह भी कहा गया कि भारत को चाहिए कि सेनाओं के पहुंचने से पहले कोकाकोला और पेप्सीकोला का पर्याप्त भंडार कर ले। मैक्डानाल्ड हैंबर्गर, अंकिल चिप्स, कनटकी चिकन, एफ.टी.जे. वग़ैरा की जितनी ज़्यादा दुकानें खोली जा सकती हों खुलवा दे, क्योंकि अमेरिकी सैनिक ज़ाहिर है दाल-रोटी नहीं खाएंगे। चूंकि यह आदेश था इसलिए इंतिज़ाम पूरा हो गया। बड़े-बड़े अमेरिकी बाज़ार खुल गए जहां सुई से लेकर हवाई जहाज़ तक उपलब्ध था।

ऐसी तैयारी का नतीजा भी अच्छा निकला। लेजर बम से रतन और गौरी के एक अपहरणकर्ता को मार गिराया गया। दूसरा एक तहख़ाने में छिप गया था। उसने दाढ़ी बढ़ा ली थी, उसे पकड़ा गया। अमेरिकी सैनिकों ने कहा कि हम इसे अमेरिका ले जाएंगे और चिड़ियाघर में बंद कर देंगे ताकि विश्व शांति भंग करने वालों के लिए एक सबक़ हो।

चूंकि अमेरिकी सैनिकों के लिए पेप्सी, कोला, बियर, हैंबर्गर आदि का बड़ा स्टॉक था इसलिए उन्हें वापस जाने की जल्दी नहीं थी। उन्होंने कहा कि हम तो आपके देश से विश्वशांति भंग करने वाली सभी शक्तियों को नष्ट करके ही जाएंगे। उनके इस विचार का स्वागत किया गया और वे यहां पेप्सी पी-पीकर मोटे होने लगे।

जिस दिन थाने में रतन और गौरी पहुंचे उसी दिन वहां एक सिरकटी लाश भी पहुंची। रतन और गौरी के मिल जाने की वजह से थाने के चारों तरफ़ दफ़ा 104 लगा दिया गया था, क्योंकि ओ.वी. वैनों से रास्ता बंद हो गया था और दर्शकों का सैलाब था जो अमेरिकी सैनिकों और रतन गौरी को देखने के लिए उमड़ पड़ा था। कई बार लाठी चार्ज हो चुका था पर दर्शक क़ाबू में नहीं आ रहे थे। वे जय-जयकार कर रहे थे। ख़ुशी के मारे आपे से बाहर हुए जा रहे थे।

इसी बीच मैली-कुचैली धोती बांधे, तीन बच्चों को संभाले किसी तरह गिरती-पड़ती एक औरत थाने पहुंची। उसे पता लग गया था कि आज एक सिरकटी लाश थाने लाई गई है। किसी न किसी तरह यह औरत थाने के अंदर आ गई। वहां टीवी चैनल वाले भरे पड़े थे और अमेरिकी सैनिकों के साथ सिगरेटें पी रहे थे। एकआध बीयर की घूंट भी मिल जाती थी।

टी.बी.सी. चैनल की राधिका रमन ने देखा कि एक औरत सिरकटी लाश के पास खड़ी उसे पहचानने की कोशिश कर रही है। उसके साथ तीन छोटे-छोटे बच्चे भी खड़े हैं। राधिका ने अपने बॉस सत्यकाम से कहा–'सर, ये देखिए कितनी अच्छी स्टोरी है। सिरकटी लाश को यह औरत पहचानने की कोशिश कर रही है। तीन बच्चे पास खड़े हैं। इसे शूट करें सर?'

सत्यकाम बिगड़ कर बोला–'क्या चाहती हो चैनल बंद हो जाए।'

'नहीं सर...लेकिन क्यों?' राधिका ने कहा।

सत्यकाम बोले–'इस औरत, बच्चों और लाश का 'विजुअल' देख कर सी.ई.ओ. मिस्टर मेहरा मेरी तो छुट्टी कर देंगे।'

'क्यों सर?'

सत्यकाम बोले–'ओ माई गॉड... तुम्हें ये भी बताना पड़ेगा? अरे हमारे चैनल पर 'ऐड' आते हैं, विज्ञापन समझीं?'

'हां सर।'

वो विज्ञापन किसके लिए होते हैं? कौन वह सामान ख़रीदता है? वह क्या देखना...'चलो-चलो कैमरा लगाओ...रिफ्लेक्टर...साउंड...चैनल का संवाददाता चिल्लाने लगा, क्योंकि थाने के अंदर बड़े ख़ूबसूरत मंच पर रतन और गौरी को लाया जा रहा था। उनके पीछे-पीछे मंत्री पुत्र, कमल का फूल बना, आ रहा था। पीछे अधिकारी, सेना के पदाधिकारी आदि थे। संगीत बज रहा था। कबूतर और गुब्बारे हवा में छोड़े जा रहे थे। आतिशबाजी आसमान पर रंग-बिरंगे करिश्मे दिखा रही थी। पूरी इमारत जगमगा रही थी। लगता था आज छब्बीस जनवरी या पंद्रह अगस्त है। चारों तरफ़ उल्लास, मस्ती, विजय का भव्य प्रदर्शन व्याप्त था।

उस औरत ने सिरकटी लाश पहचान ली थी। यह उसका पति ही था, औरत रो रही थी, पर मौज, मस्ती, आनंद, उल्लास, जश्न, गीत, संगीत के माहौल में उसकी आवाज़ कोई नहीं सुन रहा था।

उसके बच्चे अपने फटे-पुराने कपड़ों में सहमे, सिकुड़े, मुंह खोले मंच पर होने वाले तमाशे में डूबे हुए थे। वे न अपनी मां को देख रहे थे, न बाप की सिरकटी लाश को। ■■

(साभार, हिंदी समय)

लघुकथा



सुफ़ियान अहमद

नाम रह गया पीछे

ब्रह्मपुत्र नदी की धाराएं इस बार कुछ ज़्यादा ही गहरी हो गई थीं। बाढ़ आई, और फिर लोग बह गए—कुछ नाव में, कुछ ख़बरों में, और कुछ बस ख़ामोशी में।

असम के एक सुदूर गांव "धुबरी" में जब पानी उतरा, तो सबकुछ बहा हुआ मिला—छप्पर, चूल्हा और कुछ नाम।

नाम, जो अब राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) की सूची में नहीं थे।

एक बूढ़ा व्यक्ति हर दिन वही कर रहा था—ज़िला दफ़्तर के बाहर लगी सूची को देखना, जैसे उसमें अपनी परछाईं ढूंढ़ रहा हो।

उसका नाम था—शहीद अली।

"मैं यहीं जन्मा था। मेरे अब्बा की क़ब्र यहीं है, मेरा निकाह यहीं हुआ, मेरी बीवी की चूड़ियां इसी मिट्टी में दफ़न हैं।"

पर सूची में उसका नाम नहीं था।

बेटे ने समझाया–

"अब्बा, दस्तावेज़ नहीं मिल रहे। दादी का मतदाता पहचान पत्र 1971 से पहले का चाहिए।"

शहीद अली ने गांव की मस्जिद के पुराने मौलवी से पूछा–

"क्या उस जनाज़े की तस्वीर अब भी है, जिसमें अब्बू को दफ़नाया था?"

मौलवी ने आंखें झुका लीं–"क़ब्रें पहचान नहीं देतीं शहीद भाई...अब तो सिर्फ़ काग़ज़ पहचान देते हैं।"



सरकारी सुनवाई में शहीद अली पेश हुआ।

अधिकारी ने पूछा–

"आप कैसे साबित करेंगे कि आप भारत के नागरिक हैं?"

उसने जेब से एक मुड़ी हुई पुरानी नोटबुक निकाली—उसमें उसकी बीवी के हाथ की लिखावट थी। कुछ ख़त थे, जिनमें बच्चे की बीमारी का ज़िक्र था, कुछ नामों के आगे देसी दवा की मात्रा दर्ज थी।

"यह मेरी ज़िंदगी है साहब...पर शायद यह 'दस्तावेज़' नहीं है?"

अधिकारी ने सिर हिला दिया–

"नहीं। यह व्यक्तिगत सामग्री है। मान्य नहीं।"

जब सूची की अंतिम सुनवाई हुई, तो शहीद अली "घोषित विदेशी" क़रार दिया गया।

उसे गोलपाड़ा डिटेंशन सेंटर भेजा गया—वहां उसकी तरह और लोग थे—कुछ बंगाली बोलते, कुछ भोजपुरी और कुछ ख़ामोशी।

सबके पास यादें थीं। पर सबके नाम, कहीं पीछे छूट गए थे।

डिटेंशन सेंटर की एक दीवार पर वह अपनी उंगली से एक नाम लिखता रहता था–

"शहीद अली—नागरिक, प्रेमी, किसान, पिता, पति..."

कुछ महीनों बाद उसकी मृत्यु हो गई–

डिटेंशन सेंटर में। गुमनाम।

मौत के प्रमाण-पत्र में लिखा था–

"Unverified Identity – No Nationality"

शहीद अली जैसे किरदार अब भारत के लोकतांत्रिक परदे के दृश्य पर नहीं, पर हाशिए पर ज़िन्दा हैं। वे 'गुमनाम' नहीं हैं, पर 'अमान्य' हैं। ■■

आख़िरी पन्ना



सायेम हुसैन

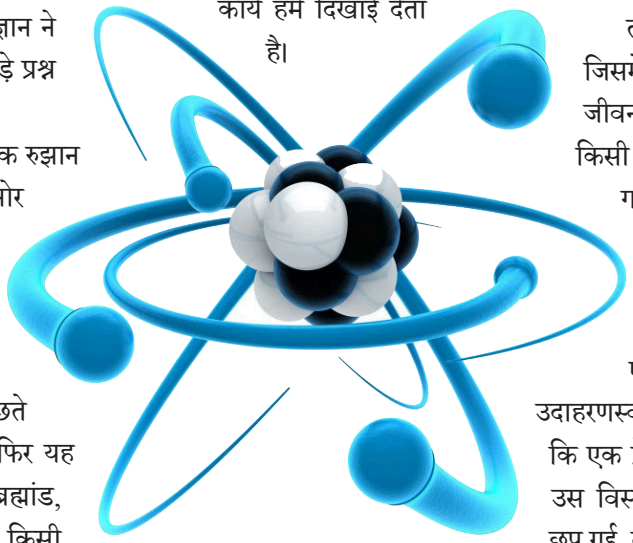
संकेत, प्रभाव और ज्ञान

ईश्वर—एक ऐसा शब्द जो युगों से मानव चिंतन का केंद्र रहा है, प्रश्नों और विश्वासों की धुरी बना हुआ है। समय बदला, सभ्यताएं बदलीं, विज्ञान ने प्रगति की, लेकिन ईश्वर से जुड़े प्रश्न अब भी जीवित हैं।

मनुष्य का यह स्वाभाविक रुझान है कि वह अपने चारों ओर की वस्तुओं को देखकर उनके रचयिता की ओर ध्यान देता है। कोई भी कलाकृति हो, चित्र, भवन या कविता—हम सहज ही पूछते हैं : "इसे किसने बनाया?" फिर यह विराट जगत, यह संतुलित ब्रह्मांड, यह जीवंत जीवन क्या बिना किसी सर्जक के अस्तित्व में आ सकता है?

यह बात ऐतिहासिक सत्य है कि हर युग में ईश्वर का इन्कार करने वाले लोग कम ही रहे हैं। अधिकतर समाजों और सभ्यताओं ने किसी न किसी रूप में ईश्वर को स्वीकार किया है। ईश्वर के स्वरूप और उसकी व्याख्या में भिन्नता हो सकती है, परन्तु उसका अस्तित्व लगभग सर्वसम्मत धारणा रही है।

नास्तिक विचारधारा में बार-बार यह तर्क सामने आता है कि, "हमें ईश्वर दिखाई नहीं देता, अतः वह नहीं है।" यह तर्क न केवल तार्किक रूप से कमज़ोर है, बल्कि आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर भी असफल सिद्ध होता है। क्या हम गुरुत्वाकर्षण को आंखों से देखते हैं? क्या हम विद्युत तरंगों, गुरुत्वीय तरंगों, परमाणु के भीतर न्यूट्रॉन-प्रोटॉन के व्यवहार को नग्न आंखों से देखते हैं? फिर भी हम उन्हें मानते हैं, क्योंकि उनका प्रभाव और कार्य हमें दिखाई देता है।



ईश्वर को मानने के लिए उसका भौतिक दर्शन आवश्यक नहीं, बल्कि उसका संकेत, प्रभाव और ज्ञान ही पर्याप्त है। यह वही तर्क है जिसे क़ुरआन ने सदियों पूर्व स्पष्ट किया :

"ईश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है।" (क़ुरआन, 24:35)

इसका तात्पर्य यह है कि वह स्वयं प्रकाश है, और उसी के द्वारा अन्य सभी सत्य प्रकाशित होते हैं। यह प्रकाश आंख से नहीं, आत्मा और बुद्धि से समझा जाता है।

यदि हम अपने चारों ओर देखें—परमाणु से लेकर आकाशगंगा तक, कोशिका से लेकर सौरमंडल तक—एक अद्भुत सन्तुलन, क्रम और सौंदर्य दिखाई देता है। क्या यह सब केवल संयोग से संभव हो सकता है?

किसी अच्छी कविता की दो पंक्तियों को सुनकर हम पूछते हैं कि यह किसने लिखी?

तो क्या यह व्यापक ब्रह्मांड, जिसमें हमारी पृथ्वी और मानव जीवन भी समाहित है—बिना किसी योजनाकार के उत्पन्न हो गया?

"संयोग से ब्रह्मांड की उत्पत्ति" का तर्क गणितीय दृष्टि से भी एक मज़ाक़ ही लगता है। उदाहरणस्वरूप यदि कोई व्यक्ति कहे कि एक प्रेस में विस्फोट हुआ और उस विस्फोट से एक सुंदर पुस्तक छप गई, तो यह बात हंसी का विषय बनेगी। फिर यह विराट ब्रह्मांड—जिसमें पदार्थ, जीवन, बुद्धि और चेतना का अद्भुत समन्वय है— संयोग से कैसे उत्पन्न हो सकता है?

आज विज्ञान जिस निष्कर्ष पर पहुंचा है, वह भी यह दर्शाता है कि ब्रह्मांड की एक शुरुआत थी—एक नियोजित आरंभ। 'बिग बैंग सिद्धांत' के अनुसार, यह सारा विस्तार एक

विशिष्ट बिंदु से शुरू हुआ और अब भी विस्तारशील है। यह आरंभ और यह क्रम कोई शून्य और बेजान संयोग नहीं हो सकता।

पूर्व में यह विचार था कि पदार्थ अनादि और अनंत है, परन्तु आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोगों ने यह सिद्ध कर दिया है कि कण (Particles) भी नष्ट होते हैं, ऊर्जा में परिवर्तित होते हैं। अर्थात् पदार्थ भी शाश्वत नहीं।

फिर वह सत्ता कौन है जिसने इस परिवर्तनशील पदार्थ को आकार दिया, चेतना दी और इससे जीवन की जटिल संरचनाएं उत्पन्न कीं?

नास्तिक विचारधारा यह भी मानती है कि जीवन, बुद्धि और चेतना—ये सब निर्जीव कणों के संयोग से विकसित हुए। लेकिन यह एक दार्शनिक भ्रम है।

निर्जीव पदार्थों का समुच्चय तो बन सकता है, पर उसमें जीवन, अनुभव, स्मृति, कल्पना, संवेदना—ये कैसे आ सकती हैं?

आज तक कोई वैज्ञानिक प्रयोग यह सिद्ध नहीं कर सका कि किसी प्रयोगशाला में निर्जीव पदार्थों से सजीव चेतना उत्पन्न की जा सकती है।

ईश्वर का अस्तित्व न केवल इस ब्रह्मांड की उत्पत्ति के लिए आवश्यक है, बल्कि मानव जीवन के नैतिक मार्गदर्शन के लिए भी अपरिहार्य है। यदि कोई स्रष्टा न हो, तो फिर अच्छाई-बुराई, न्याय-अन्याय, पाप-पुण्य—ये सब निरर्थक हो जाते हैं।

यही कारण है कि ईश्वर ने मनुष्य की सीमित बुद्धि को मार्गदर्शन देने के लिए ईशदूतों (Prophets) को भेजा। इन दूतों ने न केवल ईश्वर का परिचय दिया, बल्कि ईश्वर के जीवन-संबंधी आदेशों को भी बताया। हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) पर अवतरित क़ुरआन इस दैवी मार्गदर्शन की पूर्णतम अभिव्यक्ति है।

ईश्वर का अस्तित्व केवल एक आस्था नहीं, बल्कि एक तार्किक, दार्शनिक और वैज्ञानिक आवश्यकता है। वह हमारी चेतना का केंद्र है, हमारे नैतिक जीवन की आधारशिला है। वह अप्रकट है, लेकिन प्रत्येक व्यवस्था का नियंता है। उसके बिना यह ब्रह्मांड, यह जीवन, यह चेतना, सभी अधूरी हैं। ईश्वर को जानना और मानना, केवल दार्शनिक विवेक नहीं, बल्कि हमारे जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

क़ुरआन स्वयं कहता है–"हम उन्हें अपनी निशानियां आकाशों और उनके अपने भीतर दिखाएंगे, जब तक कि उनके सामने यह स्पष्ट न हो जाए कि वह सत्य है।" (क़ुरआन, 41:53)

ईश्वर को न मानना केवल एक दार्शनिक असहमति नहीं है, बल्कि यह मानव चेतना की बुनियाद पर कुठाराघात है। यदि कोई ईश्वर न हो तो इस जीवन का कोई उद्देश्य, कोई अर्थ, कोई अंतिम उत्तरदायित्व नहीं बचता।

• कौन बताएगा कि हमें कैसे जीना चाहिए?

• कौन बताएगा कि मृत्यु के बाद क्या होगा?

• कौन न्याय करेगा उस असहाय के साथ जिसके साथ अन्याय हुआ?

• कौन देख रहा है वह छुपा हुआ अन्याय जो क़ानून से बच गया?

यदि ईश्वर नहीं है—तो सब कुछ अराजक है।

यदि ईश्वर है—तो हर कार्य अर्थवान है।

ईश्वर का अस्तित्व केवल एक आस्था नहीं, बल्कि एक तार्किक, दार्शनिक और वैज्ञानिक आवश्यकता है। वह हमारी चेतना का केंद्र है, हमारे नैतिक जीवन की आधारशिला है।

वह अनदेखा है, लेकिन हर दृश्य वस्तु की सत्ता का कारण है। वह अप्रकट है, लेकिन प्रत्येक व्यवस्था का नियंता है। उसके बिना यह ब्रह्मांड, यह जीवन, यह चेतना—सभी अधूरी हैं।

और यदि कोई मनुष्य वास्तव में उसे जानना चाहता है, तो उसे चाहिए कि वह क़ुरआन को पढ़े—उस ग्रंथ को जिसमें ईश्वर स्वयं अपने बारे में कहता है :

"वह अल्लाह है, एकमात्र। अल्लाह निस्संवल और पूर्ण है। न उसका कोई जन्म है और न वह किसी से जन्मा है। और कोई भी उसके तुल्य नहीं है।" (क़ुरआन, 112:1-4)

ईश्वर को जानना और मानना, केवल दार्शनिक विवेक नहीं, बल्कि हमारे जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता है। ■■

"ईश्वर आकाश और पृथ्वी का
प्रकाश है।"
(क़ुरआन, 24:35)

"वह अल्लाह है, एकमात्र।
अल्लाह निस्संवल और पूर्ण है।
न उसका कोई जन्म है और
न वह किसी से जन्मा है।
और कोई भी उसके तुल्य
नहीं है।"
(क़ुरआन, 112:1-4)

KANTI Monthly, New Delhi
August 2025
Posted on 20-21 July 2025
Published on 18 July 2025
Posted Delhi RMS Delhi-110006

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2024-2026
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U(SE)-73/2024-26
Total Pages with Cover: 52

"ऐ लोगो! हमने तुम्हें
एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया
और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप
दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो।
वास्तव में अल्लाह के यहां तुममें सबसे
अधिक प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे
अधिक तक़वा (ईशपरायणता) रखता है।
निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जानने
वाला, ख़बर रखने वाला है।"
(क़ुरआन, 49:13)